आज़ादी का अमृत महोत्सव

महानदी

"नराकास" भिलाई - दुर्ग की गृह पत्रिका

2022

स्वच्छ भारत मिशन

विशेषांक

एक कदम स्वच्छता की ओर ...

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
भिलाई-दुर्ग (छ.ग.)

स्वच्छ भारत मिशन
Swachh Bhart Mission
आजादी का
अमृत महोत्सव

आज़ादी का अमृत महोत्सव

: संरक्षक :

श्री अनिर्बान दासगुप्ता

निदेशक प्रभारी

सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र एवं

अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग (छ.ग.)

: मार्गदर्शक :

श्री मिलिंद मुकुंद गद्रे

कार्यपालक निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन)

सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र

: प्रबंध संपादक :

श्री सौमिक डे

उप महाप्रबंधक (संपर्क व प्रशासन एवं प्रभारी राजभाषा)

सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र, एवं

सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग (छ.ग.)

: संपादक मंडल :

श्री पंकज त्यागी

महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन/विधि)

श्री एस. के. राजा

महाप्रबंधक सेल-सेट, भिलाई

श्रीमती अनुराधा धनांक

उप मंडल अभियंता

भारत संचार निगम लिमिटेड, दुर्ग

श्री पंच राम साहू

वरीय सांख्यिकी अधिकारी

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, दुर्ग

श्रीमती भावना चाँदवानी

उप प्रबंधक

यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेंस कं. लि., भिलाई

श्री जितेन्द्र दास मानिकपुरी

सहायक प्रबंधक (संपर्क व प्रशासन राजभाषा)

सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र

मुख्यपृष्ठ अभिकल्पन

ग्लोरियन पब्लिकेशन्स, रायपुर (छ.ग.)

मोब.: 9301148719

संपादन सहयोग

नराकास सचिवालय के कार्मिक

महानदी

राजभाषा गृह पत्रिका - वर्ष 2022

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई - दुर्ग (छ.ग.)

स्वच्छ भारत मिशन विशेषांक अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	नाम	पृष्ठ नं.
1	पंच तत्वों की स्वच्छता	खुमान सिंह देवांगन	7
2	नव वर्ष : नया सवेरा	अमित कुमार	8
3	पाठ्यक्रम में शामिल हो योग	कृपा शंकर शर्मा	9
4	क्षमा	पारमिता महान्ति	10
5	व्यवहार परिवर्तन कार्यक्रम	सुनील कुमार रजक	11
6	वही प्यार सदाबहार	प्रतीका गार्गव साकल्ले	12
7	टीकाकरण - एक आवश्यकता	संतोष पराशर	13
8	प्रकृति	डॉ. श्वेता चौबे 'मधुलिका'	14
9	आखिर क्यों लिखूँ	कौशल किशोर शर्मा	14
10	झंडा उड़ रहा है	जितेन्द्र कुमार वर्मा	15
11	भगवान का रूप – माँ	डॉ. मृदुला चतुर्वेदी	16
12	संयुक्त परिवार	सुरेश कुमार नागदेव	17
13	भारत में सत्याग्रह का प्रथम प्रयोग	सौरभ कुमार राजा	18
14	घर लौट कर आ जाओ	नितिन गोस्वामी	19
15	प्रत्येक नागरिक का दायित्व	प्रीति कुमारी	20
16	विश्वगुरु बने भारत फिर	भावना चाँदवानी	21
17	भिलाई : औद्योगिक विकास	डॉ. अजय आर्य	22
18	स्वदेश प्रेम	प्रशांत कुमार तिवारी	23
19	उज्ज्वल एवं स्वच्छ भारत का निर्माण	सुमित माथुर	24
20	स्वच्छ परिवेश में ही स्वच्छ मन	आदित्य कुमार	29
21	श्रम ही समाधान	के. के. नशीने	30
22	मुझ में उठा तूफान कोई	शुभ्रा सिन्हा	30
23	पत्नी के विरुद्ध : एक आवाज़ (हास्य व्यंग्य)	डॉ. अजय आर्य	31
24	पवित्रता और शुद्धि - मुख्य उद्देश्य	विशाल मालवीया	34
25	जब घर छोड़कर जाना पड़ता है	नितिन गोस्वामी	35
26	रूस और यूक्रेन युद्ध	ए.एन. सिंह	36
27	सच्ची राष्ट्रभक्ति	अनुराधा धनांक	38
28	अगर वक़्त को रोका जा सकता	संतोष मेहरचंदानी	38
29	प्रगति पथ पर अग्रसर	सीमा शर्मा	39
30	हिंदी है भारत की भाषा	राजेन्द्र कुमार गर्ग	40
31	हिमालय	राजू कुमार शाह	41
32	सुरक्षा - अपनी ज़िम्मेदारी	नीलकंठ साहू	42
33	स्वच्छता अभियान	पुरेन्द्र कुमार ठाकुर	43
34	संधारणीय या टिकाऊ विकास	पी. आर. बेरा	45
35	तुझे जीतना हर रण होगा	ओ. पी. गोंदुले	46
36	जागरूकता की मशाल	अंकित खोब्रागड़े	47
37	लोगो डिज़ाइन स्पर्धा में द्वितीय पुरस्कार	धनंजय कुमार मेश्राम	49

टिप्पणी :

पत्रिका की रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। मौलिकता एवं अन्य विवादों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।

संपर्क सूत्र :

राजभाषा विभाग-313-ए, तीसरा तल, इस्पात भवन

भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई नगर (छ.ग.) - 490001

हरीश सिंह चौहान
सहायक निदेशक (कार्यान्वयन)
एवं कार्यालयाध्यक्ष
HARISH SINGH CHOUHAN
Asstt. Director (Impln.) & HOD

भारत सरकार
गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग,
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य)
निर्माण सदन 52–ए,अरेरा हिल्स
कमरा नं. 206,
भोपाल (म.प्र.), 462011
0755–2553149

संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि, आपकी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग द्वारा हिंदी गृह पत्रिका 'महानदी' का "स्वच्छ भारत मिशन" विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है। भाषा मनोभावों को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। लोगों को इस अभियान से जोड़ने में हिंदी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। 21 वीं सदी के भारत के विकास में हिंदी भाषा ने एक महत्वपूर्ण स्थान हासिल किया है। भाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

मुझे विश्वास है कि, इस पत्रिका के माध्यम से "स्वच्छ भारत मिशन" से संबंधित रचनाकारों के द्वारा रचित आलेखों से "स्वच्छ भारत मिशन" के उद्देश्य को सार्थक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। विभागों एवं संस्थानों को "स्वच्छ भारत मिशन" से जुड़कर स्वच्छ भारत अभियान में अपना योगदान देना आवश्यक है। स्वच्छ भारत मिशन के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी भाषा एक सशक्त माध्यम है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि, हमें न केवल बोलचाल में, बल्कि सरकारी कामकाज में भी हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग निरन्तर इस ओर अग्रसर है। मैं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग के समस्त सदस्य संस्थानों से आग्रह करता हूँ कि, अपने संस्थान में पूर्व की भांति ही राजभाषा का अनवरत प्रवाह बनाए रखें।

आज़ादी का अमृत महोत्सव क्रम में "स्वच्छ भारत मिशन" विशेषांक को प्रकाशित करने के लिए संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई। पत्रिका के अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

नूतन वर्ष 2023 की हार्दिक शुभकामनाओं सहित ।

(हरीश सिंह चौहान)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अनिर्बान दासगुप्ता
निदेशक प्रभारी
ANIRBAN DASGUPTA
Director In-charge

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। स्वच्छता और स्वास्थ्य एक दूसरे के पूरक हैं। स्वच्छता और स्वास्थ्य के माध्यम से ही हम प्रगति के पथ पर निरंतर अग्रसर हो सकते हैं। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए भारत सरकार द्वारा 'स्वच्छ भारत मिशन' का शुभारंभ किया गया है। इस विषय पर केन्द्रित पत्रिका 'महानदी' का प्रकाशन अत्यंत प्रसन्नता का विषय है। इसके माध्यम से न केवल रचनाकारों में स्वच्छता एवं उसके विभिन्न पहलुओं के विषय में जागरुकता आएगी, वरन पाठकों में भी स्वच्छता संदेश का प्रचार–प्रसार होगा।

"नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग" के सदस्य संस्थानों ने सदैव ही राजभाषा तथा राष्ट्रीय महत्त्व के विषयों में प्रशंसनीय व अनुकरणीय कार्य किए हैं। आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि, पत्रिका में संकलित रचनाएँ राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन सहित स्वच्छता संदेश का प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्य में अवश्य ही सफल होंगी।

शुभकामनाओं सहित।

(अनिर्बान दासगुप्ता)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

एम.एम. गद्रे
कार्यपालक निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन)
M.M. Gadre
Executive Director (P&A)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग के सदस्य संस्थानों ने अपने राष्ट्रीय दायित्वों की पूर्ति की दिशा में सदैव ही गंभीरता का प्रदर्शन किया है। अपने परिवेश को स्वच्छ रखना न केवल हमारा नैतिक दायित्व है, वरन स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक भी है। आज सारा हमारा देश "स्वच्छ भारत मिशन" की दिशा में अग्रसर है। हम सभी का समग्र प्रयास हो कि, इस अभियान में निहित बिंदुओं का अनुपालन करते हुए इसे सफल बनाएँ। आशा है कि, पत्रिका महानदी का स्वच्छ भारत मिशन विशेषांक इस दिशा में अवश्य ही प्रेरक सिद्ध होगा।

लेखन से सृजनशीलता व रचनात्मकता में वृद्धि होती है तथा सद्विचारों का प्रसार होता है। स्वच्छता पर केन्द्रित रचनाओं के माध्यम से पाठकों में "स्वच्छ भारत मिशन" का सकारात्मक संदेश पहुँचेगा। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ ही पत्रिका अपने प्रकाशन के सभी उद्देश्यों में सफल हो, शुभकामनाएँ।

जय हिंद, जय हिंदी।

मिलिंद गद्रे

(मिलिंद मुकुंद गद्रे)

हर किसी की ज़िन्दगी से जुड़ा हुआ है सेल
There's a little bit of SAIL in everybody's life

सौमिक डे
उप महाप्रबंधक
(संपर्क व प्रशासन एवं प्रभारी राजभाषा)
Soumik Dey
DGM(L&A) I/c Rajbhasha

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

पत्रिका 'महानदी' ने सदैव ही राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन देने का कार्य किया है। 'स्वच्छ भारत मिशन' विशेषांक के माध्यम से हमने हिंदी का प्रचार-प्रसार के अपने मूल उद्देश्य सहित राष्ट्रीय स्तर पर चल रहे स्वच्छता अभियान को प्रसारित करने का प्रयास किया है। अपने घर, कार्यस्थल व समूचे परिवेश को स्वच्छ एवं स्वास्थ्यकर बनाए रखना हमारा नैतिक दायित्व है। 'स्वच्छ भारत मिशन' इसी संदेश को जन-जन तक पहुँचाने के लिए किया जा रहा राष्ट्रीय स्तर का प्रयास है।

पत्रिका में स्वच्छता पर केन्द्रित सामग्रियों के अलावा अन्य विविध रचनाएँ भी समाहित हैं जो कि, 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग' के सदस्य संस्थानों में कार्यरत कार्मिकों की लेखनी से उपजी कृतियाँ हैं व रचनाकारों के हिंदी के प्रति प्रेम को प्रमाणित करती हैं।

हमें पूर्ण विश्वास है कि, पत्रिका के इस अंक में समाहित रचनाएँ अपने पाठकों के हृदय में हिंदी के प्रति अनुराग व स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने में अवश्य ही सफल होंगी।

शुभकामनाएँ।

(सौमिक डे)

जितेन्द्र दास मानिकपुरी
सहायक प्रबंधक
(संपर्क व प्रशासन - राजभाषा)
Jitendra Das Manikpuri
Asstt. Manager ((L&A-Rajbhasha)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संपादकीय

पत्रिका 'महानदी' का ''स्वच्छ भारत मिशन'' विशेषांक सौंपते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है। पत्रिका के माध्यम से सृजनात्मक हिंदी लेखन सहित राष्ट्रीय महत्व के विषयों के प्रति ध्यानाकर्षण भी सदैव हमारा उद्देश्य रहा है। आज जब सारा भारत स्वच्छता को लेकर दृढ़ संकल्पित है, तो अखिल भारतीय स्तर पर चलाए जा रहे इस अभियान के विभिन्न बिंदुओं पर केन्द्रित कुछ महत्वपूर्ण रचनाओं के माध्यम से हमें इसके विषय में जानने का अवसर प्राप्त होगा।

पत्रिका में हमेशा की तरह अन्य विषयों पर भी रचनाओं का समावेश किया गया है, जिसका उद्देश्य नए रचनाकारों को प्रोत्साहन प्रदान करना तो है ही, साथ ही साथ पत्रिका समृद्ध बने, यह भी हमारा प्रयास है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग के समस्त सदस्य संस्थानों में कार्यरत रचनाकारों के विचारों का दर्पण है पत्रिका 'महानदी'।

पूर्ण विश्वास है कि, पूर्व में प्रकाशित अंकों की तरह इस अंक को भी पाठकों का स्नेह अवश्य प्राप्त होगा।

शुभकामनाओं सहित ।

जितेन्द्र

(जितेन्द्र दास मानिकपुरी)

हर किसी की ज़िन्दगी से जुड़ा हुआ है सेल
There's a little bit of SAIL in everybody's life

पंच तत्वों की स्वच्छता

देश की आजादी के बाद महात्मा गांधी का सपना था, भारत को साफ सुथरा देखना। यह स्वप्न आजादी के कई वर्षों बाद तक साकार नहीं हो पाया, सत्ता के गलियारे के सत्तासीन राजनेताओं ने इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया । तदैव 2 अक्टूबर, 2014 को इस मिशन का आगाज स्वच्छ भारत मिशन के रूप में श्री प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया। इसकी शुरुआत उन्होने स्वयं दिल्ली के बाल्मिकी नगर में जाकर की और यह जन जागरुकता का मिशन बनकर स्वच्छ भारत के मिशन के रूप में कार्य कर रहा है। इस मिशन का उद्देश्य ग्रामीण अंचल में जागरुकता, शौचालयों का प्रयोग, खुले में शौच में रोक, (ओपन डेफिकेशन फ्री), घर की सफाई, जानवर, आसपास, पर्यावरण, तालाब, नदी, स्कूल, एवं कार्य स्थल की स्वच्छता के प्रति जागरुकता पैदा करना। कहा जाता है कि स्वस्थ तन में, स्वस्थ मन वास करता है। तात्पर्यतः हमारे स्वस्थ्य एवं स्वच्छ शरीर तथा स्वच्छ कार्यस्थल से हमे उत्साहित ढंग से कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।

स्वच्छ भारत मिशन, प्रगति के तन्त्र के रूप में कार्य कर रहा है। इस मिशन के माध्यम हो भारत के लगभग 10,19,64,757 घरों में शौचालयों का निर्माण करवाया गया है, जबकि शासन का लक्ष्य 12 करोड़ घरों को शौचालय बना कर देने का रखा गया है, इससे न केवल लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है, बल्कि स्वच्छता के प्रति जागरुकता एवं सुविधा का उन्नयन हुआ है। भारत के 603055 गाँव खुले में शौच मुक्त घोषित हो चुके है। यह उन्नति आजादी के बाद एक क्रांति के रूप में आई है और लोगों में एक भावना जागृत हुई हैं– ''स्वच्छ रखो अपना परिवेश, जिससे स्वच्छ रहेगा देश''। पहले स्कूलों में शौचालयों की व्यवस्था नहीं रहती थी परन्तु इस मिशन के माध्यम से सरकारी और निजी विद्यालयों में शौचालयों की व्यवस्था की गई। स्वच्छ भारत मिशन, देश की प्रगति का सोपान बन गया है इस मिशन के माध्यम से सृष्टि के पंच तत्वों का शोधन हो रहा है –

क्षिति (भूमि) : राष्ट्र को स्वच्छता के बारे में जागरूक कर एवं खुले में शौच मुक्त बनाकर, तथा सार्वजनिक स्थलों पर कूड़े फेंकने तथा घर एवं आसपास की स्वच्छता से न केवल पृथ्वी बल्कि पर्यावरणीय स्वच्छता के प्रति संचेतना का विकास हुआ है। रेलों में बायो सिस्टम से स्वच्छता उपलब्ध हो रही है। आज भारत के रेल स्टेशन विश्व स्तरीय स्वरूप प्राप्त कर रहे हैं. यह अकल्पनीय प्रगति है। ऐसे ही अनेक उदाहरण भारत भूमि में स्वच्छता मिशन की इबारत लिख रहे हैं।

जल :– स्वच्छ भारत मिशन के तहत, निर्मल जल पेय योजना, नमामि गंगे परियोजना, नदियों के सफाई संबंधित कार्य, घर में स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता, नदियों में कारखानों के प्रदूषित रसायन के बहाव पर रोक, नदियों किनारे घाट निर्माण एवं शहर के गंदे पानी को नदी में बहाने से रोक के माध्यम से जल संरक्षण एवं नदी के सफाई में स्वच्छता अभियान की महती भूमिका है ।

पावक :– आजादी के बाद से स्वच्छ भारत मिशन लागू होने के पहले तक भारत की गांवों की 80% आबादी गांव में चूल्हे से, लकड़ी या गोबर के कण्डे के इंधन से भोजन बनाते थे। इस पर स्वच्छता के प्रति शासन कि, सजगता से उज्ज्वला योजना के माध्यम से लगभग 8.3 करोड़ परिवारों को लाभ पहुंचा है। इससे स्वच्छ इंधन के उपयोग को बढ़ावा प्रदान करने के साथ ही महिलाओं के स्वास्थ्य की भी सुरक्षा को मदद मिली है। यह एक विकासशील राष्ट्र के प्रगति के आधार की धुरी की तरह है। इसी तरह भविष्य में इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग से हमें ऊर्जा के नए स्त्रोत के माध्यम से स्वच्छता निदान को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी।

गगन :– वायुमण्डल के प्रदूषण से वैश्विक समाज के समक्ष ग्लोबल वार्मिंग का खतरा बढ़ गया है। इसके प्रमुख कारकों में कारखानों से निकलने वाली दूषित गैसो में – उपस्थित कार्बन डाइ आक्साइड की मात्रा एवं भूमि–पथ परिवर्तन अर्थात् तेज़ी से वनों एवं वृक्षों की कटाई तथा जीवाश्म ईंधन का ऊर्जा उत्सर्जन हेतु उपयोग, पर्यावरण के ओजोन परत को कमजोर कर रहे हैं यही वजह है कि प्रति सौ वर्षों में पृथ्वी का तापमान 1.5 डिग्री सेन्टीग्रेड बढ़ रहा है, और ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते खतरे से हिमालय एवं अन्य पर्वतीय क्षेत्रों के ग्लेशियर पिघल रहे हैं। इस पर स्वच्छ भारत मिशन के माध्यम से वृक्षारोपण को जन जागरुकता मिशन बनाना, कारखानों के प्रदूषण स्तर पर नियंत्रण, एवं सौर उर्जा, इलेक्ट्रिक उर्जा के उपयोग को बढ़ावा एवं प्रदूषण मुक्त उर्जा स्रोतों के उपयोग पर जोर देकर जित नए प्रकल्पों के उपयोग से देश को इस क्षेत्र में काफी प्रगति मिली है। भारत वैश्विक महामारी की विभिषिका के बीच भी इन उपायों पर निरन्तर काम करता रहा यह बेमिसाल कार्य एक प्रगतिशील राष्ट्र ही कर सकता है।

समीर (वायु) :– स्वच्छ भारत मिशन राष्ट्र की विकास यात्रा का संवाहक है। स्वच्छता की अवधारणा व्यापक है, भूमि, जल, अग्नि, आकाश के साथ वायु भी स्वच्छ होना आवश्यक है। दिल्ली जैसे महानगर में वायु प्रदुषण एक गंभीर चुनौती है ऐसे में वहाँ ऊर्जा के गैर पारंपरिक स्त्रोत एवं प्राकृतिक स्त्रोत के उपयोग के संतुलन से वायु प्रदूषण रोककर

स्वच्छ वायु बढ़ाया जा सकता है, अतः महानगरीय क्षेत्रों में वृहत वृक्षारोपण से वायु स्वच्छता की शासन की योजना कारगर रही है। इन सब पाँचों तत्वों पर स्वच्छता की मिशन के रूप में अपनाकर देश को उन्नत राष्ट्र बनाया जा सकता है।

स्वच्छ भारत मिशन से लाभ :– स्वास्थ्य क्षेत्र में– स्वच्छ भारत मिशन से लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता आई है, इससे स्वास्थ्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। लोगों के बीमार होने की दर में कमी आई है। वातावरण के क्षेत्र में पर्यावरणीय संचेतना के उत्प्रेरक के रूप में यह मिशन लाभप्रद हुई है एवं लोग अपने आसपास सफाई का विशेष ध्यान रखने लगे हैं। पहले लोग मूंगफली खाकर रेल डिब्बे के भीतर छिलके फेंक देते थे, अब हालात बदल गये हैं, लोग जागरूक हो गये हैं। जल मल के समुचित निस्तारीकरण में – स्वच्छता अभियान के बाद काफी प्रगति हुई है एवं निर्मल भारत बनाने में मदद मिली है। नदियों को स्वच्छ बनाने में इस योजना के बाद अकल्पनीय प्रगति हुई है। प्लास्टिक के प्रयोग की समाप्ति भी इस योजना की उपलब्धियों में से ''एक मील का पत्थर साबित'' होगा। वैज्ञानिक, ठोस एवं तरल अपशिष्ट पदार्थ प्रबन्धन पर बल देते हुए स्वच्छता को प्रोत्साहित करने में प्रगति हुई है। किसी भी राष्ट्र को विकसित करने में शिक्षा की जितनी भूमिका होती है उतनी ही भूमिका हमारे जीवन में स्वच्छता की भी है। स्वच्छ माहौल हमारे शारीरिक और मानसिक विकास के लिये आवश्यक है। स्वच्छता न केवल हमारे घर सड़क तक के लिए ही जरूरी नहीं होती है बल्कि यह राष्ट्र के लिये भी आवश्यक होती है। इससे न केवल घर आंगन स्वच्छ रहेगा बल्कि पूरा देश भी स्वच्छ रहेगा। अतः इसे जन भागीदारी का पर्याय बनाकर प्रगति का मूलमंत्र बनाने में सबका समवेत प्रयास आवश्यक है। भविष्य में ई–कचरों का निस्तारण भी चुनौतियों के रूप में सामने होगा अतः राष्ट्रहित में अभी से जन जागरुकता आवश्यक है।

अन्त में : महात्मा गांधी का एक संदेश,

स्वच्छ हो हमारा भारत देश ।

अपनाया भारत ने स्वच्छता का मंत्र,

जाग उठा अब जागृति, और प्रगति का तंत्र ।

खुमान सिंह देवांगन
चीफ मास्टर, ऑपरेटिव
एस.एम.एस.–3, भिलाई इस्पात संयंत्र

नव वर्ष : नया सवेरा

चलते चलते बीत रहा
यह वर्ष भी देखो आखिर।
कुछ यादों को छोड़ रहा
देकर संदेशा न्यारा फिर।

परिवर्तन तो परम सत्य है
इसको बस अपनाता चल।
हर स्थिति में रह अडिग
अपना कर्म निभाता चल।

गीत खुशी के गाता चल
खुद ही तू मुस्काता चल।
मिल जाए जो राह में तेरे
उसको गले लगाता चल।

जीवन जो है खेल वक्त का
तू अपना खेल दिखाता चल।
ये पाना खोना रीत जगत की
कर स्वीकार निभाता चल।

देख नव वर्ष का है आगत
कुछ हो इसका ऐसा स्वागत।
वो बदलाव जो है ज़रूरी
जीवन में उसको लाता चल।

कुछ वादे कुछ सपनों को ले
जीवन को तू बढ़ाता चल।
आने वाले नव वर्ष में
खुद को बेहतर बनाता चल।

अमित कुमार
उप महाप्रबंधक
दल्ली खदान, भिलाई इस्पात संयंत्र

पाठ्यक्रम में शामिल हो योग

शास्त्रों में कहा गया है, "पहला सुख निरोगी काया"। स्वास्थ्य सबसे बड़ी संपत्ति है, उसके बाद ही बाकी सारी चीजें। भारतीय आरोग्य पद्धति है योग तथा प्राणायाम। शारीरिक व मानसिक दृष्टि से बच्चों को स्वस्थ रखने के लिए योग को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना आवश्यक है। योग भारतीयों को सर्वथा अनुकूल और लाभकारी है, अतः बच्चों के लिए योग को पाठयक्रम में सम्मिलित करना अत्यंत आवश्यक है।

बेहतर स्वास्थ्य पाने मूलतः दो विकल्प हैं, जिम जाकर कड़ी कसरत करना और योग व प्राणायाम। महत्वपूर्ण है कि, बच्चों के शरीर का पूर्ण विकास नहीं हुआ होता है, सेहत बनाने यदि उन्हें जिम में कड़े एक्सरसाइज़ कराए जाएँ, तो उनके शरीर पर अत्यंत कठोर दुष्प्रभाव दिखते हैं, शारीरिक वृद्धि पर असर पड़ता है, जबकि योग में शरीर पर कोई अतिरिक्त भार नहीं डाला जाता केवल आसान, अभ्यासों और साँसों द्वारा संपूर्ण योग एवं प्राणायाम कराया जाता है, जो शरीर के लिए किसी हाल में नुकसानदेह नहीं होता, यह वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित है।

कई रोग हैं जो अन्य इलाज से ठीक नहीं होते पर योग व प्राणायाम से पूर्णतः ठीक हो जाते हैं, डॉक्टर भी योग व प्राणायाम करने की सलाह देते हैं, एक समय बाद योग करना ही है तो शुरुआत बचपन से ही क्यों न हो? योग में शरीर को अनेक तरह से मोड़ना पडता है जिसके लिए शरीर लचीला होना आवश्यक है, बच्चों का शरीर लचीला होता है अतः योगाभ्यास आरंभ करने के लिए बचपन ही श्रेष्ठ समय है।

बच्चे देश का भविष्य हैं, छात्र देश के जिम्मेदार नागरिक बनेंगे, उनकी सेहत अच्छी रहेगी तभी देश आगे बढ़ेगा, बच्चों की सेहत बनाने योग से बेहतर और कोई विकल्प नहीं। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है, बच्चे स्वस्थ रहेंगे तभी उनका मस्तिष्क प्रखर होगा और भारत शिखर पर पहुँचेगा।

सबसे बड़ी शक्ति है मेधाशक्ति, प्रतिस्पर्धा में आगे वही रहते हैं जिनकी मेधाशक्ति प्रखर है, योग में स्मरण शक्ति, एकाग्रता व बौद्धिक क्षमता बढ़ाने के भी अभ्यास कराए जाते हैं, जिससे बच्चे अपना मानसिक स्वास्थ्य भी बेहतर बना सकते हैं।

आज बच्चे खेलकूद से दूर हैं, पढ़ाई के बोझ से बच्चे निराशा में डूब जाते हैं, कई बार घातक कदम उठा लेते हैं, योग से खेलकूद की भरपाई होती है, नकारात्मक विचार दूर होते हैं, सकारात्मकता आती है।

कोविड–19 की द्वितीय लहर के समय ऑक्सीजन, जो प्राणवायु है, जीवन रक्षक के रूप में उभरा, योग व प्राणायाम में इसी ऑक्सीजन को शरीर ग्रहण करता है जिससे शरीर स्वस्थ होता है।

प्रतिवर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है, दुनियाँ ने हमारी आरोग्य पद्धति योग को स्वीकार किया है, तो हम पीछे क्यों रहें आइए हम भी "करें योग, रहें निरोग।"

वह संस्कृति नष्ट हो जाती है जो, अपनी जड़ों को भुला दे। योग भारतीयता का अभिन्न अंग है, बच्चों के पाठ्यक्रम में योग को शामिल करने से बच्चे अपनी संस्कृति से, अपनी जड़ों से जुड़ाव अनुभव करेंगे, जो उनकी सेहत के लिए बेहतर होगा और संपूर्ण भारत के समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

कृपा शंकर शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (विधि)
भिलाई इस्पात संयंत्र

क्षमा

कहते हैं क्षमा कर देने से मन का बोझ हलका हो जाता है । माफ़ी, क्षमा, दया, रहम – ये सब आप अपने दुश्मन के लिए नहीं बल्कि अपने लिए करते हैं। जीवन में ऐसे कई अवसर आते हैं, जब आप को किसी बात के लिए अपयश मिलता है। कहते हैं न "हानि, लाभ, जीवन, मरण, यश, अपयश विधि हाथ।" विधि हाथ तो है, परन्तु कई लोग इस अपयश के कारक बनते है। कुछ इर्ष्यावश, कुछ पुरानी रंजिश, कुछ शरारतन तो कुछ लूट–खसोट के इरादे से या किसी अन्य कारणों से आप पर वार करते हैं। हर मनुष्य साधु संत नहीं हो सकता, यह आशा करना भी उचित नहीं है कि, हम मनुष्य के रूप में भगवान बन जाएँ एवं सभी उन व्यक्तियों को क्षमा कर दें जिन्होंने हमारे साथ बुरा किया हो।

कुछ तर्क दिए जा सकते हैं, "जैसे कि, क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात" अर्थात छोटे, यानि आपसे उम्र, ओहदा या मानसिक स्तर पर जो व्यक्ति आपसे छोटा है, वह उत्पात कर सकता है। तर्क यह भी है कि, जो बड़ा है, उसको अपना दिल बड़ा कर उस नीचे स्तर के व्यक्ति को माफ कर देना चाहिए। चलिए देखते हैं कुछ पौराणिक कथाएँ जहाँ शत्रु को क्षमा किया गया था।

यीशु को सूली पर चढ़ा दिया गया, फिर भी यीशु ने ईश्वर से यह प्रार्थना की –"हे ईश्वर , इन्हें क्षमा करना, इन्हें पता नहीं कि, ये क्या कर रहे हैं।"

महात्मा गांधी ने कहा था "जब कोई एक गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल आगे कर दो"

महाभारत में द्रौपदी ने अश्वत्थामा को अर्जुन के हाथों मरने से बचाया था जबकि, उस पापी ने पांचाली के पाँचों पुत्रों को मौत के घाट उतार दिया था।

श्री राम जी ने अयोध्या लौटने के पश्चात सर्वप्रथम कैकेयी के पास जा कर उनके चरण स्पर्श किए थे, जबकि उन्हीं के कारण श्री राम को वन में 14 वर्षों का वनवास तथा कई विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था।

इन सभी उदहारणों से प्रमाणित होता है कि, जो क्षमा कर देता है, उसका हृदय विशाल है, वह समाज में अपने लिए एक उदाहरण छोड़ जाता है।

परन्तु अब आइए, कुछ और ऐसे प्रकरण देखते हैं, जहाँ शत्रुओं को क्षमा नहीं किया गया, बल्कि, उन्हें उचित दंड दे कर संसार में, समाज में, आने वाली पीढ़ी के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया गया।

महाभारत युद्ध का समय था, अर्जुन धनुष बाण लिए रथ पर विराजमान थे, सारथी थे स्वयं श्री कृष्ण । जहाँ तक निगाह जाए, कौरवों की सेना, उनमें रथी, महारथी, सभी अपने–अपने रथ पर विराजमान। पितामह भीष्म, गुरु द्रोण, द्रोण पुत्र अश्वत्थामा, कृपाचार्य, महारथी कर्ण, भ्राता दुर्योधन, दुःशासन, मामा शकुनि, शल्य आदि । अर्जुन हतप्रभ थे, कैसे अपनों पर तीर चलाएँ, यह उनके सामने बड़ा प्रश्न था।

इस द्वंद्व के भंवर से अर्जुन को स्वयं श्री कृष्ण ने निकाला, कृष्ण ने उन्हें धर्म का पालन करने के लिए प्रेरित किया। महाभारत युद्ध दुष्टों के नाश, पापी एवं दुराचारियों के दमन, तथा जो दोषी का साथ देते हैं वह भी पाप के भागीदार हैं, इन सबका ज्वलंत उदाहरण है। धर्म के पालन के लिए अधर्मियों के विनाश की गाथा है, महाभारत।

मनुष्य के समक्ष हर युग में महाभारत जैसी स्थिति उपज सकती है। तब यह निर्णय लेना कठिन हो जाता है कि, किसी को क्षमा कर दिया जाए अथवा उचित दंड दिया जाए । कभी–कभी क्षमा करने वाले को कायर समझा जाता है, ये उसकी कमज़ोरी के रूप में लिया जाता है और जिनको क्षमा मिल जाती है, वह इस तरह के गलत कार्य किसी दूसरे व्यक्ति के साथ करने का प्रयास करते हैं।

क्षमा प्राप्ति का अधिकार उस व्यक्ति को है, जिसके हृदय में ग्लानि हो, पछतावा हो, जो यह स्वीकार करता हो कि, उससे गलती हुई है और वह हृदय से क्षमा याचना कर रहा हो। जो किसी भ्रामक परिस्थिति में आपके प्रति कोई गलत कर्म कर बैठा हो। पूरे होशोहवास से किए गए गलत कार्य के लिए क्षमा याचना करने का दुस्साहस धूर्त व्यक्ति ही करता है, अपितु ऐसे धूर्त व्यक्ति को क्षमा देना कभी भी उचित नहीं होगा।

तो यह आपके ऊपर है कि, आप श्री राम जैसे बन जाएँ, या फिर श्री कृष्ण जैसे। क्षमा कर दें या फिर अधर्म के विनाश हेतु पापियों के विनाश का कारक बनें। यह आपके विवेक पर निर्भर करता है। समाज में धर्म की स्थापना करना भी हमारे लिए आवश्यक है। सामाजिक व्यवस्था विधिसम्मत एवं धर्मसम्मत बनाए रखना हम सबका दायित्व है। अतः इस समाज की व्यवस्था को बनाए रखने हेतु हम सभी को अपना यथेष्ट योगदान देना है।

पारमिता महान्ति
उप महाप्रबंधक
सेल–सेट, भिलाई

व्यवहार परिवर्तन कार्यक्रम

प्रस्तावना :–

स्वच्छ भारत मिशन महात्मा गाँधी की 150 वीं जयन्ती पर श्रंद्धाजलि के रूप में 2 अक्टूबर, 2019 तक खुले में शौच मुक्त भारत का लक्ष्य प्राप्त करने के उद्देश्य से माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 2 अक्टूबर, 2014 को प्रारंभ किया गया था ।

विश्व के सबसे बड़े व्यवहार परिवर्तन कार्यक्रम के रूप में स्वच्छ भारत मिशन ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी क्षेत्रों से 130 करोड़ लोगों के सहयोग से, अपने आप को एक जन आन्दोलन में परिवर्तित करते हुए लगभग असंभव सा लगने वाला लक्ष्य प्राप्त किया। इसके परिणाम स्वरूप 36 राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशो में 10.28 करोड़ से अधिक शौचालय बनाने जाने के साथ, ग्रामीण स्वच्छता कवरेज जो कि 2014 में 39% था वर्ष 2019 में बदल 100% हो गया। दिनांक 2 अक्टूबर, 2019 तक, भारत के सभी जिलों ने स्वयं को 'खुले में शौचमुक्त' घोषित कर दिया था।

स्वच्छ भारत मिशन चरण–2 के घटक :–

स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) प्रथम चरण के प्रमुख उदेश्यों की प्राप्ति के बाद भारत सरकार ने इस कार्यक्रम के चरण– के अनुमोदन के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता और व्यक्तिगत साफ–सफाई की स्थिति में और सुधार लाने की अपनी प्रतिबद्धता को नवीन रूप दिया था।

स्वच्छ भारत मिशन का चरण – II 1.40,881 करोड़ रुपये के कुल अनुमानित परिव्यय के साथ मिशन मोड में वर्ष 2020–2021 से 2024–25 के दौरान कार्यान्वित किया जायेगा। ODF प्लस गाँव को ऐसे गाँव के रूप में परिभाषित किया गया है जहाँ खुले में शौच मुक्त (ODF) स्थिति को स्थायी रूप से बनाये रखा गया हो, ठोस एवं तरल कचरा प्रबंधन सुनिश्चित हो और प्रत्यक्ष रूप से स्वच्छ दिखे। इसमें निम्नलिखित शामिल है:

(क) खुले में शौचमुक्त स्थायित्व (ख) ठोस कचरा प्रबंधन (1) तरल कचरा प्रबंधन (घ) प्रत्यक्ष स्वच्छता। उपर्युक्त उद्देश्य को सभी स्तरों पर निरंतर परिवर्तन प्रेरणा और क्षमता संवर्धन द्वारा प्राप्त किया जाना है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत गाँव के सभी विद्यालयों/आँगनबाड़ी केन्द्रों / पंचायत घर में कार्यशील शौचालय की सुविधा उपलब्ध हो, गाँव में निम्नलिखित प्रत्येक थीम पर दीवार – चित्रकारी। इश्तहार आदि के माध्यम से कम से कम पाँच (ODF) प्लस (IEC) संदेश प्रमुखता से प्रदर्शित होने चाहिए।

स्वच्छता सर्वेक्षण में भिलाई का योगदान :–

स्वच्छता सर्वेक्षण में भिलाई, प्रदेश में प्रथम देश में द्वितीय स्थान हासिल करने में सफल रहा। स्वच्छ भारत मिशन के तहत जारी स्वच्छता सर्वेक्षण में 5 लाख से अधिक आबादी वाले शहरों की श्रेणी में भिलाई शहर प्रदेश में पहला स्थान हासिल करने में सफल रहा जिसमें भिलाई स्टील का योगदान बहुत ही उत्कृष्ट और अग्रणी रहा है। भिलाई की जनता के सक्रिय योगदान के बिना कोई मील का पत्थर हासिल नही किया जा सकता ।

रिपोर्ट के अनुसार केन्द्र से मूल्यांकन टीम ने 6,25750 लोगों की आबादी वाले BMC के सभी 70 वार्डों का निरीक्षण किया, टीम ने 133 शौचालयों को जिसमें 20 सामुदायिक और सार्वजनिक शौचालय शामिल है, साथ ही तालाबों, रेलवे लाइन, सड़क नालों और सीवरेज उपचार संयंत्रों के पास खुले में शौच का निरीक्षण किया शौचालयों को मॉडल शौचालय और सात को उत्कृष्ट श्रेणी में घोषित किया, जिससे BMC को (ODF) प्लस आंबटित करके राज्य में शीर्ष स्थान पर रखा गया BMC और भिलाई इस्पात संयंत्र के लोगों ने इस तरह के प्रतिष्ठित पद को सुनिश्चित करने के लिए अपनी ताकत का योगदान दिया।

स्वच्छ भारत अभियान की जरूरत :–

अपने आसपास की स्वच्छता हर नागरिक की जिम्मेदारी होती है, जिसे नागरिक ना निभाये तो देश में गंदगी– ही गंदगी होगी इसलिए देश को स्वच्छ करने के लिए हर नागरिक के समर्थन की जरूरत है। आजकल लोग कूड़ेदान में कचरा डालने की जगह पर इधर–उधर सड़क पर कचरा फेंक देते हैं जिसकी वजह से भी गंदगी बढ़ती है।लोगों के भौतिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक कल्याण के लिए भारत में इसके प्रति जागरुकता लाना बहुत ही जरूरी है। आज के समय में शौचालय, कचरे का पुनर्चक्रण, आसपास स्वच्छता, आदि की बहुत अधिक ज़रूरत है।

शहरी क्षेत्रों में अभियान :–

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य हर नगर में ठोस कचरा प्रबंधन की व्यवस्था की गई है, जिसके साथ–साथ लगभग एक करोड़ घरों को ढ़ाई लाख से अधिक सार्वजनिक शौचालय और ढ़ाई लाख सामुदायिक शौचालय उपलब्ध कराए गए है।इस तरह से सार्वजनिक शौचालयों को भी बस अड्डों, रेलवे स्टेशन, बजार आदि पर जगह–जगह बनाया गया।

स्वच्छ भारत मिशन का लोगों पर प्रभाव :–

स्वच्छ भारत अभियान का लोगों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। क्योंकि इस अभियान की वजह से क्षेत्रों के लोगो के जीवन स्तर पर सुधार किया गया। लोगों की कुछ असुरक्षित और अस्वस्थ आदतों को बदला गया है ताकि वे सभी लोग स्वस्थ रह सके। सरकार द्वारा सफाई व्यवस्था, शौच व्यवस्था, सड़क व्यवस्था, आदि को देखने के लिए कार्य समितियाँ बनाई गई जो अपने कामों पर विशेष ध्यान देती है। इस अभियान से पूरे भारत में स्वच्छता की लहर दौड़ पड़ी थी। जिसने लोगों को बहुत अधिक प्रभावित किया क्योंकि अगर समाज स्वच्छ होगा तो उस सामाज में रहने वाला हर एक व्यक्ति भी स्वच्छ और स्वस्थ रह सकता है, जिससे सभी लोगों को आपस में मिलकर करने की जरूरत है।

स्वच्छ भारत मिशन का उद्देश्य :–

स्वच्छ भारत मिशन को बहुत से उद्देश्यों की वजह से शुरु किया गया जिसमें से इसके कुछ उद्देश्य है– खुले में शौच करने की प्रथा की खत्म करना, अस्वास्थ्यकर शौचालयों को फ्लश शौचालय में बदलना, हाथों से मल की सफाई करने से रोकना, ठोस या द्रव कचरे का दोबारा से उपयोग करना, लोगों को अच्छी आदतों के लिए प्रेरित करना, सफाई के प्रति जागरुकता फैलाना, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सफाई की व्यवस्था को अनुकूल बनाना और लोगों में भारत में निवेश करने के लिए रुचि रखने वाले सभी निजी क्षेत्रों के लिए वातावरण को अनुकूल बनाना है।

उपसंहार :–

जिस तरह से सभी लोग स्वच्छ भारत मिशन में योगदान दे रहे हैं उस तरह से 2022–2025 तक भारत को स्वच्छ और हरा भरा बनाया जा सकता है। स्वच्छ भारत मिशन एक बहुत ही अच्छी पहल है। क्योंकि कहा भी गया है कि स्वच्छता ही भगवान की तरफ पहला कदम होती है। अगर स्वच्छ भारत मिशन का ठीक प्रकार से अनुसरण किया गया तो आने वाले कुछ ही सालों में पूरा भारत स्वच्छ और सुंदर बन जाएगा। हर स्वस्थ देश और स्वस्थ सामाज को चाहिए कि उसके प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ रहे और हर तरह से स्वच्छ हो।

सुनील कुमार रजक
ए.सी.टी. (बी.ओ)
(शक्ति एवं वायु प्रवाह केन्द्र–2)
भिलाई इस्पात संयंत्र

"स्वच्छता अपनाओ – स्वच्छता अपनाओ, अपने घर को सुंदर बनाओ"

वही प्यार सदाबहार

आईना–ए–ज़िन्दगी ने क्या बता दिया
जब देखा खुद को तो पाया कि,
ज़िन्दगी तुझे जीने के लिए
मैंने अपना तन–मन गवाँ दिया।

हो के बेखबर अपनी
उथल–पुथल सी व्यस्तताओं में,
दुनियाँ की भीड़ और चिंताओं में
ऐ ज़िन्दगी, मैंने तुझे ही भुला दिया।

जब चाहा कि, अब जी लूँ तुझे
ज़रा चैन की एक साँस लूँ मैं,
तो ऐ ज़िन्दगी तूने मुझे
अपना हिसाब किताब थमा दिया।

तू कहती है मुझसे कि
जी लो मुझे जी भरकर,
यहाँ हर एक आहट पर मुझे लगता है डर
हाँ डर, बॉस के आने से, तो दुनिया के ताने से।

टारगेट को पाने में
या अपनी गृहस्थी जमाने में,
कहीं एग्ज़ाम का होता डर तो
कहीं होती रिजल्ट देने की फ़िकर।

इन्हीं में डूबी कोने में खड़ी ज़िन्दगी
सोचती है कि कब मिलेगी,
फुर्सत मुझे इस ताने–बाने से
जहाँ मैं मिलूंगी कभी अपने छूटे अरमानों से।

चल ले चल मुझे उन वादियों में अब
जहाँ ऊष्मा हो अपार, ऊर्जा का हो संचार,
जहाँ हो भोर और मेरा अपना सुंदर संसार
लौटा दे तू मुझे ज़िन्दगी वही प्यार सदाबहार।

सुश्री प्रतीका गार्गव साकल्ले
बैंक ऑफ बड़ौदा
अंचल कार्यालय, सेक्टर–10,
भिलाई

टीकाकरण - एक आवश्यकता

टीकाकरण से अभिप्राय मानव जाति के लिए साहस, शक्ति, सुरक्षा और विश्वास से है, जो कि, हमारी जीत, प्रगति, उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु की कामना से लगाया जाता है। परन्तु आज विज्ञान की प्रगति से वैज्ञानिकों के द्वारा मानव जीवन को सुरक्षित करने हेतु कुछ विशिष्ट दवाओं के माध्यम से तैयार किए जाने वाले इंजेक्शनों को टीका के नाम से जाना जाता है। जो मानव शरीर को रोग प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करते हैं, जिनसे मनुष्य कई जानलेवा बीमारियों से सुरक्षित हो जाता है।

एक शिशु के पैदा होते ही उसके अभिभावकों द्वारा उम्र के विभिन्न पड़ावों पर चिकित्सकों की सलाह के अनुसार बच्चों को टीका लगाया जाता है, उसे ही टीकाकरण कहते हैं। टीकाकरण, प्रत्येक व्यक्ति के लिए अतिआवश्यक है।

टीकाकरण, आज के संदर्भ में कोई नई बात नहीं है। वर्तमान परिदृश्य में हर व्यक्ति टीके के महत्व को समझ रहा है, क्योंकि कोरोना (कोविड–19) जैसी वैश्विक महामारी से आज संपूर्ण विश्व दहक रहा है। इस जानलेवा खतरनाक बीमारी से पूरे विश्व में हाहाकार मचा हुआ है। विश्व के सभी देशों में मानवजाति को बचाने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं। विश्व के समस्त देशों के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न अनुसंधानों के माध्यम से टीके तैयार किए जा रहे हैं, जिससे मनुष्य की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाकर, मानव जीवन को सुरक्षित किया जा सके। हम भाग्यशाली हैं कि, हमारे महान देश भारत के वैज्ञानिकों द्वारा इतने कम समय में सम्पूर्ण मानव जाति के लिए टीका का निर्माण कर लिया गया है।

हमारे महान भारत देश में स्वनिर्मित कोविशील्ड वैक्सीन – सीरम इंस्टीट्यूट आफ इंडिया और कोवैक्सीन – भारत बायोटेक द्वारा उत्पादित की जा रही है, जो कि सम्पूर्ण मानव जाति को सुरक्षित रखने में कारगर सिद्ध हुई है।

कोरोना महामारी (कोविड–19) से बचने हेतु दो उपाय मददगार है। पहला– हमें हर पल सावधानी रखनी होगी जैसे –मास्क पहनना, साबुन से बार–बार हाथ धोना, सैनिटाइज़र प्रयोग में लाना, सामाजिक दूरी बनाए रखना एवं सरकार द्वारा समय–समय पर जारी दिशा–निर्देशों का अनुपालन करना। दूसरा उपाय सबसे अधिक ज़रूरी है, वह है कोविडरोधी टीका लगवाना, जो हमारे शरीर में इस रोग के प्रति प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाकर इस जानलेवा बीमारी से हमारे जीवन को सुरक्षित रखता है।

हमारे भारत देश में इस समय लगभग सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए टीकाकरण अभियान चलाया जा रहा है, जिसमें भारत सरकार द्वारा सभी लोगों का निःशुल्क टीकाकरण किया जा रहा है, चाहे वो शहरी क्षेत्र हो या फिर ग्रामीण क्षेत्र। हमारे देश में अत्याधिक मात्रा में कोरोनारोधी टीकों का निर्माण हो रहा है, तथा हमारे देश की लगभग नब्बे प्रतिशत जनसंख्या का कोरोनारोधी टीकाकरण हो चुका है। बहुत जल्दी हम शत–प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करेंगे। मुझे अत्यंत गर्व महसूस होता है कि, मानव सभ्यता पर उत्पन्न इस संकट काल में हमने दुनियाँ के कई देशों को कोरोनारोधी टीकों की आपूर्ति की है। टीकाकरण शत–प्रतिशत आवश्यक है, हमें इस बात को समझना होगा और कोरोना सहित सभी बीमारियों की रोकथाम के प्रति जागरूक होना होगा।

कोरोना महामारी से हमारा देश,शहर,गाँव, मोहल्ला तथा हमारा भिलाई इस्पात संयंत्र भी अछूता नहीं रहा है। हमने इस वैश्विक महामारी से अपने सगे–संबंधी, रिश्तेदार, सहकर्मी किसी ना किसी को अवश्य खोया है। हम सबको अकल्पनीय पीड़ा का सामना करना पड़ा है। कोरोनावायरस का असर अब धीरे–धीरे कम हो रहा है। संक्रमण में सिर से पाँव तक डूबे रहने के बाद, हमारे जीवन की शाखाएँ फिर से प्रकट होने लगी है। इन शाखाओं में उन ज़िन्दगी की निशानियाँ भी हैं जो अब कभी प्रकट नहीं होंगी। भिलाई इस्पात संयंत्र के अनेक कर्मवीरों को हमने इस महामारी के दौरान खोया है। इसी प्रकार छत्तीसगढ़ राज्य में इस वैश्विक महामारी ने लगभग 14 हजार लोगों को हमसे छीन लिया है। ऐसे हजारों/लाखों लोग जिस दिन इस धरती पर आए होंगे, धरती ने उनके आने की खुशियाँ मनाई होगी। इनकी विदाई में उसी धरती के आँसू भी कम पड़ गए होंगे।

एक जीवन का मिट जाना केवल एक व्यक्ति का निधन नहीं होता है, बल्कि यह एक दुनियाँ का तबाह हो जाना होता है। ऐसे ही हजारों–लाखों दुनियाँ से मिलकर एक पूरी दुनियाँ/सृष्टि का निर्माण होता है। जो व्यक्ति इस संसार से विदा हो गया है, वह अपने पीछे एक उजड़ी हुई दुनियाँ छोड़ गया है – बिलखती हुई माताएँ, रोती हुई बहनें, अनाथ हो चुके बच्चे।

हमारे नगरीय प्रशासन एवं भिलाई इस्पात संयंत्र प्रबंधन द्वारा इस वैश्विक महामारी से लोगों को बचाने के लिए कई उपाय किए। हमारे अस्पतालों में वरिष्ठ चिकित्सकों के नेतृत्व में टीम बनाकर सेवा तथा सहायता की अनूठी मिसाल पेश की। भिलाई इस्पात संयंत्र प्रबंधन द्वारा निःशुल्क मास्क एवं सैनिटाइज़र वितरण की व्यवस्था की तथा जम्बो

कोविड सेंटर बनाए गए। इसके अलावा सम्पूर्ण संयंत्र बिरादरी के निःशुल्क टीकाकरण की व्यवस्था की, जो कि, अत्यंत सराहनीय एवं मानवीय कार्य है। अत्यंत गर्व का विषय है कि, समस्त मानव जाति पर मंडराते संकट के समय, भिलाई इस्पात संयंत्र प्रबंधन द्वारा देश के कई राज्यों में प्राणवायु ऑक्सीजन की आपूर्ति की तथा लोगों की जीवनरक्षा की।

कोरोना महामारी, सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक अदृश्य शत्रु के रूप में है, जो कब कहाँ पहुँचकर,किसका विनाश करेगा, किसी को पता नहीं। इसका सटीक अनुमान लगाना कि, कोरोना महामारी (कोविड–19) कब खत्म होगी? किसी के बस की बात नहीं है। इसकी केवल रोकथाम की जा सकती है, जिसका एकमात्र तरीका केवल और केवल टीकाकरण ही है।

अतः मेरी सभी लोगों से करबद्ध प्रार्थना है कि, कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए टीकाकरण अवश्य करवाएँ। भूतकाल में हुई गलतियों से सबक लेकर अपना जीवन जीने का तरीका बदलें, टीका अवश्य लगाएँ। अगर हम इतना कर लेगें तो कोरोना महामारी (कोविड–19) की आने वाली कोई भी लहर हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ पायेगी। हम स्वस्थ रहेंगे तथा आनेवाले कल को भी देख सकेंगे क्योंकि "जान है तो जहान है" ।

संतोष पराशर
विभाग–निरीक्षण (सामग्री प्रबंधन)
भिलाई इस्पात संयंत्र

प्रकृति

ये सरकती धरा है,
या नीला आकाश।,
ये उफनता सावन है,
या खुशियों का आगाज़।
ये दूर तक उड़ता गुबार है,
या हाथों से फिसलता ख़्वाब।,
ये बादलों से झाँकता रवि है,
या बादलों में छुपती आग।
ये उड़ती हुई फुहार है सावन की,
या जाती हुई सुगबुगाहट सी आहट।
ये डोलती हुई पृथ्वी है अपनी धुरी पे,
या धुरी पर घूमता स्वयं आकाश।
ये रोशनी है सुरमई शाम की,
या पीछे छिपे अंधेरे की शुरुआत।
ये कसमसाती सी ज़िन्दगी है,
या ज़िन्दगी को मिलता नया ख़्वाब।
जाने क्या–क्या है इसमें छिपा,
ये किसी ख़ज़ाने सा लगता है।
रख लो या बाँट दो इसे,
ये उड़ती चिड़ियों के फ़सानों सा लगता है।

डॉ. श्वेता चौबे 'मधुलिका'
सेल–सेट भिलाई

आखिर क्यों लिखूँ

कुछ दिनों से मन में था कि, कुछ लिखूँ,
फिर दिल ने सोचा, मैं भला आखिर क्यों लिखूँ?

क्या कुछ अनोखा अनदेखा जन्मा है भीतर?
जिससे कहीं, कुछ तो हो सकेगा बेहतर।
निर्लेप–सहज स्वरूप है, क्या ये उत्पत्ति का?
या प्रतिकार है, बाह्य सांसारिक विपत्ति का।

क्या ये उपजा है, किसी विशेष को आनंदित करने?
या कुलबुला रहा, वर्ग विशेष को निन्दित करने।
अब तक जो लिखा गया, वो क्यों कर कम है?
उन सबसे हटकर हो, क्या इसमें उतना दम है?

सामर्थ्य होगा उसमें, इतिहास अलंकृत करने का ?
माधुर्य दे पायेगा क्या, वो सुप्त हृदय झंकृत करने का ?
इतने प्रश्नों की प्रसव पीड़ा से लड़कर,
शंकाओं की सब छलनी से छनकर,
जब कोई शुभ विचार मैं उत्पन्न कर पाऊंगा।
उस दिन अवश्य, लिखने को कलम उठाऊंगा।

कौशल किशोर शर्मा
उप महाप्रबंधक (सामग्री प्रबंधन)
भिलाई इस्पात संयंत्र

झंडा उड़ रहा है

मेरे घर के सामने थोड़ी सी खाली जगह है। उसमें कुछ बरस पहले मैने पौधे लगाए थे। जो अब वृक्ष बन चुके हैं। घर के चारों ओर फूलों की बगिया है। चारदीवारी में मिट्टी के दो बर्तन रखे हैं। एक में पानी रहता है व दूसरे में चावल के दाने। चिड़ियों के समूह यहाँ पानी पीने व दाना खाने नियमित रूप से आते हैं। ये चिड़ियाँ मेरे घर के सामने पेड़ों में चहकती रहती हैं, इन्हें देखना बहुत अच्छा लगता है। कुछ गिलहरियों ने भी इन वृक्षों में स्थायी आशियाना बनाया हुआ है, जो घर के आसपास ये फुदकती रहती हैं। मेरे घर के बाजू वाले घर की छत में पीले रंग का बडा सा झंडा लगा है, जिसमें हनुमान जी का सिंदूरी रंग का उड़ता हुआ चित्र है। जब हवा चलती है तो झंडा उड़ता है, उस समय ऐसा लगता है, मानो हनुमान जी पर्वत उठाकर उड़ रहे हैं।

दिसम्बर 2019 में कोरोना वायरस से संक्रमित पहला मरीज चीन के वुहान प्रान्त में मिला था। भारत में कोरोना का संक्रमण 30 जनवरी 2020 को केरल में आरंभ हुआ था। जो वुहान से लौटे विद्यार्थियों में पाया गया था। 25 मार्च 2020 से भारत में लॉकडाउन लगा दिया गया। जुलाई 2020 आते – आते भारत में प्रतिदिन 30000 नये मरीज मिलने लगे। चारों ओर भय का वातावरण छा गया। ऐसे माहौल में 10 जुलाई 2020 को चीफ ट्रैक अभियंता कोलकाता का एक शिकायती पत्र आया। इस पत्र के अनुसार – भिलाई इस्पात संयंत्र द्वारा झारसुगड़ा वेल्डिंग प्लान्ट को आपूर्ति किए गए 26 मीटर की लम्बाई वाले 110 रेलों के हेड में ग्रूव बना है, अतः इनका उपयोग करने से रोका जाता है। करीब 172 टन रेल जिनकी कीमत करीब एक करोड़ रूपए होती है, उसका उपयोग करने से रोक दिया गया। पूरे विश्व में कोरोना वायरस का कहर जारी था। अंतर्राष्ट्रीय उड़ानें बंद कर दी गई थीं, परन्तु अर्न्तराज्यीय उड़ानें कुछ जगहों के लिए अतिआवश्यक सेवाओं के लिए जारी थीं।

झारसुगड़ा जाने के लिए 15 जुलाई 2020 को मैं अपनी कार से रायपुर हवाईअड्डा पहुँच गया। आमतौर पर पार्किंग खचाखच भरा हुआ होता है, लेकिन कारोना के कारण लोग, चूँकि घर में ही थे, इसलिए पार्किंग पूर्णतः खाली था। हवाईअड्डा में अन्दर जाने से पहले बैग, सूटकेस व मुझे पूरी तरह सेनिटाइज़र के फव्वारे से सेनिटाइज़ किया गया। आरोग्य सेतु ऐप से मेरा स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। एलायन्स एयर के 72 सीटर विमान में चार लोग ही रायपुर से झारसुगड़ा गए।

झारसुगड़ा में हमने जो होटल बुक किया था, वो भी पूरी तरह खाली था। इस होटल में केवल तीन लोग ही ठहरे थे। मैं और राइट्स भिलाई से आए दो निरीक्षक जो इसी शिकायत के निरीक्षण के लिए सड़क मार्ग से निजी वाहन से आए थे। 16 जुलाई को सुबह दस बजे हम तीनों झारसुगड़ा के भारतीय रेलवे के इंजीनियरिंग वर्कशॉप पहुँच गए। मापन व निरीक्षण का कार्य रात दस बजे तक चला। उड़ीसा में अर्न्तराज्यीय यात्रियों को 72 घंटे के अन्दर लौटना होता था, अन्यथा 14 दिन का क्वारेन्टाइन लागू हो जाता। अगले दिन सुबह 6 बजे रेलवे का ऑफिस खुलवाकर साझा रिपोर्ट तैयार की गई। हम रेलवे के लोगों को समझाने में सफल रहे कि, इन रेलों की गुणवत्ता रेलवे विनिर्देशों के अनुसार ही है, अतः इनका उपयोग किया जा सकता है। 17 जुलाई को हम वापस झारसुगड़ा से भिलाई आ गए। रायपुर विमानतल पर मेरा पता नोट किया गया व 14 दिन का अनिवार्य क्वारेन्टाइन करने कहा गया। 17 जुलाई को ही शाम को हमारे घर के बाहर क्वारेन्टाइन का बड़ा सा नोटिस चिपका दिया गया। मैं और मेरा परिवार पूरी दुनियाँ से 14 दिन तक के लिए अलग हो गए, हाँ वो चिड़ियाँ और, गिलहरियाँ अवश्य मेरे आँगन की बगिया में आती रहीं और हनुमान जी वाला झंड़ा लहराता रहा। भाग्यवश व सावधानी के कारण मैं संक्रमण मुक्त ही रहा व 14 दिन बाद मैंने ड्यूटी जाना आरंभ कर दिया।

सितम्बर, 2020 में कोरोना संक्रमण का दर 90000 प्रतिदिन तक पहुँच गया था। लगभग 1400 लोगों की मृत्यु कोरोना संक्रमण से प्रतिदिन होने लगी थी। स्थिति बहुत ही ज़्यादा बिगड़ी हुई थी, ऐसे में रेलवे के नागपुर डिवीजन के वरोरा इंजीनियरिंग वर्कशॉप से 13 मीटर के 160 रेलों की शिकायत आई। 125 टन रेल जिनकी कीमत करीब 78 लाख रुपए थी, अलग रख दिया गया था। मैं और दीनामणि 10 सितम्बर को कार से स्वयं ड्राइव करते हुए नागपुर गए व रात में वहीं रुके। 11 सितम्बर, 2020 को वरोरा पहुँचे, जो नागपुर से 100 किलोमीटर की दूरी पर है। दिन भर मापन और चर्चा चलती रही। रात 8 बजे साझा रिपोर्ट तैयार हुई, जिसमें 155 रेलों को स्वीकार कर लिया गया व 5 रेलों को बदलने के लिए सहमति बनी। वरोरा से रात को नागपुर होटल आ गए व दूसरे दिन 12 सितम्बर को मैं और दीनामणि भिलाई के लिए वापस निकल पड़े। रास्ते में मुझे खाँसी शुरू हो गई व थकान भी काफी लगने लगी। हम लोगों ने सोचा कि, बहुत अधिक ड्राइविंग व यात्रा की थकान होगी। शाम को हम लोग भिलाई पहुँच गए।

12 सितम्बर 2020 रात को मुझे बुखार आ गया। मैंने सोचा कि, ये बुखार यात्रा की थकान के कारण होगा। मैंने 13 सितम्बर को पैरासिटामॉल तीन समय खाया और आराम करता रहा, परन्तु मेरा बुखार उतरा नहीं। 14 सितम्बर को मैं सेक्टर – 9 अस्पताल गया जहाँ कोरोना के लिए जाँच की गई, रिपोर्ट आई तो पता चला, मैं कोरोना पॉज़िटिव था।

मेरे साथी दीनामणि को भी बुखार आ गया था, वो भी कोरोना पॉजिटिव हो गए। मुझे दवाइयों की किट देकर 17 दिन होम आइसोलेशन में रहने

को कहा गया। घर में पत्नी व दोनों बच्चे थे, मेरे कारण वे सभी जोखिम के दायरे में आ गए।

मैं पहली मंजिल के एक कमरे में रहने लगा व अलग बाथरूम का उपयोग करने लगा। फिर भी दो दिन बाद मेरी पत्नी को कोरोना संक्रमण के लक्षण उल्टी, दस्त उभर आए। उसकी टेस्ट रिपोर्ट भी पॉज़िटिव आई। अब घर में हम दोनों संक्रमित हो गए थे। दोनों बच्चों ने हम दोनों की देखभाल की। पत्नी तो चार दिन में ठीक हो गई। परन्तु मेरा बुखार 7 दिन से नहीं उतर रहा था व कमज़ोरी भी काफी आ चुकी थी, मैं स्टीम लेता रहा और दवाइयों का सेवन करता रहा। दीनामणि को भी बुखार व खाँसी लगातार थी, हम दोनों एक दूसरे का हौसला बढ़ाते थे।

लगातार बुखार रहने से 9 दिन में मेरा 10 किग्रा वजन कम हो गया था। अब तो बाथरूम जाते ही हाँफने लगता था। मेरा बुखार 101 से 102 डिग्री तक बना रहता था। मैंने अस्पताल जाने का निर्णय लिया व भर्ती होने चला गया। परन्तु अस्पताल में हाहाकार मचा हुआ था, संक्रमित लोगों की लगातार मौत हो रही थी। डॉक्टर से दवाई लेकर व ओपीडी बुक में लिखकर कि, मैं अपनी मर्ज़ी से भर्ती नहीं होना चाहता, मैं घर आ गया।

मैं बगल वाले घर में उड़ते हनुमान जी वाले झंड़े को देखता रहता व सोचता कि, मुझे ठीक होना ही है। मैंने प्राणायाम करना आरंभ किया व ऐलोपैथी के साथ – साथ पतंजलि की दवाई कोरोनिल लेना भी शुरू किया। बारहवें दिन मेरा बुखार उतरा, पहले तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ, परन्तु जब मैंने थर्मामीटर लगाया, तो पाया सचमुच बुखार उतरा हुआ था। मुझे लगा मैंने बाज़ी जीत ली है। मैंने घर में सबको बताया सभी बहुत खुश हुए। उधर दीनामणि को भी एक दिन बाद बुखार से राहत मिल ही गई। हम दोनों काफ़ी कमज़ोर हो गए थे, मेरा वजन 12 किग्रा कम हो गया था। लेकिन धीरे–धीरे स्वास्थ्य में सुधार होता गया व 16 अक्टूबर, 2020 को हम फिर से प्लान्ट जाने लगे। परिवार के सहयोग व हार न मानने की जिद से ही हम इस विषम परिस्थिति से बाहर आ सके।

मेरे घर में चिड़ियों का आना व चहकना अब भी जारी है और वो झंडा हनुमान जी के साथ उड़ रहा है। कोरोना का प्रकोप अब भी जारी है। 10 फरवरी, 2021 को मदार – अजमेर से रेल के टूटने की नई शिकायत आई। मैं और दीनामणि फिर से निकल पड़े, शिकायत का निराकरण करने क्योंकि झंडा उड़ रहा है, अभी भी।

जितेन्द्र कुमार वर्मा
उप महाप्रबंधक
अनुसंधान एवं नियंत्रण प्रयोगशाला

भगवान का रूप – माँ

हमें जीवन देती वो है माँ, ममता की मूरत है माँ,
जग में सबसे प्यारी है माँ, अनमोल रतन हीरा है माँ।
अम्बर तुच्छ है तेरे सामने, सागर उथला है तेरे सामने,
कनक निस्तेज है तेरे सामने, पकवान हैं फ़ीके तेरे सामने।
भगवान का दूसरा रूप है माँ, प्यार सदा बरसाती है माँ।

खुशी में खुश हो जाए माँ, दुख में आँसू बहाए माँ,
चलना हमें सिखाए माँ, सृष्टि का अस्तित्व है माँ।
कष्टों को सहकर परिवार की, मर्यादा बचाए वो है माँ,
संतानों की रक्षा करने दुर्गा–चंडी बन जाती है माँ।
भगवान का दूसरा रूप है माँ, प्यार सदा बरसाती है माँ।

कितने भी बड़े हो जाएँ पर, सामने तेरे बच्चे है माँ,
कितने भाग्यवान है वो, जिनके पास होती है माँ।
प्यार किसे कहते हैं, और ममता होती है क्या,
कोई उन बच्चों से पूछे, जिनकी नहीं होती है माँ।
भगवान का दूसरा रूप है माँ, प्यार सदा बरसाती है माँ।

सुबह हमें तैयार कराए, आँखों में काजल भी लगाए,
हर बला से हमें बचाने, काला टीका हमें लगाए।,
शगुन अपशगुन क्या है, जादू टोना होते हैं क्या,
कोई उन बच्चों से पूछे, जिनकी नहीं होती है माँ।
भगवान का दूसरा रूप है माँ, प्यार सदा बरसाती है माँ।

डॉ. मृदुला चतुर्वेदी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (गणित)
केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग

संयुक्त परिवार - ज़िम्मेदारी संग खुशियाँ हज़ार

एक शहर में रामस्वरूप नाम का व्यक्ति खेती किसानी से जुड़ा हुआ था। उसके पूर्वज गाँव में रहते थे किन्तु वह स्वयं गाँव से दूर करीब के एक शहर में रहने के लिए आ गया अपने बच्चों के कारण ताकि बच्चों को अच्छी शिक्षा दिला सके। वह अपने उद्देश्य में सफल भी हो गया, जब उनका बड़ा बेटा मुकेश अच्छी पढ़ाई के बाद बैंक में नौकरी करने लगा। छोटा बेटा दिनेश आज अच्छा व्यापार कर रहा है तथा बेटी कल्पना नौकरी की तलाश में है।

यह परिवार एक आदर्श परिवार के नाम से जाना जाता है। किन्तु समय बहुत बलवान होता है, दोनों बेटों के विवाह के पश्चात परिवार और भी वृहद् हो गया तथा रामस्वरूप एवं उसकी पत्नी शालिनी बहुत खुश थे कि, चलो अब केवल बेटी की शादी करके हमारी ज़िम्मेदारी पूर्ण हो जायेंगी तब हम दोनों तीर्थयात्रा पर जाएंगे।

तभी अचानक बड़े बेटे ने आकर बताया उसका स्थानान्तरण दूसरे शहर में हो गया है, अब वहाँ जाना पड़ेगा। कुछ दिनों बाद बड़ा बेटा अपनी पत्नी के साथ शहर चला गया। समय गुज़रने के साथ ही छोटे बेटे का व्यापार भी कुछ मंदा हो गया। अब रामस्वरूप का भी शारीरिक व्याधियों के कारण खेती किसानी के लिए बार बार गाँव जाना संभव नहीं हो पा रहा था।

दोनों बेटों ने पिताजी को गाँव की ज़मीन बेच कर अपने को इन सब जिम्मेदारियों से मुक्त होने की बात कर जमीन बिकवा दी। जो पैसे मिले पिताजी ने चार हिस्से कर दोनों बेटों को उनके हिस्से दे दिए, बेटी का हिस्सा अपने पास रख लिया, कि समय आने पर उसे दे देंगे।

समय तेज़ी से बदलने लगा, छोटा बेटा व्यापार में उन्नति न होने कारण शहर में जाकर व्यापार करने लगा तथा दोनों बेटे अपने बच्चों के साथ कभी–कभार पिताजी के पास आकर एक दो दिन रहते तथा वापस चले जाते। एकमात्र पुत्री ने पढ़ाई के पश्चात नौकरी कर ली किन्तु विवाह योग्य लड़का ना मिलने के कारण अभी तक अविवाहित थी, अब तो उसने मन बना लिया था की विवाह नहीं करेंगी तथा अपने माँ पिताजी के साथ ही रहूंगी। आज दीपावली के अवसर पर सभी सदस्य एक साथ एकत्रित हुए थे, लक्ष्मी पूजा के पश्चात् सभी एक जगह बैठ कर पुराने दिनों को याद कर थे। अचानक कल्पना के विवाह की बाद निकल पड़ी, किन्तु कल्पना के ना कहने से पूरा वातावरण भारी हो गया।

तभी बड़े बेटे की छोटी बेटी शालू ने कहा दादाजी मैं भी शादी नहीं करूंगी, मैं भी अपने माँ पिताजी के साथ हमेशा रहूंगी। जब वे वृद्ध हो जायेंगे तो मैं उनकी देखभाल करूंगी कल्पना बुआ की तरह। शालू की इस बात से पूरे परिवार को साँप सूंघ गया तथा सन्नाटा छा गया। तब परिवार के लोगों को समझ में आया कि, कल्पना शादी के लिए क्यों इंकार कर रही थी। वह दोनों भाईयों की अनुपस्थिति में माँ–पिताजी की देखभाल करना चाहती थी।

दोनों बेटों ने माँ–पिताजी से विचार विमर्श किया और माँ–पिताजी और कल्पना को छोटे बेटे के शहर ले जाकर साथ रहने लगे तथा बेटों ने योग्य लड़के से कल्पना का विवाह कर दिया। इस तरह रामस्वरूप अपने परिवार के साथ खुशी–खुशी रहने लगा।

सुरेश कुमार नागदेव
सहायक प्रबंधक
भिलाई इस्पात संयंत्र

भारत में सत्याग्रह का प्रथम प्रयोग

यह बात सन् 1917 की है। गाँधी जी कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए आए थे। रामचन्द्र शुक्ल चंपारण के एक किसान थे। उन्हें किसानों की दुर्दशा बहुत अखरती थी। वे लखनऊ कांग्रेस में गाँधी से मिलकर किसानों की व्यथा बताते थे। उन्होंने गाँधी जी को चंपारण आकर खुद अपनी आँखों से किसानों की दुर्दशा देखने का आग्रह किया। गाँधी जी तैयार हो गए। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में एक नया मोड़ आने वाला है।

तीन कठिया प्रथा

चंपारण में नील की खेती जबर्दस्ती किसानों से करायी जाती थी। किसान अपनी ही जमीन के 3/20 भाग में नील की खेती करने के लिए कानून से बँधे थे। इस प्रथा को तीन कठिया प्रथा कहते थे। नील की खेती करने से भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाती थी। जो किसान ऐसा करने से मना करते थे, उन्हें सरेआम पीटा जाता था। लगभग 100 साल पुरानी प्रथा के खिलाफ बोलनें की हिम्मत किसी में नहीं थी।

चंपारण सत्याग्रह

चंपारण तिरहुत संभाग (कमिश्नरी) का एक जिला था और मोतिहारी उसका मुख्यालय। बेतिया के आस–पास रामचन्द्र शुक्ल का घर था। मुज़फ्फरपुर में गाँधी जी किसी को नहीं जानते थे। परन्तु उनसे मिलने आचार्य कृपलानी और वकीलों का एक दल आया जिसमें गया बाबू, राजेन्द्र बाबू और ब्रजकिशोर बाबू भी मौजूद थे। सब की गांधी जी से जीवन भर की मित्रता हो गई। उन्हें बताया गया कि, कुछेक किसानों ने मुकदमा दायर किया है। उनका स्पष्ट मत था कि, मुकदमें से कुछ विशेष लाभ नहीं होगा। जनता बहुत डरी हुई है और लोगों के लिए सच्ची दवा तो उनके डर को भगाना है।

अपनी आत्मकथा में गांधी जी लिखते है :– "मुझे तो किसानों की हालत की जाँच करनी थी। नील के मालिकों के विरुद्ध जो शिकायतें थी, उनमे कितनी सच्चाई है, यह देखना था। इस काम के लिए हजारों किसानों से मिलने की आवश्यकता थी। किंतु उनके सम्पर्क में आने से पहले मुझे यह आवश्यक मालूम हुआ कि, नील के मालिकों की बात सुन लूँ और कमिश्नर से मिल लूँ। मैंने दोनों को चिट्ठी लिखी"।

मिल मालिकों ने गाँधी जी से कहा कि वे उनके और किसानों के मामले में दखल न दें क्योकि वे परदेशी है। कमिश्नर ने उन्हें सलाह दी कि वे आगे बढ़े बिना तिरहुत छोड़ दें। गाँधी जी समझ गए कि, सरकार उन्हें जाँच करने से रोकना चाहती है। मित्रों से सलाह करके उन्होंने तुरन्त मोतिहारी जाने का निश्चय किया। अभी आधे रास्ते पहुचें होंगे कि पुलिस सुपरिंटेंडेन्ट का बुलावा आ गया। उन्हें चम्पारण छोड़कर चले जाने की नोटिस दी गई। गाँधी जी ने उत्तर दिया कि, वे चंपारण छोड़ना नहीं चाहते हैं, उन्हें किसानों की हालत की जाँच करनी है। निर्वासन की आज्ञा का अनादर करने के लिए उन्हें दूसरे दिन कोर्ट में हाजिर होने का समन मिला।

समन की बात चारों ओर फ़ैल गयी। लोग हजारों की संख्या में जमा होने लगे। उस दिन मोतिहारी में जैसा दृश्य था, वैसा पहले कभी नहीं देखा गया। मुकदमा चला। सरकारी वकील, पुलिस तथा मजिस्ट्रेट आदि सब घबराए हुए थे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि, क्या किया जाए। गांधी जी ने उनकी समस्या का समाधान किया, उन्होंने नोटिस के अनादर करने का अपराध स्वीकार किया। सजा सुनाने के लिए अदालत ने केस को मुल्तवी रखा।

अगले दिन मजिस्ट्रेट का हुक्म आया कि, गवर्नर साहब के आदेश से मुकदमा वापस लिया जाता है। कलेक्टर का आदेश आया कि, गांधी जी को जो भी जाँच करना है, वे करें और अधिकारियों की ओर से जो भी मदद चाहिए वे मांग लें। गांधी जी आत्मकथा में लिखते है – "ऐसे तात्कालिक एवं शुभ परिणाम की आशा हममें से किसी ने नहीं रखी थी। हिंदुस्तान को सत्याग्रह का अथवा कानून के सविनय भंग का पहला स्थानीय पदार्थ मिल गया"।

नील का दाग धुला

जाँच शुरू हुई। गाँधी जी को अनुमान हो गया कि, यह प्रक्रिया करीब 2 वर्ष तक चलेगी। प्रत्येक दिन कई किसान आते और अपनी व्यथा सुनाकर जाने लगे। फिर एक दिन गाँधी जी को बिहार सरकार का पत्र मिला जिसका मंतव्य था कि, आपकी जाँच काफी लम्बे समय तक चली है, अब आपको बिहार छोड़ देना चाहिए। गांधी जी ने उत्तर दिया कि, जाँच का काम अभी देर तक चलेगा और जाँच समाप्त होने पर भी, जब तक लोगों का दुःख दूर न हो, मेरा बिहार छोड़ने का इरादा नहीं है।

गवर्नर ने गाँधी जी को बुलाकर कहा कि, वे स्वयं एक जाँच समिति नियुक्त करना चाहते हैं और गाँधी जी से समिति का सदस्य बनने का आग्रह किया। अपने साथियों से चर्चा करने के बाद, कुछ शर्तो के साथ

गाँधी जी समिति के सदस्य बने। जाँच समिति ने किसानों की शिकायतों को सही पाया। गोरों ने किसानों से जो रकम अनुचित रीति से वसूल की थी, उसका कुछ अंश लौटाने एवं तीन कठिया प्रथा समाप्त करने की सिफारिश की गई।

निलहों के कड़े विरोध के बावजूद सरकार ने जाँच समिति की सिफारिशों पर पूरा–पूरा अमल किया और तीन कठिया कानून रद्द हो गया।

समाज सेवा

गांवों में शिक्षा एवं स्वच्छता का अभाव देखकर गांधी जी ने सार्वजनिक रूप से स्वयं सेवकों की मांग की। बम्बई, गुजरात तथा दक्षिण से स्त्री और पुरुष आकर चंपारण में रहने लगे और समाज सेवा का कार्य भी शुरू हो गया। आरंभ में छः ग्राम चिन्हित किए गए, प्रत्येक में पाठशाला बनायी गई। गणित के साथ–साथ स्वच्छता तथा नैतिक ज्ञान भी दिया जाने लगा।गाँवों के सार्वजनिक स्थल जैसे कुआँ, तालाब इत्यादि जगहों पर फैली गंदगी की सफाई की गई और लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया।

उपसंहार

गांधी जी के भारत आने के पूर्व स्वतंत्रता की लड़ाई अभिजात्य एवं पढ़े लिखे लोगों की लड़ाई थी। गांधी जी ने आम जनता को इस संग्राम से जोड़ दिया। चंपारण सत्याग्रह ने दबी कुचली जनता के अंदर से डर को भगा दिया और पहली बार उन्हें अपनी शक्ति का एहसास हुआ।

सौरभ कुमार राजा
महाप्रबंधक
सी.ई.टी./सेल, भिलाई

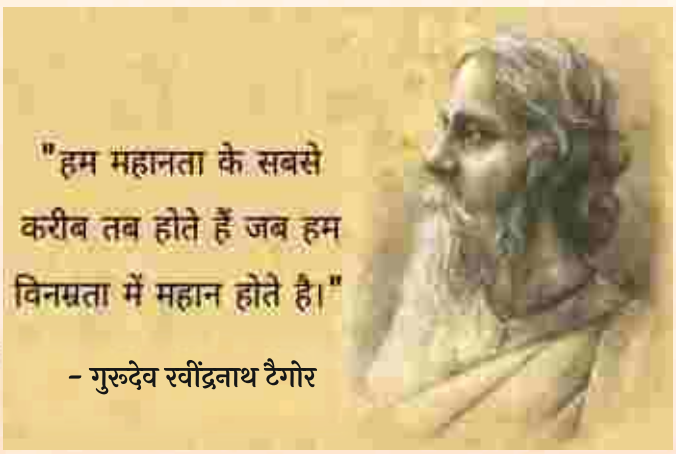

घर लौट कर आ जाओ

बिता लिया बहुत वक्त तुमने
चंद सिक्कों की चाहत में,
दुनियाँ की वाह और आह के बीच
अपनों को भुला दिया तुमने।
आ जाओ लौटकर बाहों में मेरी
मैं वहीं खड़ा जहाँ तुम छोड़ गए,
प्रतीक्षा में तुम्हारे, सपनों के गुल बिखेरे
आ जाओ चिर विश्रांति को।
भौतिकता की राह छोड़कर
साथ कुछ देर मेरा निभा जाओ
बचपन के वह मीत मेरे
आओ, घर लौट कर आ जाओ।

घर हो, पहचानते हो ना मुझको

सोचता हूँ, बेगानापन मिटाऊँ
अपनी मिट्टी की खुशबू एक बार फिर से अपनाऊँ,
गुलज़ार दोबारा मैं अपने सूने ये दिन–रात करूँ,
घर हो पहचानते हो ना मुझको, काश मैं तुमसे बात करूँ।
बहुत दिन बाद मुलाक़ात हुई तुमसे
अब इतनी फ़ुर्सत ही कहाँ,
जो दो घड़ी रुक कर तुमसे बात करूँ
आज सोचता हूँ ज़ाहिर कुछ ख़यालात करूँ।
तुम्हारे आँगन में घुटनों चलना सीखा
तुम्हारी दीवारों को स्लेट बना लिखना सीखा,
तुमको तनहा छोड़ सब कुछ भूल गया था मैं
अब और न ज़ब्त अपने जज़्बात करूँ।
दूर कहीं चला गया था मैं, बड़ा जो हो गया था मैं
वक्त की ठोकर लगी, आज फिर लौटा हूँ मैं
तेरे आगोश में खो जाने, घर हो पहचानते हो ना मुझको
ज़िन्दगी की साँझ में, बचपन से हालात करूँ।

नितिन गोस्वामी
सहायक अधीक्षक
डाक विभाग

प्रत्येक नागरिक का दायित्व

''स्वच्छ भारत मिशन–प्रगति का मंत्र'' शीर्षक स्वयं में ही एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य को उजागर करता है। स्वच्छ भारत मिशन शुरुआत आज से नहीं बल्कि सदियों से चली भारतीय परंपरा का एक अभिन्न अंग है। गांधीजी का कथन था–स्वच्छता स्वतंत्रता से कही ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। इससे यह पूर्णतः स्पष्ट है कि, स्वच्छता के प्रति जागरूकता की बात इतिहास के पन्नों में भी है।

भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी के द्वारा गांधीजी के स्वच्छ और स्वस्थ भारत के सपने को साकार करने की राह में उनकी 145 वें जन्मदिवस 02 अक्टूबर 2014 को इस क्रांतिकारी अभियान की शुरुआत की गई। नरेंद्र मोदी जी ने राजपथ पर राष्ट्रवादियों से स्वच्छ भारत अभियान में भाग लेने की और इसे सफल बनाने की अपील की ।

भारत के प्रत्येक नागरिक को यह समझना होगा कि स्वच्छ भारत बनाने की जिम्मेदारी सिर्फ सफाई कर्मियों की ही नही बल्कि प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि, वह स्वच्छ भारत मिशन में बढ़–चढ़कर भाग लें।

स्वच्छ भारत मिशन का उद्देश्य पूरे देश को स्वच्छ करने का है, इसके अंतर्गत निम्नलिखित उद्देश्यों को शामिल किया गया–

- देश के कोने–कोने को साफ– सुथरा बनाना ।
- लोगो को खुले में शौच करने से रोकना।
- भारत के शहर और ग्रामीण इलाकों के घरों में शौचालय का निर्माण किया गया ।
- हर एक गली में कम से कम एक कचरा पात्र उपलब्ध ।
- लगभग 11 करोड़ 11 लाख व्यक्तिगत, सामूहिक शौचालयों का निर्माण करवाना ।
- ग्राम पंचायत के माध्यम से ठोस और तरल अपशिष्ठ की अच्छी प्रबंधन व्यवस्था सुनिश्चित करवाना।
- सड़कें, फुटपाथ और बस्तियों की सफाई सुनिश्चित करवाना।

अपने इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भारत सदैव कार्यरत है तथा भारत सरकार के द्वारा कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे है। परंतु इस स्वच्छ भारत मिशन अभियान के दौरान हमें कई प्रकार के अड़चनों का भी सामना करना पड़ रहा है, जिसके कारण इस अभियान की गति धीमी हो रही है ।

शिक्षा का अभाव :–

हमारा देश शिक्षा क्षेत्र में बहुत पिछड़ा हुआ है। लोगों के अशिक्षित होने के कारण वह स्वच्छता के महत्त्व को समझ पाने में असफल हो रहे हैं तथा आस–पास के वातावरण को प्रदूषित कर रहे है। अतः लोगों में स्वच्छ व साफ सुथरे भारत के लिए शिक्षा का प्रचार करते हैं ।

खराब मानसिकता :–

कुछ लोगों का मानना है कि, थोड़ा सा कचरा फैलाने से देश गंदा नहीं होगा, परंतु उन्हें यह समझाने की आवश्यकता है कि, थोड़ा–थोड़ा कचरा ही देश को गंदगी के ढेर में बदल देता है।

घरों में शौचालय का ना होना :–

अक्सर गाँव में शौचालय नही होते । भारत में पौराणिक मनगढ़ंत व दकियानूसी सोच के अनुसार घरों में शौचालय बनवाना पाप समझा जाता है तथा वहाँ के लोग शौच के लिए बाहर जाते हैं, जिसके कारण हर तरफ गंदगी का वातावरण फैल जाता है।

अत्यधिक जनसंख्या :–

हमारा देश जनसंख्या के मामले में द्वितीय स्थान पर है । अस्वच्छता में भारी जनसंख्या भी एक महत्त्वपूर्ण कारण सिद्ध हो रही है।

कचरे का सही निस्तारण का अभाव :–

2017 के आकड़ों के अनुसार भारत प्रतिदिन 1,00,000 मीट्रिक टन कचरा उत्पन्न करता है। इतनी बड़ी संख्या में कचरे के उत्पन्न होने के बावजूद इनके निस्तारण के उचित उपायों का अभाव है।

उद्योगों का अपशिष्ट पदार्थ :–

आज के बढ़ते औद्योगिकीकरण के युग में उद्योग द्वारा अंधाधुध रूप से अपशिष्ट पदार्थ का उत्पादन किया जा रहा है। जिससे पर्यावरण भारी मात्रा में प्रदूषित हो रही हैं ।

"पूरी दुनिया करे पुकार'' ।
"स्वच्छ भारत का हो सपना साकार ''।।

उपर्युक्त बाधाओं व कठिनाईयों के बीच भी भारत सरकार व नागरिको बनाने प्रयासों स्वच्छ भारत मिशन को सफल बनाने का अधिक प्रयास किया जा रहा हैं। स्वच्छ भारत मिशन में केंद्रीय सरकार के साथ–साथ राज्य सरकारों ने भी अहम भूमिका निभाई।

"सत्याग्रह से स्वच्छाग्रह'' के नारे को बुलंद करते हुए स्वच्छ भारत मिशन में लगे लोगों को स्वच्छाग्रहियों की सेवा दी गई तथा उनके द्वारा 2014–2019 के बीच 90 मिलियन शौचालय का निर्माण करवाया गया। स्वच्छ भारत मिशन को सिर्फ शहरी क्षेत्रों में ही नहीं ग्रामीण क्षेत्रों में भी सफल बनाने का प्रयास जारी है ।

प्राथमिक स्तर पर ही बच्चों को स्वच्छता के प्रति जागरूक बनाने के लिए "स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय'' अभियान की भी शुरुआत की गई ।

भारत व राज्य सरकार द्वारा घरों में शौचालय निर्माण के लिए सब्सिडी देने की व्यवस्था की गई।

कई महत्वपूर्ण जानी–मानी हस्तियों को स्वच्छ भारत मिशन अभियान से जोड़कर स्वच्छता के प्रति जागरुकता फ़ैलाने का प्रयास कार्यरत है।

लोगों की मानसिकता को बदलने के लिए तथा स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के लिए जगह– जगह पर नुक्कड़–नाटक तथा प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा हैं। गली–मुहल्लों में कचरा निपटारा करने की सुविधा उपलब्ध की जा रही हैं ।

स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत वायु प्रदूषण कचरा निपटारा, प्लास्टिक प्रतिबंध, नमामि गंगे, यमुना कायाकल्प परिवर्तन आदि अभियानों की भी शुरुआत की गई।

स्वच्छ भारत मिशन की सफलता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि प्रधानमंत्री जी ने स्वच्छ भारत मिशन–2 की शुरुआत की घोषणा की । स्वच्छ भारत मिशन भारत के लिए ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के लिए एक उदाहरण स्वरूप सफल मिशन है । WHO के आकड़ों के अनुसार स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत से ग्रामीण क्षेत्रों में डायरिया से मरने वाले लोगों की संख्या में 180,000 की कमी आई है। NSO के द्वारा 2019 तक 71% ग्रामीण लोग शौचालय का प्रयोग करने लगे है।

भारत के प्रधानमंत्री जी ने स्वच्छ भारत मिशन के साथ ही 1 जुलाई 2022 से सिंगल यूज़ प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाया गया ।

अतः स्वच्छ भारत मिशन को सफल बनाने के लिए सिर्फ सरकार ही नही बल्कि भारत के प्रत्येक नागरिक को हर संभव प्रयास करना होगा तथा संकल्प लेना होगा कि अपने समाज, शहर व गाँव को स्वच्छ बनाए। पुरानी कुरीतियों को सौहार्दपूर्ण माहौल का निर्माण कर सुंदर व स्वच्छ भारत की परिकल्पना को साकार कर सकते है। स्वच्छ भारत मिशन संकल्पना के अंतर्गत कुछ नवाचारी उपाय भी किए जाने चाहिए ।

दो एकम दो, साबुन से हाथ धो।
दो दूनी चार, शौचालय हो हर घर द्वार।
दो तिया छह, स्वच्छता की हो जय।

प्रीति कुमारी
ओ.सी.टी.
भिलाई इस्पात संयंत्र
(शक्ति एवं वायु प्रवाह केन्द्र)

विश्वगुरु बने भारत फिर

बचपन में सुना था मैंने, हम अंग्रेज़ों के गुलाम थे
आज़ादी के लिए जन–जन ने किए संघर्ष लगातार।
स्वतंत्रता के लिए रहे जेल में, कालेपानी समुंदर पार,
देश उनके बलिदान का हमेशा रहेगा कर्ज़दार।

15 अगस्त है, इतिहास में परम गौरवशाली दिवस,
आज़ादी के लिए जिन्होंने, सहे अति कष्टदायी प्रहार।
राष्ट्रभक्तों ने किया था, अंग्रेज़ों को भागने विवश,
आओ उन अनाम सपूतों की करें हम जयजयकार।

आज़ादी के अमृत महोत्सव का उत्सव अति प्यारा है,
भारत की जयकार कर रहा आज तो ये जग सारा है।
यह महोत्सव देश के लिए त्याग और बलिदान का
यह महोत्सव देशभक्ति की भावना के गुणगान का।

आज देशभक्ति के नारों से गुंजित सारा आसमान है,
मेरा भारत आज रच रहा नित नूतन प्रतिमान है।
अमृत महोत्सव पर मिलकर हम आओ करें संकल्प,
भारत को सर्वश्रेष्ठ बनाने छोड़ेंगे ना कोई विकल्प।

विजयी विश्व तिरंगे की पताका लहराते जाएंगे,
माँ भारती का नाम विश्व में उज्ज्वल बनाएंगे।
यही समय है, सही समय है, भारत का अनमोल समय है,
असंख्य की भुजाओं की शक्ति है, हर ओर देशभक्ति है।

विश्व बंधुत्व और भाई–चारे का भारत ने संदेश दिया,
वसुधैव कुटुंबकम् का जिसने, विश्व को मंत्र विशेष दिया।
एकता और अनुशासन से, भारत की जयकार करें
विश्वगुरु बने फिर भारत, मिलकर ऐसा सहकार करें।

भावना चाँदवानी
उप प्रबंधक
यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
भिलाई

भिलाई : औद्योगिक विकास एवं पर्यावरण संरक्षण का अद्भुत संगम

पर्यावरण प्रदूषण

जीवन पर्यावरण पर आधारित है। स्वच्छ और स्वस्थ जीवन के लिए पर्यावरण की सुरक्षा आवश्यक है। वर्तमान समय में औद्योगिक विकास के कारण बहुत सी पर्यावरणीय चुनौतियां खड़ी हो गई हैं। पर्यावरण के अंतर्गत प्राकृतिक संपदा जलवायु गिरी कंदरा सागर मिट्टी आदि आते हैं। इन्हीं के आधार या इन्हीं के सहारे हमारा जीवन अस्तित्व प्राप्त करता है।

वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है। प्रदूषण एक ऐसी अवांछनीय एवं असामान्य स्थिति है, जिसमें भौतिक, रासायनिक तथा जैविक परिवर्तनों के फलस्वरूप वायु, जल तथा मृदा अपनी गुणवत्ता खो देते हैं तथा वे जीव जगत के लिये हानिकारक सिद्ध होने लगते हैं।

छत्तीसगढ़ प्रदेश में औद्योगीकरण का पर्यावरण पर प्रभाव

छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा कहा जाता है। छत्तीसगढ़ प्राकृतिक संपदा से भरा हुआ है। बस्तर प्रकृति का अनुपम वरदान है। अनेक घाटियाँ एवं पर्वत छत्तीसगढ़ को सुंदर भव्य एवं प्रकृति से परिपूर्ण करती है।

औद्योगिक विकास ने मानव को उच्च जीवन स्तर प्रदान करने के साथ ही सामाजिक–आर्थिक संरचना को नया आयाम प्रदान किया है। इसके साथ ही उत्पन्न पर्यावरणीय समस्या भी औद्योगीकरण की ही देन है। औद्योगिक विकास हेतु प्राकृतिक संसाधनों का तीव्रगति से विदोहन तथा औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि से पर्यावरण प्रदूषण अपरिहार्य है। विभिन्न औद्योगिक प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप पर्यावरण में सर्वथा नवीन तत्व समावेशित हो जाते हैं जो पर्यावरण के भौतिक एवं रासायनिक संघटकों को भी परिवर्तित कर देते हैं। कारखानों द्वारा उत्पन्न अवांछित उत्पाद यथा ठोस अपशिष्ट, प्रदूषित जल, विषैली गैसें, धूल, राख, धुआँ इत्यादि जल, थल तथा वायु प्रदूषण के प्रमुख कारक हैं। औद्योगिक इकाइयों से उत्पन्न दूषित जल, विषैली गैस तथा ठोस अपशिष्टों से प्राकृतिक संसाधनों का अवनयन हो रहा है।

भिलाई इस्पात संयत्र : उत्पादन के साथ प्रकृति संरक्षण की पहल

भिलाई इस्पात संयंत्र लोहे के उत्पादन में विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना चुका है। बीएसपी का लोहा दुनिया मानती है। बीएसपी ने सिर्फ उत्पादन में ही अपनी क्षमता का उपयोग नहीं किया है अपितु प्रकृति के संरक्षण में भी संयंत्र ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पर्यावरण संरक्षण में योगदान

भिलाई शहर एक व्यवस्थित शहर के नाम से जाना जाता है। इस शहर के विकास में भिलाई संयंत्र का योगदान अभूतपूर्व है। शहरं की संरचना जल का निकास, प्रकृति का संरक्षण, पेड़ पौधों की व्यवस्था इत्यादि इस शहर को अद्भुत बना देते हैं। इस शहर में भारत के हर शहर की झलक मिल जाती है। इसीलिए भिलाई को मिनी इंडिया भी कहा जाता है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक पूरब से लेकर पश्चिम तक भारत के प्रत्येक प्रांत की झलक यहां मिलती हैं। एक अनुमान के मुताबिक भिलाई शहर में 1000000 पेड़ हैं। सेंट्रल एवेन्यू की चौड़ी चौड़ी सड़कें और सड़कों के किनारे स्थित बड़े–बड़े पेड़ इस शहर को प्रकृति के साथ जोड़ते हैं।

संयंत्र के भीतर व टाउनशिप में बीएसपी द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य वन विकास निगम के सहयोग से अब तक 55 लाख से अधिक पौधे रोपे गए हैं।

संयंत्र के भीतर 30 एकड़ में 15 उद्यान और 125 वनस्पति किस्मों के 25,000 पौधों के साथ तीन नर्सरी भी हैं। स्कूलों में इको क्लब के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण और जागरूकता की मुहिम जारी है। वही संयंत्र के भीतर प्रदूषण रोकने की भी पहल की गई है।

बीएसपी ने एक जीवंत भविष्य के लिए पर्यावरण की रक्षा और संसाधनों को बचाने सतत पहल की है। इस वर्ष भी प्रबंधन द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाएगा। बीएसपी ने अपने विस्तार के प्रत्येक चरण में हरित प्रौद्योगिकियों पर भारी निवेश किया है।

तकनीकी उन्नयन के परिणामस्वरूप ऊर्जा में कमी, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन, अन्य गैसीय और जल प्रदूषकों में कमी, ठोस अपशिष्ट उपयोग में वृद्धि, बेहतर हाउस कीपिंग आदि प्राप्त करने में कामयाब हुआ है। अब जीरो लिक्विड वेस्ट डिस्चार्ज कंपनी के रूप में बीएसपी, दुनिया के उन गिने–चुने उद्योगों की सूची में शामिल हो गई है जिन्होंने यह मुकाम हासिल किया।

प्रदूषण नियंत्रण के लिए कोक ओवन, एसपी–2, एसपी–3, आरएमपी–2 आदि इकाइयों में मौजूदा स्टैक उत्सर्जन नियंत्रण प्रणाली के प्रतिस्थापन व उन्नयन कर वातावरण में समग्र प्रदूषण भार को कम करने में कामयाब हुआ है। इन तकनीकों से बीएसपी ने कण उत्सर्जन को 150 मिलीग्राम प्रति नार्मल मीटर क्यूब से कम करके 50 मिलीग्राम प्रति नार्मल मीटर क्यूब लाने में सफलता हासिल की।

वायु प्रदूषण के नियंत्रण पर भी काम किया गया। कोकओवन के डोर क्लीनिंग के साथ पुशर कार, एयर कूल्ड सेल्फ–सीलिंग दरवाजे, सीओसीसीडी काम्प्लेक्स में नई बैटरी–11 में 4 मेगावाट बिजली उत्पादन के प्रावधान के साथ कोक ड्राई क्वेंचिंग सिस्टम शामिल हैं।

भिलाई और पर्यावरणीय चुनौतियाँ

वर्तमान समय में भिलाई शहर में पर्यावरणीय चुनौतियाँ बढ़ रही हैं। अन्य शहरों की तरह यह भी आबादी के दबाव को महसूस कर रहा है। लोगों की उपेक्षा के कारण स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण के कार्यक्रम सफलता के आयाम नहीं छू पा रहे हैं ।

हमारा शहर विश्व का 24वाँ और प्रदेश का दूसरा सबसे ज्यादा वायु प्रदूषित शहर है। विश्व स्वास्थ्य संगठन(डब्लूएचओ) की रिपोर्ट में इसका खुलासा हुआ है। डब्लूएचओ द्वारा वायु प्रदूषण पर जारी की गई रिपोर्ट के अनुसार भिलाई की हवा में पीएम 10 कंपोनेंट 103 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर है। वहीं पीएम 2.5 कंपोनेंट 55 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर पाया गया है। इसकी वजह से शहर साँस की बीमारी का ग्राफ बढ़ता जा रहा है।

भिलाई संयंत्र के साथ–साथ आम नागरिकों का कर्तव्य है कि, हम पर्यावरण के प्रति सचेत हो। अपने आसपास प्रकृति और पर्यावरण को सहेजने में अपने कर्तव्य का पालन करें। शहर और प्रशासन के द्वारा निर्धारित किए गए नियमों का पालन करें। पेड़ पौधों को लगाने के साथ–साथ उनका संरक्षण भी आवश्यक है। प्लास्टिक आदि अपशिष्ट पदार्थों को जलाने से भी वायु प्रदूषित होती है। सामाजिक चेतना और योगदान के बिना प्रकृति को संरक्षित नहीं किया जा सकता।

भिलाई इस्पात संयंत्र पर्यावरण की दृष्टि से समाज और शहर को सुंदर बनाने के लिए प्रयत्नशील है। हम सबको इसका साथ देकर अपने शहर को पर्यावरण मानकों में खरा उतारने का प्रयास करना चाहिए।

डॉ. अजय आर्य
पी. जी. टी.
केन्द्रीय विद्यालय
दुर्ग

**“ हम सबका अब यही सपना,
स्वच्छ भारत हो अपना। ”**

स्वदेश प्रेम

महके चंदन सी सदा मिट्टी मेरे देश की।
बाँधे एक सूत्र में भिन्नता परिवेश की।।

सभी धर्म के लोग यहाँ रहते हैं मिलकर
उपवन की महक बढ़ाते फूल सभी खिलकर।
धरा नदी गगन पर्वत जहाँ पूजे जाते
रक्षा करना प्रकृति की पर्व हमें सिखाते।
बानी गूँजती है, संतों और दरवेश की।
महके चंदन सी सदा मिट्टी मेरे देश की।।

महिमा वेद पुराणों की दुनियाँ ने मानी
रामायण की चौपाई याद मुँह जुबानी।
राम, कृष्ण, गौतम, कबीर राह दिखाते हैं,
नानक, गुरु गोविंद, यीशु ज्ञान सिखाते हैं।
शीश झुकाती दुनियाँ सामने ज्ञानेश की।
महके चंदन सी सदा मिट्टी मेरे देश की।।

भामाएँ ज्ञानदीप घर–घर यहाँ जलाती हैं
यम से भी पति के वो प्राण माँग लाती हैं।
लक्ष्मी दुर्गा दुश्मन के आगे अड़ जाती हैं,
अंजू, सिंधु, साइना स्वर्ण जीत लाती हैं।
आगे बढ़तीं राष्ट्रहित शक्ति बन सर्वेश की।
महके चंदन सी सदा मिट्टी मेरे देश की।।

प्रशांत कुमार तिवारी
अनुभाग अधिकारी
सेल – शाखा विक्रय कार्यालय
भिलाई, छत्तीसगढ़

उज्ज्वल एवं स्वच्छ भारत का निर्माण

स्वच्छ भारत मिशन एक ऐसी योजना है, जो राष्ट्र को स्वच्छता की ओर ले जाती इस योजना की शुरुआत माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा 2 अक्टूबर, 2014 में की गई है ।

स्वच्छ भारत मिशन एक ऐसा अभियान है, जिसमें की शौचालयों को बनवाना, ग्रामीण स्तर पर स्वच्छता को बढ़ावा देना व् सड़कों की साफ़–सफाई करना, इन विषयों पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया है।

स्वच्छता मिशन से जुड़े हुए क्षेत्र हैं –

शहरी क्षेत्र – शहरी स्तर पर आवासीय क्षेत्रों में सामुदायिक शौचालयों को बनवाने की योजना बनाई गई है, जहाँ व्यक्तिगत घरों में शौचालयों की उपलब्धता मुश्किल है, बस स्टेशन, पर्यटन स्थल, रेलवे स्टेशन, बाजार पब्लिक पार्क, ऐसी जगहों पर सार्वजनिक शौचालय बनाए जा रहे हैं ।

ग्रामीण क्षेत्र – ग्रामीण स्तर पर कचरे को जैव उर्वरक और उपयोगी ऊर्जा रूपों में बदलने की एक बड़ी योजना के तहत कार्य किए जा रहे हैं, इस अभियान में गाँव पंचायत, पंचायत समिति और जिला परिषद की भागीदारी शामिल है।

विद्यालय (स्कूल) क्षेत्र – स्वच्छता मिशन को सफल बनाने के लिए स्कूल एक ऐसी जगह है जहाँ बच्चों को प्रारम्भ से ही स्वच्छता को बनाए रखने के लिए जागरूक किया जाता है। स्कूलों में स्वच्छता गतिविधियों को आयोजित करने से, जैसे पोस्टर प्रतियोगिता, वाद विवाद प्रतियोगिता, भाषण, कला आदि से बच्चों में सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है ।

स्वच्छ भारत अभियान केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा चलाया जाता है जिसमें स्कूलों में स्वच्छता मुख्य उद्देश्य है ।

स्वच्छ भारत अभियान के लाभ –

भारत के लोगों के लिए यह बहुत ही आवश्यक है कि, वह भावनात्मक शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक रुप से अच्छा महसूस करें। वास्तविकता में भारत के लोगों में रहन–सहन की स्थिति को उत्तम बनाना अति आवश्यक है, जो कि, स्वच्छता लाकर शुरू की जा सकती है।

- भारत में खुले शौचालयों को फ्लशिंग शौचालयों में परिवर्तित करने की आवश्यकता है। मैनुअल स्केवेंजिग सिस्टम को समाप्त करना आवश्यक है।
- भारतीय लोगों में व्यवहारिक बदलाव लाने के लिए व्यक्तिगत स्वच्छता और स्वस्थ स्वच्छता के तरीकों के अभ्यास किया जाना चाहिए।
- ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य शिक्षा जैसे जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से समुदायों और पंचायती राज संस्थानों को प्रेरित करके, लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना आवश्यक है।
- सभी प्रदर्शित वस्तुएँ वैज्ञानिक प्रक्रियाओं द्वारा ठोस अपशिष्टों के रिसाइक्लिंग के माध्यम से पुनः उपयोग लायक बनाना आवश्यक है।
- यह बरबाद चीजों को स्थानीय स्तर पर अपशिष्ट निपटान प्रणाली को डिजाइन, निष्पादित और संचालित करने में मदद करता है।

स्वच्छ भारत मिशन के उद्देश्य हैं –

- सामाजिक रूप से देखा जाए तो इस मिशन का उद्देश्य सभी प्रदूषित वस्तुओं का वैज्ञानिक प्रक्रियाओं द्वारा ठोस अपशिष्टों के रिसाइक्लिंग के माध्यम से पुनः उपयोग लायक बनाना है ।
- भारतीय लोगों में भावनात्मकता को जागरूक कर व्यवहारिक बदलाव लाने के लिए व्यक्तिगत स्वच्छता पर बल देना।
- ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों की मानसिकता को बदलना, जिससे कि वे जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाएँ।
- भारतीय लोगों में बौद्धिक स्तर का विकास करना, जिससे लोग मैनुअल स्केवेंजिंग सिस्टम के बारे में जान पायें, शौचालयों को फ्लशिंग शौचालयों में बदलने के लिए प्रेरित हों ।

अंत में मैं यही कहना चाहूंगा कि, ''स्वच्छ भारत मिशन – प्रगति का मंत्र'' है, जिससे हम अपने चारों ओर स्वच्छता की अनुभूति कर सकते हैं यह भारत सरकार द्वारा एक सराहनीय कदम है, हम सभी भारतीय स्वच्छता को अपनाकर निश्चय ही ''उज्ज्वल एवं स्वच्छ'' भारत को प्राप्त कर पायेंगे।

''स्वच्छता का, कर्म अपनाओ,
इसे अपना धर्म बनाओ''

सुमित माथुर
यांत्रिकी अभियंता
राइट्स लिमिटेड, भिलाई

नराकास वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ

नराकास वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ

नराकास वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ

नराकास वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ

स्वच्छ परिवेश में ही स्वच्छ मन

स्वच्छ परिवेश में ही एक स्वच्छ मन का सृजन होता है। यह स्वच्छ मन ही व्यापक बौद्धिक शक्ति और आत्मीय चेतना बल का मूल केन्द्र होता है। ये स्वच्छ मन ही पर्यावरण प्रबंधन और सामाजिक विकास की बेहतर स्थिति को ध्यान में रखते हुए ही सांसारिक भौतिक सुखों का लाभ लेता है। स्वच्छता का लाभ अनेक सुखों का लाभ लेता है। स्वच्छता का लाभ अनेक रुपों में हर किसी को हमेशा मिलता है। तभी तो हर कालखंड में इस जगत के महामानवों ने स्वच्छता को लेकर वकालत की। बुद्व से लेकर गांधी तक, आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक सबने स्वच्छ पर्यावरण, और इस स्वच्छ पर्यावरण से स्वच्छ मन प्राप्त करने के लिए अनेक गंभीर प्रयास किए जिससे हमारे समाज में एक नई सभ्यताओं का विकास हुआ और ये सभ्यता समाज की हर तरह की प्रगति का आधार बना जैसे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक इत्यादि।

स्वच्छता कार्यक्रम सामाजिक प्रगति में निम्नांकित तरीके से प्रभाव डालती है :–

(1) सामाजिक सहयोग में बढ़ोतरी और मजबूत शक्ति दलों का निर्माण– पर्यावरण स्वच्छता कार्यक्रम के प्रतिपादन में सामूहिक कार्य शक्ति की आवश्यकता होती है। समाज में रहने वाले हर तरह के लोगों के इन सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेने पर उनमें परस्पर सहयोग की भावना जागृत होती है और ये एक सशक्त समाज की पहली मांग होती है और ऐसे ही राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद का उदय होता है और देश को एक एकीकृत मजबूत मानव संसाधनों का एक कार्य बल प्राप्त होता है।

(2) व्यक्तिगत हितों का ह्रास और सामाजिक हितों को प्रोत्साहन – जब समाज के सभी लोगों में परस्पर सहयोग वाला मनोभाव उत्पन्न होता है तो वह अपने व्यक्तिगत हितों का परित्याग करके वह समाज, संगठन और पर्यावरण के हितों के प्रति निष्ठावान हो जाता है। इससे सामाजिक समरसता का बोलबाला दिखाई पड़ता है और अपनेसामाजिक एकीकरण का इस्तेमाल समाज या देश के हर हिस्से सुदृढ़ करने में करता है। पर्यावरण की स्वच्छता और कार्यस्थल पर परस्पर सहयोग मिलने से व्यक्ति अपनी पूरी कार्यक्षमता और ईमानदारी से कार्य करता है। अपनी मेहनत कश शरीर और व्यापक बौद्धिक शक्ति के नये–नये कार्यों और अन्वेषणों इत्यादि का सफलतापूर्वक प्रतिपादन करते हैं। इससे देश में एक प्रतिभाशाली क्षेत्र का सृजन होता है।

(3) प्राकृतिक संसाधनों का सदुपयोग और जीव जन्तुओं को उनका नैतिक अधिकार प्राप्त होना–पर्यावरण स्वच्छता के क्रम में पर्यावरण के मूल मापदंडों का विशेष ध्यान रखा जाता है। जिससे जैविक विविधता की चक्रीय गतिविधि में कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। इससे प्राणी जगत के समस्त प्राणियों में निर्भय होकर अपने प्राकृतिक आवास में स्वतंत्र मन से रहने का भाव आता है और पर्यावरण के गुणधर्मों में अपने हिस्से की बढ़ोत्तरी करने का हर संभव प्रयास करता है। इससे प्राकृतिक आपदायें विलुप्त होती प्रजातियां और अन्य अवांछित घटनाएं के घटित होने की संभावनाएं कम हो जाती है। समाज को चरणबद्ध तरीके से प्रकृति के सारे संसाधनों का सदुपयोग का अवसर मिलता है। ये संसाधन समाज की उन्नति, अवसर, अन्वेषण इत्यादि के द्वार खोलते हैं जिससे एक श्रेष्ठ समाज, एक आदर्श समाज का सृजन होता हैं जिससे हर एक वस्तु या चीजों के महत्व का बखूबी ध्यान रखा जाता है।

(4) स्वच्छता से रोग, दुर्गुण, गंदगी, अवसाद अवगुणों का अंत और निरोगी तन, शुद्धता, नवीनता और सृजनता का उदय–स्वच्छ परिवेश में हर प्राकृतिक अवयव शुद्ध रूप से मिलते हैं। ये शुद्ध रूप में बड़े अनमोल और विलक्षण गुणों से युक्त होते हैं जिसके बिना संपूर्ण जीवन की कल्पना तक नहीं की जा सकती। परन्तु अशुद्ध रूप से यह काफी हानिकारक होती है। जिसके परिणामस्वरूप समाज में रोगी काया, अवसाद मन और दुर्गुण हाव भाव का जमावड़ा हो जाता है। परन्तु इसके ठीक उलट साफ और विशुद्ध संसाधन, हमें और समाज को हर समय एक नवीन चेतना का बोध कराता है। जिससे व्यक्ति अपने संपूर्ण शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक शक्ति का पूरी क्षमता से उपयोग कर समाज को तरक्की के रास्ते पर ले जाने वाले तमाम गतिविधियों में अपनी अहम भूमिका निभाता है। जिससे समाज के दूसरे व्यक्ति में भी कुछ अच्छा करने की ललक पैदा होती है और ऐसे में एक स्वच्छ वातावरण में एक ऐसे निष्ठावान व्यक्तियों की फौज खड़ी हो जाती है जो समाज के लिए बहुत कुछ अच्छा कर जाती है और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणादायक बन जाते हैं।

(5) स्वच्छ परिवेश ही है प्रगति का पर्याय – हर एक सामाजिक प्रणाली को स्वच्छ परिवेश में ही रहने, बसने, काम करने इत्यादि की इच्छा होती है। स्वच्छ वातावरण में स्वच्छ तन से अपना शत प्रतिशत देने से प्रगति के नए अध्याय लिखे जाते हैं। एक समय में सिंगापुर देश गरीबी, गंदगी, भूखमरी इत्यादि का केन्द्र हुआ करता था। परन्तु वहां के बुद्धिजीवियों ने अपने देश को स्वच्छ और समृद्ध देश का पर्याय बना दिया। जहां स्वच्छता होती है वहां प्रगति होती है। इसी

महत्ता को स्वीकारते हुए ही हमारे देश के नीति निर्माताओं ने स्वच्छ भारत मिशन कार्यक्रम की शुरूआत की। जिसे पूरे देश में निर्विरोध रुप से समर्थन प्राप्त हुआ और सबने इसके प्रति अपनी प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया जिससे कई शहर, कस्बे रातों रात साफ और सुंदर दिखने लगे। वहां के लोग एक साफ और सुंदर मन से हर समय अपनी और देश की प्रगति में अपना योगदान दे रहे हैं। इसी की सफलता और जरूरतों को ध्यान में रखते हुए पहले से अधिक प्रभावशाली रुप से स्वच्छ भारत मिशन 2.0 की शुरूआत हुई है। इससे नागरिकों में नई जागरूता और ऊर्जा का संचार हुआ। फिर भी हमें अनेक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अनेक गंभीर प्रयास करने पड़ेंगे।

हमें अपने धैर्य और कर्तव्य पालन से स्वच्छ भारत मिशन के कार्यक्रम को अक्षरशः सफल बनाना जिससे पूरी दुनिया में हमारे भारत का नाम सबसे साफ और समृद्ध देशों में पहली पंक्ति में गिना जाए। आधुनिकीकरण और व्यापक बौद्धिक शक्ति के कारण ये लक्ष्य पाना ज्यादा कठिन नहीं है। फिर हम गर्व से अपनी नई पीढ़ी को साफ, सुंदर, समृद्ध और वैभवशाली भारत में स्वागत को आतुर रहेंगे और कहेंगे –

" साफ, सुंदर और समृद्ध भारत में आपका स्वागत है।
आपका अभिनंदन है। "

आदित्य कुमार
ओ.सी.टी.
(शक्ति एवं वायु प्रवाह केन्द्र–2)
भिलाई इस्पात संयंत्र

श्रम ही समाधान

श्रम से ही श्रम के कष्टों को, खुद यहाँ मिटाया जाता है ।
उत्पादन बाधित न हो, इस पर ध्यान लगाया जाता है ।।

यहाँ कर्मवीरों की निष्ठा में, विश्वास जताया जाता है ।
गुणवत्ता से इस्पात बना कर, कीर्तिमान बनाया जाता है ।।
सेल भिलाई का देश विदेश में, जब परचम लहराता है ।
श्रम से ही श्रम के कष्टों को, तब यहाँ मिटाया जाता है ।।

अनवरत हो रहे उत्पादन को, गतिमान बना रख पाते हैं ।
हम मांगो के अनुरूप विविध, इस्पात सदा ही बनाते हैं ।।
मेहनत के खून पसीने से, जब समाधान मिल जाता है ।
श्रम से ही श्रम के कष्टों को, खुद यहाँ मिटाया जाता है ।।

हर्षित होंगे घर में अब सारे, दिल में अरमान सजाते हैं ।
बूढ़ी माँ को मिल रही चिकित्सा, बच्चे शिक्षा में आगे हैं ।।
जो मिला नहीं अपने जीवन में, बच्चों से आस लगाता है ।
श्रम से ही श्रम के कष्टों को, खुद यहाँ भुलाया जाता है ।।

के. के. नशीने
सी.एम.ओ.सी.टी.
(एल.डी.सी.पी.)
भिलाई इस्पात संयंत्र

मुझ में उठा तूफान कोई

यह शोर है तेरी लहरों का
या मुझ में उठा तूफान कोई,
जो हलचल मची है यहाँ
उसकी कहाँ है जुबान कोई।

किनारे पर बिखरी हैं बूँदें
या मेरी आँखों से दास्ताँ कोई,
क्यों लगे तू अपना सा मुझे
क्या तुझसे है मेरा वास्ता कोई।

उमड़ रहा है एक सैलाब
जैसे मेरे अंदर कोई,
तुझ में डूबी हुई हूँ मैं
या मुझ में है समंदर कोई।

बेचैन सा तू भी दिख रहा है
शायद मुझ में भी छाया खुमार है,
करार मेरे दिल का गया
कि तू भी बेकरार है।

तेरा नशा है जादू सा
जो हटती नहीं तुझसे नज़र,
तुझ में ही खो जाऊँ कहीं
हो जाऊँ मैं सबसे बेख़बर।

शुभ्रा सिन्हा
बैंक ऑफ बड़ौदा,
क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्ग

पत्नी के विरुद्ध : एक आवाज़ (हास्य व्यंग्य)

पुरानी फिल्मों में विवाह का सीन आते ही लोग समझ जाते थे कि, बस अब मनोरंजन खत्म क्योंकि "कहानी घर–घर की" से कौन वाकिफ नहीं है। पुरानी फिल्मों में विवाह के सीन के साथ ही THE END लिख दिया जाता था। अब यह हर समझदार विवाहित व्यक्ति समझ सकता है कि, उन फिल्मों में ऐसा क्यों लिखा होता था। शादी के साथ ही आदमी की खुशी और उसकी स्वतंत्रता का THE END हो जाता है।

मेरे एक मित्र ने बताया था कि, विवाहित लोग ही अपनी शादी से बचने के लिये फ़िल्म देखने जाते थे। अब उन्हें भी शादी का ड्रामा ही देखना हो, तो वह तो घर में देखा जा सकता है। पुराने फ़िल्मकार अपने दर्शकों की पीड़ा को दिल से समझते थे, बस इसीलिये वे उन पर अत्याचार नहीं करते थे। शादी शुरू फ़िल्म खत्म। एक जगह किसी पुराने किले में एक सूक्ति लिखी थी – शादियाँ स्वर्ग में तय होतीं है। मेरे मित्र को वह वाक्य अधूरा लगा। उसने चाक उठाया और आगे लिखा– और निभाई नरक में जाती है।

मेरे एक आर्यसमाजी मित्र हैं, वे सामाजिक परिवर्तन, सुधार, बदलाव, आधुनिकता आदि की पुरजोर वकालत करते हैं। आर्यसमाजी होने के नाते तीक्ष्ण ही सही, तर्क पर तर्क करते हैं। हर बात उनकी बेबाक होती है। एक दिन मैंने पूछा – विवाह में बैंड क्यों बजाया जाता है? उन्होंने हँसते हुए कहा – यह रस्म आदमी को अपनी भावी जीवन के लिए तैयार करती है। बैंड बाजे से जब जीवन शुरू होता है, तो वह अपना बैंड बजवाने के लिये सहर्ष तैयार रहता है। किसी ने प्रेम के अनेक रूपों की चर्चा करते हुए लिखा है –जो आँख बंद होने तक प्यार करे वह माँ, जो आँख बंद करके प्यार करे वह प्रेमिका और जो आँखें दिखा–दिखा कर प्यार करे वह पत्नी।

आजकल का युग कैरियर प्रधान युग है। जिसका कोई कैरियर नहीं है, वह कहीं का नहीं रहता। सब आपाधापी में लगे रहते हैं। बच्चे मुँह हाथ धोए बगैर, बिना नित्यकर्म सुबह पाँच बजे से ट्यूशन वाली गलियों में चक्कर लगाने लगते हैं। मैं एक बार रविशंकर विश्वद्यालय के प्रांगण में था। वहाँ मैंने दो युवतियों को इसी विषय पर चर्चा करते हुए सुना। बड़ी गंभीर चर्चा हो रही थी। एक ने बताया कि, वह प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रही है। उसका सपना प्रशासनिक अधिकारी बनने का था।

जब उसने अपनी सहेली से वही सवाल किया तो उसने कहा – प्रतियोगी परीक्षा में बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। मैं तो सोच रही हूँ कि, कोई अच्छा सा लड़का देखकर उसके गले पड़ जाऊँ। लड़के का कैरियर बना होगा तो अपना तो अपने आप बन जायेगा। मुझे यह बात सुनकर उस पुराने जुमले के रचयिता पर हँसी आई, जिसने लिखा था सफलता का कोई शार्टकट नहीं होता।

हमारा समाज पुरुष प्रधान समाज माना जाता है, यह बात और है कि, वह दौर चला गया, जब 1993 में दिल्ली गया तो दिल्ली की चकाचौंध ने मुझे बहुत ही प्रभावित किया था। वहाँ की एक बात मैं कभी नहीं भूल सकता। दिल्ली में पत्नी–पीडितों का भी एक संगठन है, यह जानकर मुझे आश्चर्य हुआ या अफ़सोस, यह तय करना आज बड़ा मुश्किल है। वहाँ मैंने एक होर्डिंग पढ़ा था, जिसमें लिखा था– पत्नी सताए तो हमें बताएँ। आदमी की स्थिति महानगरों में और अधिक दयनीय है।

हमारे घर के आसपास एक विवाहित जोड़ा रहने आया था। वे रोज साथ–साथ हँसते खेलते, घूमते यह देखकर विवाहित लोगों को बड़ी परेशानी होती। भला कोई किसी को सुखी कैसे देखे? पर सबने सब्र रखा था। सब जानते थे कि, चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात। पर यह चार दिन बड़े ही लंबे हो रहे थे। इतने लम्बे कि, बीतने का नाम ही नहीं ले रहे थे। उस घर से अब भी ठहाकों की आवाज आती थी। कभी पति के ठहाके गूँजते, तो कभी पत्नी के।

जब पड़ोसियों के सब्र का बाँध टूटा, तो सब इकठ्ठा होकर उनका हाल–चाल पूछने गए। यह तो जमाने की फ़ितरत है कि, परेशानी में कोई हाल पूछने की आवश्यकता नहीं समझता और पड़ोसी की मुस्कराहट को झेल नहीं पाता और पहुँच ही जाता है किसी न किसी बहाने। लोग पहुँचे सबको पति–पत्नी की मुस्कान खटक रही थी। अब इनसे रहा नहीं गया। औपचारिकता के बाद पूछ ही डाला। बड़ी अच्छी जोड़ी है। इतने दिनों बाद भी कोई बर्तन नहीं खटका। कोई झगड़ा नहीं, कोई शोरगुल नहीं। हमेशा ठहाकों की आवाज़ आती रहती है। कैसे जीते हो? लड़ते भी हो कि नहीं?

असल में उन्हें किसी की अच्छाई से तो कुछ लेना देना था नहीं। लोग तो इस फिराक में थे कि, अगर इन्हें लड़ना न आता हो तो हम इन्हें लड़ना सिखा दें। इतना परोपकारी स्वभाव तो सबका होता है, भला इस नेक काम के भी क्या पैसे लेने। तभी किसी ने पूछा – भाई साहब आप लड़ते नहीं है, हमेशा ठहाकों की आवाज़ आती रहती है।

पति बोला– हम तो खूब लड़ते है। जब भी झगड़ा होता है, पत्नी बेलन ले के दौड़ाती है। फिर निशाना लगाती है, निशाना लग जाता है तो पत्नी ठहाका लगाती है। निशाना चूक जाता है, तो मैं ठहाका लगाता हूँ। यह ठहाकों का सिलसिला बस ऐसे ही चलता रहता है। कभी ये खुश, तो कभी मैं खुश। खुशियों और ठहाकों की इस फिलॉसफ़ी को सुनकर लोग बस इतना ही बोले – कहानी घर–घर की।

इस प्रसंग को यहाँ लिखने का बस इतना सा आशय है कि, अगर कोई विवाहित जोड़ा हँसता–खेलता दिख जाए तो अधिक परेशान न हों, न जाने कौन सी फिलॉसफ़ी काम कर रही हो, समझना मुश्किल है। अटल

सत्य तो बस इतना ही है कि, सुख शान्ति और शादी का हमेशा से छत्तीस का आँकड़ा रहा है।

मैंने कहीं पढ़ा है कि, एक विवाहित महिला डॉक्टर के पास पहुँची। बीमारी अधिक सीरियस नहीं थी, सो डॉक्टर ने आराम की सलाह दी और जाने को कहा। महिला से रहा नहीं गया। उसने सोचा कि, न तो इस डॉक्टर ने मेरी नब्ज़ ही चेक की है, और न ही जीभ देखी है। यह मेरा कैसे इलाज कर रहा है। उसने अपनी जीभ निकाली और बोली जरा जीभ तो देख लीजिए।

डॉक्टर ने कहा उसे भी आराम की आवश्यकता है। उस डॉक्टर को विस्तार से समझाना पड़ा कि, जब आपकी जीभ आराम करेगी तो आपके पति भी आराम करेंगें, पति आराम करेंगें तो बच्चे आराम करेंगें। आपकी जीभ का आराम करना बहुत ही आवश्यक है। इसके बिना सबका आराम हराम हो गया है।

साधारणतः भारतीय नारी आराम की दुश्मन होती है। इस दुश्मनी को महिलाएँ दो तरह से निभाती हैं। कुछ अपने आराम की हत्या करके आनंदित होती हैं, तो कुछ पति के आराम का मर्डर करके जश्न मनाती हैं। यह सिलसिला इतना लंबा चलता है कि, मर्डर वन, टू, थ्री का अंतहीन सिलसिला चलता रहता है। वैसे साधारणतः भारतीय नारी की प्रजाति में दूसरी किस्म की नारी बहुतायत में मिलती हैं।

मुझसे किसी ने पूछा कि, ये बताइए पत्नी साधारणतः हाउस वाइफ होती है, फिर भी पति की अपेक्षा पत्नी का पर्स बड़ा क्यों होता है? मैंने कहा – सीधी सी बात है, पत्नी का पर्स हमेशा से इतना बड़ा रहा है कि, उस पर्स में पति का पर्स आसानी से समा सके। पति को क्या चाहिए दो रूखी–सूखी रोटी और उस पर रखा पत्नी की शिकायतों का मक्खन, बस यहीं आकर आदमी की जद्दोजहद खत्म हो जाती है।

दूसरी ओर पत्नी की आवश्यकताएँ कभी स्थिर नहीं रहतीं, वह शेयर मार्केट के सेंसेक्स की भाँति ऊपर नीचे होती रहती हैं। हमारे देश में जैसे आपदा से निपटने के लिये फंड होता है, ऐसे ही घर–गृहस्थी में इमरजेंसी फंड को भी महत्त्व दिया गया है। यह बात और है कि, यह फंड हमेशा की तरह पत्नी–फंड के रूप में ही प्रयोग में लाया गया है।

एक आदर्श पति हमेशा अपने पड़ोस की नज़र से पत्नी को बचाए रखना चाहता है। लोग सोचते हैं –शायद यह भरोसे या फिर किसी और तरह की सावधानी है, पर यह सिर्फ एक 'मनी–गेम' है। पत्नी की नज़र किसी भी पड़ोसन पर पड़ने से पहले उसकी साड़ी पर पड़ती है और जहाँ साड़ी पर पड़ी नज़र कि, मानो घर का सेंसेक्स चारों खाने चित्त। जब तक वह नई साड़ी घर पर ला नहीं दी जाती, तब तक पत्नी के आग्नेय स्वरूप को पति कैसे झेलता है, यह कोई भुक्तभोगी पति ही जानता है।

कालिदास ने प्रकृति के बारे में लिखा है कि – प्रकृति प्रतिपल बदलती है, यही उसके अप्रतिम सौंदर्य की मूल आत्मा है। प्रकृति प्रतिपल बदलती है कि, नहीं मैं नहीं जानता, किन्तु नई साड़ी के अभाव में पत्नी के सुर्ख स्वरूप को बदलते मैंने देखा है। पत्नी साड़ी के अभाव में क्षण भर में कैसे चन्द्रमुखी से सूर्यमुखी और फिर सूर्यमुखी से ज्वालामुखी बनती है, यह हर पति जानता है। इतनी जल्दी तो गिरगिट के रंग नहीं बदलते जितनी जल्दी पत्नी के तेवर बदल जाते हैं। इतना दबाव बंगाल की खाड़ी में आए तूफ़ान में नहीं होता, जितना पत्नी अपने पतिदेव के मष्तिष्क में बना देती है।

बंगाल की खाड़ी के तूफ़ान से बचाने में सरकार सहायता करती है, किन्तु पत्नी के आक्रोश से बचाने के लिए आजतक कोई सरकारी योजना लांच नहीं की गई है। राज की बात तो यह भी है कि, जितने भी विनाशकारी तूफ़ान देश या दुनिया में आए हैं उन सबका नाम महिला किरदारों के नाम से ही जाना जाता है– कभी कैटरीना तो कभी करीना।

तूफान खड़ा करके बवंडर मचाना महिलाओं के ही बूते का काम है। जब तक कुँवारे, देश की बागडोर संभालेंगे, तब तक ऐसी किसी योजना की आशा भी नहीं की जा सकती। तूफान को महिलाओं का नाम देने का आविष्कार भी मुझे लगता है कि, किसी विवाहित वैज्ञानिक ने ही किया होगा। विवाहित आदमी ही जानता है कि, घर में तूफान लाने वाला कौन होता है ।

एक बार मेरी श्रीमती जी ने मकान बदलने का निश्चय किया। बहुत कहने बताने पर भी मुझे तो उसका कारण पता ही नहीं चला मैंने सोचा चलो घर तो उसकी ही पसंद से ढूंढा जाए। बड़ी मुश्किल हुई, मेम साहब को कोई घर ही पसंद न आए। सारा जग छान मारने के बाद एक घर पर मेरी नज़र टिकी। मैंने फायनल करने की बात सोची। पत्नी महोदया राज़ी ही न हों।

मैंने साहस जुटाकर पूछ ही लिया, आखिर बात क्या है। बोलीं–इसकी लोकेशन अच्छी नहीं है। मैंने कहा– पॉश इलाका है, ए.टी.एम. है, पेट्रोल पम्प है, दुकानें हैं और क्या चाहिए? पहले तो वह चुप रहीं फिर बोलीं –गुपचुप और ब्यूटी पार्लर के बगैर कोई इलाका सम्भ्रांत कैसे हो सकता है? यहाँ से ब्यूटी पार्लर दो कि.मी. की दूरी पर है। कभी–कभी इमरजेंसी में भी तो तैयार होना पड़ता है। यह कैसी इमरजेंसी है? ऐसी इमरजेंसी तो न तो तोराबोरा की पहाड़ी पर ही आई थी और न ही 1975 में। मुझे आज पहली बार समझ में आया कि, सुनसान इलाके में खुले ब्यूटी पार्लरों के आस–पास तेजी से घनी आबादी कैसे बस जाती है। मैंने मन ही मन कहा कि, जय जय गुपचुप देवा, जय ब्यूटी पार्लर देवी। (वैसे भी पति नामक प्राणी को मन ही मन में बोलने की ही इजाज़त होती है)।

एक बार एक पत्नी अपने पति का इलाज कराने पहुँची, यह बात और है कि, ऐसा सौभाग्य किसी किसी पति को ही मिलता है, साधारणतः सभी पति भगवान भरोसे होते हैं या फिर अपने तथाकथित सौभाग्य से ही अच्छे हो जाते हैं। पत्नी ने डॉक्टर को बताया– मेरे पति को रात में

बोलने की बीमारी है। डॉक्टर अनुभवी था या यों कहिए कि, विवाहित था।

उसने तुरन्त पत्नी को सलाह दी, आप इन्हें दिन में बोलने का मौका दें, ये ठीक हो जाएंगे। समय के साथ हर विवाहित पति को नींद में बोलने की बीमारी हो ही जाती है, जिसे दिन में बोलने की इजाज़त नहीं होगी वह क्या करेगा। रात में ही बोलेगा। मेरे एक मित्र ने बताया कि, वैसे किसी पति को रात में बोलने की बीमारी होती नहीं है। ये बेचारे पति बीमारी के बहाने घर में थोड़ा बहुत कुछ बोल तो लेते हैं। उसने खुद अपना राज़ बताया कि, कभी अपनी पत्नी पर गुस्सा करने का साहस नहीं कर पाया। नींद का बहाना बनाकर कभी–कभी अपनी शिकायत पत्नी के पास दर्ज़ करा देता हूँ।

मुझे जब से इस नींद में बोलने या बड़बड़ाने की बीमारी का पता चला है। इस बीमारी की शरण में चला गया हूँ। वैसे तो नींद में भी हिम्मत नहीं होती, पर साहस करके नींद में बोलने के बहाने कभी–कभी अपनी पत्नी पर गुस्सा हो जाता हूँ, भला बुरा कह देता हूँ। यह बीमारी विवाहित लोगों के लिए रामबाण है।

पति भी बड़ा निरीह और दयनीय प्राणी है, पशुओं की तरह खटता है। ऑफिस में बॉस की सुनता है, घर में पत्नी का हुक्म बजाता है। रही सही कसर बच्चे पेट और पीठ पर कूदकर पूरा कर देते हैं। मैंने आज तक किसी पत्नी को न तो बड़बड़ाते ही देखा है, और न ही किसी पत्नी को नींद में बोलने की बीमारी होते देखा है। जो दिन भर बोलती हो, वो रातभर चैन की बंशी तो बजाएंगी ही। दुनिया का आश्चर्यजनक सत्य है कि, आज तक शायद ही किसी महिला को नींद में बोलने की बीमारी हुई हो।

एक बार मेरे मित्र ने पूछा, आपको मालूम है कि, दामाद को ससुराल में इतनी ज्यादा इज्ज़त क्यों मिलती है? हकीकत यह है कि, वह पूछना नहीं बताना चाह रहा था। सो मेरे कुछ कहने से पहले उसने उत्तर भी दे दिया। ससुराल में दामाद की इज्ज़त करने का कारण यह है कि, वह सब जानते हैं कि, यही वह महान व्यक्ति है, जिसने इस घर के तूफ़ान को संभाल रखा है। जब तक इसकी खातिरदारी होती रहेगी तूफान शांत रहेगा जैसे ही इसकी नज़र फिरेगी तूफान महाभारत के ब्रह्मास्त्र की भांति वापस लौट सकता है ।

पति इस दुनिया का विचित्र प्राणी है,जो काकरोच और छिपकली को मसलने की कूबत रखता हुआ भी काकरोच से डरने वाली पत्नी से डरता है। मेरी समझ में नहीं आता कि, काकरोच और छिपकली से डरने वाली महिला पति के सामने शेरनी कैसे बन जाती है।

वैसे मेरे इस व्यंग्य लेख को पढकर कोई पति यह वहम न पाले कि, मुझे पत्नी के खिलाफ अपनी आवाज़ बुलन्द करने में कोई भय नहीं हो रहा है। वैसे एक राज की बात बताऊँ; यह लेख बंद कमरे में लिहाफ के अंदर छिपकर लिखा है। मैं भी दुनियाँ के आम पतियों की तरह पत्नीभीरु पति हूँ। मेरी राय है कि, दुनियाँ के सभी पति इस व्यंग्य को पढ़ें, मगर पत्नी की नज़र से बचकर। किसी भी अप्रिय घटना के लिए लेखक जिम्मेदार नहीं होगा। वैसे पढ़ने से पहले अपनी सुरक्षा के लिए पाठक पतियों को किसी न किसी पत्नी पीड़ित संगठन का सदस्य अवश्य बन जाना चाहिए। वैसे यह सब जानते हैं कि, इन संगठनों पर देश के महिला संगठन ज्यादा भारी पड़ते हैं।

पत्नी पीड़ित संगठन ने किसी के लिए पीड़ाहारी बाम का काम नहीं किया है। पुनरपि एक दूसरे की पीड़ा को देखने, समझने या सुनने से पीड़ा सहने की ताकत तो बढ़ती ही है।

मनु ने कहीं लिखा है कि, घर में खुशियाँ तभी तक सुरक्षित रहती हैं, जब तक घर में स्त्री प्रसन्न रहती है। इसका एक अर्थ यह है कि घर में स्त्री की खुशी को ही खुशी माना गया है। पुरुषों की खुशी की परवाह तो संविधान के आदि निर्माता मनु ने ही नहीं की, तो किसी और को क्या दोष देना। इसका दूसरा निहितार्थ यह भी है कि, अगर आप अपनी खुशियों के आगे महिलाओं विशेषकर पत्नी के सुख को नज़रअंदाज़ करोगे तो आपकी खुशियाँ चंद दिनों की ही मेहमान हैं। घर की खुशी के ताले की चाबी हमेशा से पत्नी के पास ही रही है ।

कल विद्यालय में एक अनौपचारिक बैठक का आयोजन किया गया था। अवसर था एक शिक्षिका ने अपने दाम्पत्य जीवन का एक वर्ष बिना किसी दुःखद घटना के काट लिया था। सभी उन्हें बधाई देने लगे। सुखी दाम्पत्य जीवन की विधियों पर लोग अपने अपने विचार प्रकट करने लगे। मेरे एक भुक्तभोगी अथवा विवाहित मित्र ने कहा कि, सुखी दाम्पत्य जीवन पर बोलना छ्लावा मात्र है। सुखी जीवन का पहला सोपान तो यह है कि, दाम्पत्य जीवन का आरंभ ही नहीं किया जाए। दूसरा दाम्पत्य जीवन, जीवन ही रह जाए तो बड़ी बात है। दांपत्य जीवन, जीवन कम और मरण ज्यादा लगता है। कुछ ने कहा कि, दाम्पत्य जीवन के आगे सुखी शब्द लगाने से कुँवारेपन का अहसास होता है। यह विषय के साथ न्याय नहीं है ।

सारे नियम कानून आजकल महिलाओं की सुरक्षा के लिए ही बनाए जा रहे हैं। कलयुग सचमुच स्त्रियों का युग है। वैसे सभी पतियों को यह सच स्वीकार कर लेना चाहिए कि, सदियों से देवी दुर्गा शेर पर सवार रही है, उसे हम जैसे दुर्बल, निरीह प्राणी पर सवार होने से कौन रोक सकता है।

डॉ. अजय आर्य
पी.जी.टी.
केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग

पवित्रता और शुद्धि - मुख्य उद्देश्य

प्रस्तावना –

स्वच्छता का मतलब क्या है? स्वच्छता क्या होती है? यदि इस विषय पर गौर से विचार करें, तो हम पाते हैं कि निरंतर प्रयोग में आने से वातावरण के प्रभाव से स्थान मलिन होता रहता है। धूल, पानी, धूप, कूड़ा–करकट की पर्त साफ करना, धोना, मैला और गंदगी को हटाना ही स्वच्छता कही जाती है। अपने घरों, गलियों, नालियों, वस्त्रों शरीर और यहाँ तक कि अपने मोहल्लों तथा नगरों को स्वच्छ रखना हम सभी का दायित्व है। स्वच्छता न केवल हमारे घर, सड़क और मोहल्ला तक के लिए ही ज़रूरी नहीं होती है, यह देश और राष्ट्र की आवश्यकता होती है, इससे न केवल हमारा घर–आँगन स्वच्छ रहेगा, अपितु पूरा देश भी स्वच्छ रहेगा। इसी को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा ''स्वच्छ भारत अभियान'' जो कि हमारे देश के प्रत्येक गाँव और शहर में प्रारंभ किया गया है।

स्वच्छ भारत अभियान का लक्ष्य :–

''स्वच्छ भारत अभियान'' एक राष्ट्रस्तरीय अभियान है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी हमेशा स्वच्छ भारत का सपना देखते थे, वह चाहते थे कि हमारा देश भी साफ–सुथरा रहे। गांधी जी की 145 वीं जयंती के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस अभियान के आरंभ की घोषणा की तथा प्रधानमंत्री जी ने 2 अक्टूबर, 2014 के दिन सर्वप्रथम महात्मा गांधी जी को राजघाट पर श्रद्धांजलि अर्पित की और फिर नई दिल्ली में स्थित बाल्मीकि बस्ती में जाकर झाड़ू लगाई। इसके बाद श्री मोदी जी ने जनपद जाकर इस अभियान की शुरूआत की और सभी नागरिकों से ''स्वच्छ भारत अभियान'' में भाग लेने और इसे सफल बनाने की अपील की। श्री मोदी जी ने अपने भाषणों में स्वच्छता के प्रति देश के नागरिकों को जागरूक करने का प्रयास किया। श्री मोदी जी ने कहा गांधी जी ने आज़ादी से पहले नारा दिया था ''क्विट इंडिया, क्लीन इंडिया ''

आजादी की लड़ाई में उनका साथ देकर देशवासियों ने ''क्वीट इंडिया'' के सपने को तो साकार कर दिया लेकिन अभी उनका ''क्लीन इंडिया'' का सपना अधूरा ही है। अब समय आ गया है कि, हम सब भारतवासी अपनी मातृभूमि को स्वच्छ बनाने का प्रण करें।

वर्तमान समय में स्वच्छता को लेकर भारत की स्थिति –

केन्द्र सरकार और प्रधानमंत्री की ''स्वच्छ भारत अभियान'' की संकल्पना अच्छी है तथा इस दिशा में उनकी ओर से किए गए आरंभिक प्रयास भी सराहनीय है, पहले पूरी दुनिया में भारत की छवि एक गंदे देश के रुप में थी। कुछ वर्ष पहले ही हमारे पड़ोसी देश चीन के कई ब्लागों पर गंगा में तैरती लाशों और भारतीय सड़कों पर पड़े ढेर सारे कूड़ेकरकट की तस्वीर छपी थी।

आज भारत के कई बड़े–बड़े शहर स्वच्छता में ऐसे हो गए हैं कि, जहाँ आपको ढूंढने पर भी कचरा या गंदगी नहीं मिलेगी।

आज हर शहर में सड़कों पर गीले और सूखे कचरे का अलग–अलग कूड़ेदान है, हर जगह महिला एवं पुरूष का सार्वजनिक शौचालय है। इसका उदाहरण है भारत के मध्यप्रदेश राज्य का सबसे बड़ा शहर इंदौर जो कि लगातार पाँच वर्षों से स्वच्छ भारत का ''स्मार्ट सिटी'' का खिताब जीत रहा है।

स्वच्छता का महत्व –

यह सभी बातें और तथ्य हमें ये सोचने पर मजबूर करते हैं कि, हम भारतीय साफ–सफाई के मामले में भी पिछड़े हुए क्यों हैं? बल्कि हम उस समृद्धि और गौरवशाली भारतीय संस्कृति के अनुयायी हैं जिसका मुख्य उद्देश्य सदा ''पवित्रता और शुद्धि'' रहा है, यह सही है कि, चरित्र एवं तन की शुद्धि और पवित्रता बहुत आवश्यक है, लेकिन बाहर की सफाई भी उतनी ही आवश्यक है। जिस प्रकार स्वच्छ परिवेश का प्रतिकूल प्रभाव हमारे मन मस्तिष्क पर पड़ता है उसी प्रकार एक स्वच्छ और सुंदर व्यक्तित्व का विकास भी स्वच्छ और पवित्र परिवेश में ही संभव है। अतः अन्तःकरण की शुद्धि का मार्ग बाहरी जगत की शुद्धि और स्वच्छता से होकर ही गुजरता है।

स्वच्छता के प्रकार –

स्वच्छता को हम दो मुख्य प्रकार में देख सकते हैं – व्यक्तिगत स्वच्छता और सार्वजनिक स्वच्छता

व्यक्तिगत स्वच्छता में अपने शरीर को स्नान आदि से स्वच्छ बनाना, घरों में झाड़ू पोंछा करना, स्नान गृह और शौचालय को विसंक्रामक पदार्थों के द्वारा स्वच्छ रखना। घर और घर के बाहर बहने वाली नालियों की सफाई ये सभी व्यक्तिगत स्वच्छता के अंतर्गत आते हैं।

सार्वजनिक स्वच्छता में मोहल्ले और नगर की स्वच्छता आती है, जो प्रायः नगरपालिकाओं और ग्राम पंचायतों पर निर्भर करती है।

सार्वजनिक स्वच्छता भी व्यक्तिगत सहयोग के बिना पूरी नहीं हो सकती।

स्वच्छता से लाभ –

कहा गया है, कि स्वच्छता ईश्वर को भी प्रिय है, हम दीपावली पर अपने

घरों, दुकानों की साफ सफाई करते हैं, रंग रोगन करते हैं सारा कूड़ा करकट बाहर निकालते हैं, ये इसीलिए करते हैं कि दीपावली पर देवागमन होता है, माता लक्ष्मी का आगमन होता है। ईश्वर का कृपा पात्र बनने की दृष्टि से ही नहीं अपितु अपने मानव जीवन को सुखी, सुरक्षित और तनावमुक्त बनाए रखने के लिए भी स्वच्छता आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य भी है। मलिनता अथवा गंदगी न केवल आँखों को बुरी लगती है अपितु इसका हमारे स्वास्थ्य से भी सीधा संबंध है। गंदगी रोगों को जन्म देती है, प्रदूषण की जननी है और हमारी असभ्यता की निशानी है। अतः व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता बनाए रखने में योगदान करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। सार्वजनिक स्वच्छता से व्यक्ति और शासन दोनों लाभान्वित होते हैं। बीमारियाँ न होने से खर्च में कमी आती है तथा स्वास्थ्य सेवाओं पर व्यय होने वाले सरकारी खर्च में भी कमी आती है।

स्वच्छता के प्रति हमारा योगदान –

स्वच्छता केवल प्रशासनिक उपायों के बलबूते नहीं चल सकती। इसमें प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी परम आवश्यक होती है। हम अनेक प्रकार से स्वेच्छा से स्वच्छता में योगदान कर सकते हैं जैसे –

घर का कूड़ा करकट गली अथवा सड़क पर न फेकें उसे कचरा पात्र या कचरा वाहन में ही डालें। कूड़े कचरे को नालियों में न बहाएँ। इससे नालियाँ अवरूद्ध हो जाती है और गंदा पानी सड़कों पर बहने लगता है।

पॉलीथीन का प्रयोग बिल्कुल न करें, ये गंदगी बढ़ाने वाली वस्तु तो है ही, पशुओं के लिए भी घातक है। घरों के शौचालयों की गंदगी नालियों में न बहाएँ। खुले में शौच न करें तथा बच्चों को नालियों या गलियों में शौच न कराएँ।

उपसंहार –

प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्वच्छ भारत अभियान चलाया है। इसका प्रचार प्रसार मीडिया के माध्यम से निरंतर किया जा रहा है। अनेक जनप्रतिनिधि अधिकारी, कर्मचारी अभिनेता, अभिनेत्री इसमें भाग ले रहे हैं। जनता को इसमें अपने स्तर पर सहयोग देना चाहिए। इसके साथ गाँव में खुले में शौच करने की प्रथा को समाप्त करने के लिए लोगों को घरों में शौचालय बनवाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसके लिए शासन द्वारा आर्थिक सहायता भी दी जा रही है, इन अभियानों में समाज के प्रत्येक वर्ग को पूरा सहयोग करना चाहिए।

विशाल मालवीया
तकनीकी सहायक (यांत्रिकी)
राइट्स लिमिटेड, भिलाई

जब घर छोड़कर जाना पड़ता है

सोई हुई बिटिया को बिन जगाए
सपनों की भोली–भली रंग रंगीली,
दुनियाँ से उसको बिन बुलाए
अपने मन को मनाना पड़ता है।
वो लम्हा बहुत मुश्किल होता है
जब घर छोड़कर जाना पड़ता है।

मिलने वाली खुशियों की खातिर
मिल चुकी खुशियों को ठुकराना पड़ता है।
चंद हसरतों और चाहतों की खातिर
अनमने भाव से मन को बहलाना पड़ता है।
वो लम्हा बहुत मुश्किल होता है,
जब घर छोड़कर जाना पड़ता है।

बहुत मासूम दिल को समझाना पड़ता है
अपनों को छोड़कर जाना पड़ता है,
अपने आँसुओं को पीकर भी
चेहरे पर मुस्कान दिखाना पड़ता है।
वो लम्हा बहुत मुश्किल होता है,
जब घर छोड़कर जाना पड़ता है।

ऐसी घड़ी भी आती है कभी–कभी जब
इस मायावी दुनियाँ की उलझी भूलभुलैया में,
घर परिवार से दूर होकर भी
काम में मन लगाना पड़ता है।
वो लम्हा बहुत मुश्किल होता है,
जब घर छोड़कर जाना पड़ता है।

नितिन गोस्वामी
सहायक अधीक्षक
डाक विभाग

**“ जन जन का नारा है,
भारत को स्वच्छ बनाना है। ”**

रूस और यूक्रेन युद्ध का भारतीय अर्थव्यवस्था पर असर

शांति बलपूर्वक नहीं रखी जा सकती, यह केवल समझदारी द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

–अलबर्ट आइन्स्टाइन

मानव सभ्यता के इतिहास में हिंसा व युद्ध लगभग अनिर्वाय रूप से मौजूद रहे हैं। समय के साथ मनुष्य ने इसके दुष्प्रभावों को समझा भी, परंतु अब तक छुटकारा नहीं पा सके हैं। रूस यूक्रेन के बीच युद्ध ने एक बार पुनः मानवीय सभ्यता को शर्मसार कर दिया है। युद्ध का परिणाम चाहे जो भी हो, परंतु एक बात तो पूर्णतः सिद्ध होती है कि, मनुष्य अपने विवेक का प्रयोग नहीं करता है। रूस व यूक्रेन के बीच संघर्ष ने भी बहुत नुकसान किया है, और यह दिन–ब–दिन बढ़ता जा रहा है। इस विवाद से महाशक्तियों के बीच भी जंग छिड़ने का खतरा बढ़ गया है। यह संघर्ष 2014 में शुरू हुआ जिसमें मुख्य रूप से एक तरफ रूस व रूस समर्थक सेनाएँ शामिल थीं और दूसर तरफ यूक्रेन। युद्ध क्रीमिया की स्थिति व डोनबास के कुछ हिस्सों पर केंद्रित है, जिन्हें अंतराष्ट्रीय स्तर पर यूक्रेन के हिस्से के रूप में मान्यता प्राप्त है।

वैश्विक महामारी कोरोना अभी पूरी तरह से समाप्त भी नहीं हुई है। उसके द्वारा विश्व की अर्थव्यवस्था पर जो प्रभाव पड़ा था और उसके पश्चात अर्थव्यवस्था अभी पटरी पर आ रही थी। परंतु उसके दौरान इस युद्ध और संघर्ष के कारण जो आर्थिक प्रवृत्तियाँ है वो भी प्रभावित हुई हैं।

संघर्ष के पीछे कारण– रूस और यूक्रेन के मध्य युद्ध के कई कारण है।

पश्चिमी देशों के लिए बफ़र जोन के रूप में – अमेरिका और यूरोपीय संघ के लिए यूक्रेन रूस और पश्चिमी के बीच एक महत्वपूर्ण बफर है।

अलगाववादी आंदोलन–इन दो देशों के मध्य युद्ध का एक और कारण अलगाववादी आंदोलन भी है। पूर्वी यूक्रेन का डोनबास क्षेत्र (डोनोट्स्क और लुहान्सक क्षेत्र) 2014 से ही रूसी समर्थक अलगाववादी आंदोलन का सामना कर रहा है। यूक्रेन इसके लिए रूस को दोषी ठहराता है। इसके अतिरिक्त रूस ने यूक्रेन से क्रीमिया को ज़ब्त कर लिया था, जो कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पहली बार किसी यूरोपीय देश ने किसी देश के क्षेत्र पर कब्ज़ा कर लिया था।

यूक्रेन की नाटो सदस्यता– यूक्रेन ने नाटो (उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन) से गठबंधन में अपने देश की सदस्यता संबंधी प्रक्रिया में तेजी लाने का आग्रह किया है। रूस ने इस तरह के कदम को "रेड लाइन" घोषित किया है। इसके अतिरिक्त रूस अमेरिका से आश्वासन मांग रहा है कि, यूक्रेन को नाटो में शामिल न किया जाए। हालांकि अमेरिका ऐसा कोई भी आश्वासन देने को तैयार नहीं है। इसने देशों को गतिरोध में छोड़ दिया है। जिससे दसियों हजार रूसी सैनिक यूक्रेन पर आक्रमण करने के लिए तैयार है।

यूरोमैडल आंदोलन–यूरोमैडल (यूरोपीय स्क्वायर) यूक्रेन में प्रदर्शनों और नागरिक अशांति की लहर थी, जो 2013 में शुरू हुई थी। क्योंकि, सरकार यूरोपीय संघ की तुलना में रूस के करीब थी।

शक्ति का संतुलन– जब से सोवियत संघ से अलग हुआ है, रूस और पश्चिमी देशों में इस क्षेत्र में शक्ति संतुलन को अपने पक्ष में रखने के लिए देश में अधिक प्रभाव के लिए संघर्ष किया है।

वर्तमान परिदृश्य – रूस और यूक्रेन के खिलाफ शुरू की गई जंग को करीब नौ–दस महीने का समय पूरा हो गया है। इस जंग में न केवल रूस और यूक्रेन ने अपना बहुत कुछ खोया है, बल्कि पूरी दुनियाँ को भी अच्छा खासा नुकसान उठाना पड़ा है। यूक्रेन इस वक्त लाइफ सपोर्ट सिस्टम पर है। रूसी सैनिकों को भी नुकसान हो रहा है और बाकी दुनियाँ खाने की कमी, बढ़ती महंगाई, परमाणु युद्ध के खतरे की आशंका और इस युद्ध से उत्पन्न अन्य चुनौतियों से जूझ रही है। जिसके जल्दी खत्म होने के कोई आसार नहीं दिखाई देते। रेड क्रॉस ने चेतावनी जारी करते हुए बताया कि यूक्रेन संकट ने पूरी दूनिया के मानवीय व्यवस्था को झटका दिया है और दुनियाँ भर में आपात स्थितियों पर प्रतिक्रिया देने के लिए संगठन की क्षमता पर इसका दीर्घकालिक प्रभाव पड़ सकता है। इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ द रेड क्रॉस एंड रेड क्रिसेंट सोसाइटीज के अध्यक्ष फ्रांसेस्को रोक्का ने अगस्त –22 में कहा है कि – इसमें लोगों को मुश्किल वक्त पर लाकर खड़ा कर दिया है। अगर इस तरह से लड़ाई जारी रही तो –"भोजन और ईंधन की बढ़ती कीमत और गहराते खाद्य संकट का प्रभाव केवल बढ़ता जाएगा।"

इसके अतिरिक्त मौत के असल आँकड़े वास्तव में काफी अधिक होने की संभावना है। लेकिन जो आँकड़े उपलब्ध हैं, उनके अनुसार 24 फरवरी, 2022 को जंग शुरू होने के बाद से 5587 आम नागरिक एवं 7890 लोग घायल हुए हैं। OHCHR के अनुसार अधिकत्तर नागरिकों की मौत रूस के हवाई तोप, और मिसाइल हमलों से हुई है। 22 अगस्त को यूक्रेनी सशस्त्र बलों के कमांडर जनरल वैलेरी जालुज्मी ने बताया है कि, यूक्रेन

में लगभाग 9000 यूक्रेन के सैनिक मारे गये है। अमेरिकी खुफिया जानकारी में बताया गया है कि, यूक्रेन में रूस के लगभाग 15000 सैनिकों की मौत हो गई है और तीन गुना ज्यादा घायल हो गए हैं। सन् 1979 से 1989 तक अफ़गानिस्तान पर कब्जे के दौरान सोवियत संघ के जितने लोगों की मौत हुई, ये आँकड़ा उसी के बराबर है।

रूस यूक्रेन संघर्ष का भारत पर असर –

- तेल की कीमतों पर दबाव।
- केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा लगाए गए कर ।
- केन्द्र पेट्रोलियम पर 32.09 / लीटर और डीजल पर 31.08 / लीटर कर लगता है।
- भारत की तेल ज़रूरतों का 85% आयात।
- गैस, पेंटस, रसायन, सीमेंट, ऑटोमोबाइल, विमानन जैसे कई उद्योगों पर प्रभाव।
- सेमीकन्डक्टर चिप्स का अभाव।
- प्लास्टिक, रेफिन और एपाक्सी एडहेसिव, उर्वरक एवं अन्य पर मुद्रास्फीति का दबाव।
- वैश्विक कीमतों में वृद्धि से भारत के निर्यात पर प्रभाव।
- सरकारी खरीद में गिरावट और FCI के स्टॉक में कमी।
- वनस्पति तेल, पाम तेल और कपास की कीमतों पर प्रभाव।
- निवेश पर प्रभाव।
- भारत में मुद्रास्फ़ीति बढ़ी है जिसके कारण भारतीय अर्थव्यवस्था काफी प्रभावित हुई है।
- इस संकट से स्वच्छ ऊर्जा बाजार को लाभ हो सकता है, क्योंकि फॉसिल फ्यूल और आज की ऊर्जा गैर नवीकरणी स्त्रोतों से संबंधित है। परंतु अब सरकार का रुझान रिन्यूएबल उर्जा के बढ़ाने की तरफ अग्रसर है। अतः हम नवीकरणीय ऊर्जा के स्त्रोतों को बढ़ते देख सकते हैं।

इसके अतिरिक्त भारतीय छात्रों को यूक्रेन से बुलाने का संकट इसके लिए भारत सरकार ने ''मिशन गंगा'' चलाया है। अब तक लगभग 15000 से अधिक भारतीय छात्रों को वापस लाया जा चुका है।

विश्व पर असर – कई यूरोपीय देशों की गैस पाइपलाइनों के माध्यम से रूसी ऊर्जा पर निर्भरता।

- रुसी टैंकों पर प्रतिबंध के चलते आपूर्ति बाधित, तेल कीमतों पर वृद्धि।
- क्रूड तेल + 110–15 / बैरल
- परिवहन– समुद्री नौवहन और रेल यातायात पर प्रभाव
- आपूर्ति श्रृंखला – कारखाने, बंदरगाह और फ्रेट यार्ड बाधित ।
- खाने योग्य तेल, फूड सप्लाई, बढ़ती कीमतें, ऑटोसेक्टर भी इससे प्रभावित हुई है।

भारत का रुख़ –

दिनांक 08.04.2022 को द हिंदू में प्रकाशित "Ukraine and the anatomy of india's neutrality" लेख पर आधारित – भारत अमेरिका द्वारा प्रायोजित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) के प्रस्ताव से भी दूर रहा, जिसमें यूक्रेन के विरुद्ध रूस की आक्रमकता की कड़ी निंदा की गई थी। टी. एस. त्रिमूर्ति UNSC के स्थायी सदस्य हैं। इसके अतिरिक्त यू.एन.एस.सी में रूस के खिलाफ वोटिंग में भारत ने हिस्सा नहीं लिया। भारत ने 2020 के युद्ध विराम 2014 के मिंस्क समझौते व नौरमेडी प्रक्रिया के लिए अपना समर्थन दोहराएगा।

वैश्विक रुख़–अमेरिका यूरोपीय संघ नाटो ने अब तक किसी के ऊपर पुख्ता कदम नहीं उठाया है, केवल आर्थिक बहिष्कार किया है। यूरोपीय संघ और जी–7 विभिन्न प्रकार के समर्थन की पेशकश करते हुए हथियारों, खुफिया, नकदी और रसद की आपूर्ति और यूक्रेनी सैनिकों के प्रशिक्षण से लेकर रूसी अर्थव्यवस्था को अपंग करने के इरादे से गंभीर प्रतिबंध लगाने के लिए कार्रवाई कर रहे हैं। इसके साथ ही अमेरिका के राष्ट्रपति जो बिडेन – जिन्होंने यूक्रेन के साथ जब तक युद्ध चलेगा तब तक साथ खड़े होने की कसम खाई है। इसके अतिरिक्त रूस को कमजोर करना यूक्रेन युद्ध का छिपा हुआ एजेंडा है।

सुझाव – इस परिस्थिति का व्यावहारिक समाधान मिंस्क शांति प्रक्रिया को पुनर्जीवित करने में है। इस प्रकार अमेरिका व अन्य पश्चिमी देश रूस व यूक्रेन के मध्य वार्ता को पुनः आरंभ करने एव सीमावार सापेक्ष शांति बहाली के लिए मिंस्क समझौते के अनुरूप प्रतिबद्धता की पूर्ति के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

ए.एन. सिंह
आंचलिक प्रबंधक
पंजाब एंड सिंध बैंक
अंचल भोपाल

"भारत सरकार का इरादा, सम्पूर्ण स्वच्छता का वादा"

सच्ची राष्ट्रभक्ति

हे वीर जवानों तुम करते रक्षा, सीमाओं पर डटकर,
देते जीवन की कुर्बानी कर्तव्य पथ पर अडिग रहकर।
लौटते तिरंगे से लिपटे, ये कैसी अद्भुत विरक्ति है,
हाँ यही सर्वोच्च उत्सर्ग, यही तुम्हारी सच्ची राष्ट्रभक्ति है।

निष्ठापूर्वक कर्तव्य निभाना, राष्ट्र को उन्नत बनाना,
स्वयं आत्मनिर्भर रहकर, दूसरों को रोज़गार दिलाना,
परिश्रम से स्वयं समृद्ध होकर, एक निर्धन कम करना,
यही हमारी श्रेष्ठ युक्ति है, यह हमारी राष्ट्रभक्ति है।

क्षुधा पीड़ित को भोजन देना, रोगग्रस्त की सेवा करना,
दुखीजनों की पीर देखकर, कभी भी अनदेखी ना करना।
गहरे संकट में फँसे लोगों को, तन–मन–धन से संबल देना,
ऐसी अतुलित हमारी शक्ति है, यह हमारी राष्ट्रभक्ति है।

सास को मातृ समान पूजना, पुत्रवधू को पुत्री सम प्रेम करना,
बचपन में अच्छे संस्कार पिरोकर, अच्छे नागरिक बनाना।
सुंदर भविष्य के लिए बच्चों को उत्तम आचार–विचार देना,
ऐसी समृद्ध संस्कृति है, हाँ यह हमारी राष्ट्रभक्ति है।

सड़क दुर्घटना में आहत को शीघ्र ही अस्पताल पहुँचाना,
अपरिचितों की भी पुकार सुनकर त्वरित मदद कर जाना।
वृद्ध और दुखीजनों के अश्रु पोंछ, मुख पर एक मुस्कान लाना,
ऐसे कर्मों से जन्म–मरण से मुक्ति है, यह हमारी राष्ट्रभक्ति है।

बालश्रम और वृद्धाश्रम समाप्ति के लिए प्रयास करना,
भ्रष्टाचार मिटाने को न रिश्वत देना, न लेना, न लेने देना।
अपने अधिकारों के प्रति सजग, किन्तु दूसरों के हनन ना करते,
यह न केवल उक्ति है, वरन यह हमारी राष्ट्रभक्ति है।

स्वयं परिवार सीमित रखना औरों को प्रेरित करना,
स्वच्छता का पालन कर दूसरों को भी सिखलाना।
मत का सही प्रयोग हो, ऐसी सब में जागरूकता लाना,
यह न कोई अतिशयोक्ति है, यह हमारी राष्ट्रभक्ति है।

इस धरा की रक्षा करने, जल–तेल–वृक्ष का अपव्यय रोकना,
पर्यावरण संग अपनी सभ्यता और संस्कृति की रक्षा करना।
अँधेरे से भयभीत न होकर, दीप जलाकर रौशन करना,
यह आशा के संचार की अभिव्यक्ति है, यह हमारी राष्ट्रभक्ति है।

श्रद्धापूर्वक राष्ट्रीय पर्व मनाना, तिरंगे के आगे शीश झुकाना,
राष्ट्रगान के गुंजन को सुन, त्वरित वहीँ खड़े हो जाना।
राष्ट्र के प्रति प्रेम हृदय में, सब में यह संस्कार जगाना,
अमलयोग्य यह सूक्ति है, हाँ यह हमारी राष्ट्रभक्ति है।

आओ करें दृढ–प्रतिज्ञा, तव चरणों में शीश नवाएंगे।
प्राणों की आहुति देकर,माँ भारती को हर्षाएंगे।।

अनुराधा धनांक
उपमंडल अभियंता (राजभाषा)
बी.एस.एन.एल., दुर्ग

अगर वक़्त को रोका जा सकता

अगर वक़्त को रोका जा सकता,
तो शायद मैं कभी, कभी भी बड़ा न होता।
थाम लेता उस बचपन को वहीं,
जो माँ की लोरी सुने बिना न सोता।

पिताजी से 25 पैसे ले के,
खुद को धनवान समझने की खुशी,
कई–कई दिनों तक संजोता।
बाँध देता इस हमेशा भागने वाले वक़्त को,
अपनी माँ के उस आँचल से,
जो कभी तवे पे गरम रोटियाँ सेंकता,
तो कभी मेरे माथे का पसीना पोंछता होता।

वो पुराने मोज़ों की गेंद बना के
पत्थरों के ढेर को, ढेर करने का मज़ा,
वो कंचे जीतने की निश्छल हँसी
तो कभी लट्टू टूट जाने पर ज़ार–ज़ार रोता।
अगर वक़्त को रोका जा सकता
तो शायद मैं कभी, कभी भी बड़ा न होता।

संतोष मेहरचंदानी
कार्यालय सहायक

प्रगति पथ पर अग्रसर

प्रस्तावना –
हमारा देश भारत प्रगति के पथ पर सदैव अग्रसर होते हुए अपने द्वारा नए कीर्तिमान को स्थापित करने में संपूर्ण सफलता प्राप्त करता आ रहा है चाहे वह कृषि का क्षेत्र हो या इस्पात उत्पादन का।

''स्वच्छ भारत मिशन'' का आरंभ हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 02 अक्टूबर 2014 को प्रारंभ किया गया। महात्मा गांधी जी की 145वीं वर्षगांठ के अवसर पर इस स्वच्छ भारत मिशन का आरंभ किया गया। महात्मा गांधी जी सदैव स्वच्छता पर विशेष बल देते थे। महात्मा गांधी जी के आदर्शों को आगे बढ़ाने का माध्यम स्वच्छ भारत मिशन इनमें से एक संभव हुआ।

स्वच्छ भारत मिशन के आधार निम्नानुसार है –

1. स्कूल स्तर।
2. ग्रामीण स्तर।
3. नगरीय स्तर।
4. महानगरीय स्तर।

1. स्कूल स्तर – स्कूल हमारी भावी पीढ़ी का आधार स्तंभ है अतः वहाँ से स्वच्छता मिशन की शुरूआत हमारी भावी पीढ़ी को सुदृढ़ व सामर्थवान बनाने में नींव का पत्थर सिद्ध होती है।
   स्कूल के भवनों, लाइब्रेरी, खेल के मैदान, प्रांगण, प्रार्थना भवन, शिक्षकों के कमरे तथा स्कूल में लगी मूर्तियों की सफाई तथा आसपास के क्षेत्र की सफाई का ध्यान रखा गया। शौचालय का निर्माण करके उसकी सफाई का भी पूर्ण ध्यान रखा गया।

2. ग्रामीण स्तर – स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गाँव–गाँव में प्रत्येक घर में केंद्र सरकार ने शौचालय निर्माण करके महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने का उपयोगी कार्य किया। गाँव में कचरा एकत्र करके (कचरा एकत्र गाड़ी) गाँवों को साफ सुथरा बनाने में पूर्ण सहयोग दिया। वर्तमान में हमारे गाँव साफ सुथरे तथा सुंदर दिखाई देने लगे हैं।

3. शहरी स्तर पर – स्वच्छ भारत मिशन द्वारा शहरों में भी घर–घर कचरा बाल्टी प्रदान कर, गाड़ी द्वारा कचरा एकत्र किया जा रहा है। प्लास्टिक जिसे नष्ट नहीं किया जा सकता था जो पर्यावरण को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाता है उसे भी एकत्र किया जा रहा है तथा इसके प्रयोग पर प्रतिबंध लगाकर स्वच्छता की दिशा में प्रयास किया किया जा रहा है। वृक्षारोपण के द्वारा पर्यावरण संरक्षण का कार्य परिपूर्ण किया जा रहा है।

4. महानगरीय स्तर पर – महानगरों में सार्वजनिक शौचालय का बड़े स्तर पर निर्माण करके तथा निगम द्वारा सफाई कर कम शुल्क पर नागरिकों को सुविधा प्रदान की जा रही है। गली चौराहों पर कूड़ादान लगा कर कूड़ा एकत्र कर तथा कचरा गाड़ी द्वारा घर–घर से कचरा एकत्र कर स्वच्छता मिशन को पूर्ण करने का प्रयास किया जा रहा है।

''स्वच्छ भारत मिशन– प्रगति का मंत्र'' है, इससे निम्नलिखित क्षेत्र में निम्नानुसार प्रगति प्राप्त होती है –

1. स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मानसिकता – एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मानसिकता का निवास होता है जो स्वच्छ भारत मिशन द्वारा ही संभव हो पाया है स्वच्छतापूर्ण वातावरण के द्वारा ही स्वस्थ शरीर और लोगों की मानसिकता स्वस्थ हो पाई है।

2. खेलकूद में बेहतर प्रदर्शन – स्वस्थ शरीर वाला व्यक्ति ही खेलकूद क्रीड़ा क्षेत्र में अपना बेहतर प्रदर्शन कर सकता है अतः क्रीड़ा क्षेत्र में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बेहतर प्रदर्शन का आधार स्वच्छ भारत मिशन है।

3. सामाजिक सुदृढ़ता – स्वच्छ वातावरण और स्वस्थ जीवन शैली न केवल व्यक्ति को, अपितु पूर्ण समाज को सुदृढ़ बनाने में सफल हो सामाजिक चेतना व सुदृढ़ता का निर्माण करती है।

4. सौहार्दतापूर्ण वातावरण – आपसी भाईचारा व सहयोग की भावना व्यक्ति के साथ–साथ सामाजिक विकास को बढ़ावा देती है जो देश को प्रगति की ओर अग्रसर करती है।

5. तकनीकी विकास – स्वच्छ भारत मिशन ने न केवल स्वच्छता का वातावरण स्थापित किया है, अपितु साथ ही साथ तकनीकों के नवीनीकरण तथा नई तकनीकों को अपनाकर प्रगति की ओर (लौह पटरी निर्माण से लेकर चंद्रयान तथा आई.एन.एस. विक्रांत की प्लेटें) लगातार बढ़ रहा है।

6. औद्योगिक विकास – स्वच्छ भारत मिशन द्वारा नए–नए उद्योग का विकास संभव है।

7. पर्यावरण संरक्षण – स्वच्छ भारत मिशन अभियान के द्वारा किए गए कार्यों से पर्यावरण संरक्षण का महत्वपूर्ण कार्य हुआ जिससे हमारी जीवनदायिनी वायु (ऑक्सीजन) पर भी अच्छा असर हुआ व हमें स्वच्छ वातावरण पर्यावरण संरक्षण के साथ प्राप्त हुआ है।

8. विश्व बंधुत्व की भावना – स्वच्छता के लिए किए गए पारस्परिक आपसी सहयोग ने व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के साथ प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से बांधा है जिससे आपस में बंधुत्व की भावना आई।

9. शस्य श्यामला – स्वच्छता का वातावरण चारों ओर बनने से धरती में उपस्थित वनस्पति भी हरी–भरी सी हो गई और हमारी धरती, भारत देश शस्य श्यामला की धरती में बदल गई।

10. प्रगति का मार्ग प्रशस्त – स्वच्छ भारत मिशन के द्वारा हमारा देश सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक दृढ़ता को प्राप्त करते हुए चारों ओर, समग्र विकास करता हुआ निरंतर प्रगति प्राप्त करता हुआ विकास की दिशा में बढ़ रहा है।

उपसंहार – स्वच्छ भारत मिशन को पूरा करते हुए स्वच्छता के पाठ को पढ़ उसे आपने जीवन में आत्मसात कर न केवल स्वयं अपितु पूरे समाज तथा देश को प्रगति पथ पर अग्रसर करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है।

"स्वच्छ भारत मिशन को आधार बनाकर चलना है।
प्रगति पथ पर अग्रसर, हमको होते ही रहना है।"

सीमा शर्मा
मास्टर ऑपरेटर (एस.एम.एस.–3)
भिलाई इस्पात संयंत्र

हिंदी है भारत की भाषा

हिंदी है भारत की भाषा,
जन–जन के सपनों की आशा।
प्रगति के पथ की है परिभाषा
मन के दर्शन की अभिलाषा।।
हिंदी है भारत की भाषा

भावों की करती अभिव्यक्ति
राज कार्य की बढ़ती शक्ति।
जिसने हिंदी को अपनाया
राष्ट्रप्रेम का गौरव पाया।।

फहरा देंगे विश्व पटल पर
देश प्रेम की कीर्ति पताका।
जोड़ रही यह जन–गण–मन को
दिशा दे रही मन मंथन को।।

सदियों से अविरल हो बहती,
देवनागरी लिपि में रहती।
ज्ञान चक्षु खुलने का साधन
शब्दों से मन करती पावन।।

आज नहीं तो कल आओगे
राज कार्य में अपनाओगे।
मुक्त हृदय की यह प्रत्याशा
हिंदी है भारत की भाषा।।

राजेन्द्र कुमार गर्ग
सहायक महाप्रबंधक (माइनिंग)
राजहरा यंत्रीकृत खदान

"स्वच्छ भारत है एक बड़ा अभियान,
सब मिलके करे अपना योगदान"

हिमालय

समय तेजी से भाग रहा था। उससे भी तेज़ टैक्सी में बैठे राम का मन भाग रहा था। इसलिए कि, घर से निकलने में उसे देर हो चुकी थी और अब कहीं और थोड़ी देर होगी तो ट्रेन छूट जाना निश्चित था। राम अपने परिवार समेत गाँव जा रहा था। परिवार यानि पति–पत्नी और बाल–बच्चे। कभी राम परिवार का अर्थ पति–पत्नी और बाल–बच्चों सहित बुजुर्ग माँ–बाप होता था। अब इसमें से बुजुर्ग माँ–बाप निकल गए थे।

राम समय रहते ट्रेन में बैठ चुका था, जैसे ही उसने अपने सामान व्यवस्थित किए वैसे ही ट्रेन प्लेटफार्म से सरकने लगी। वह आराम से सेकंड एसी के निचले बर्थ पर बैठकर सुकून की साँस लेने लगा। बच्चे जिसमें एक पांच साल का था और दूसरा आठ माह का था। दोनों अपने में मस्त थे। एक ऊपरी बर्थ पर खेलने में जुटा था तो दूसरा माँ की गोद में।

राम ने देखा सामने के बर्थ पर दो बुजुर्ग बैठे थे। जो राम की तरफ और कभी उसके बच्चों की तरफ देख मुस्कुरा रहे थे। राम को अपने माता–पिता की याद आ गई। राम को हमेशा इस बात की कमी खलती थी, कि उसके माता–पिता उसके साथ नहीं रहते थे। उसके माता–पिता उसके दोनों बड़े भाइयों के साथ जो अभी तक संयुक्त थे, रहते थे। वहाँ गाँव में उसके भाइयों के बाल–बच्चे उनके लालन–पालन में बड़े हुए, लेकिन राम के बच्चे इस प्रेम से दुलार से वंचित रह गए। फिर भी वह जितने दिनों के लिए गाँव जाता, उसके बच्चों को वही लाड़–प्यार मिलता, जितना उसके बड़े भाइयों के बच्चों को मिलता था।

राम शहर में एकल परिवार था। एकल परिवार का दर्द संयुक्त परिवार से निकला व्यक्ति बहुत अच्छे से समझ सकता है। यह कमी राम को हमेशा सालती रहती कि, वह अपने भाइयों के साथ और अपने माता–पिता के साथ अपनी जवानी नहीं गुजार सका और न ही उसने अपने माता–पिता के लिए वह सब किया, जिसकी चाहत एक माँ–बाप अपने बच्चों से रखते हैं। हालाँकि वह अहसानमंद था अपने भाइयों का, वे दोनों थे जिन्होंने उसके हिस्से के कर्तव्य को संभाल रखा था। वह हर माह कुछ पैसे भेज देता और वे दोनों उनकी सेवा–सुश्रूषा कर देते थे। फिर भी शहर की सुविधाओं से वे दोनों बुजुर्ग वंचित ही थे, जिसका लाभ राम और उसका परिवार ले रहा था, और इस असमर्थता का दुःख उसे हरपल सालता रहता था।

आज सामने अपने माता–पिता जैसे दो बुजुर्गों को देखकर उसके सारे भाव मन में उभर आए। उसका मन कचोटने लगा। इस पीड़ा से निकलने के लिए उसने दोनों बुजुर्गों से बात करना शुरू कर दिया।

"कहाँ जा रहे हैं चाचा जी?"

'गाँव!' उन दोनों ने एक साथ कहा।

"लग रहा है, आप भी अपने घर जा रहे हैं?" बुजुर्ग चाचा जी ने कहा।

"जी हाँ! सही कहा आपने। भतीजे का विवाह होने जा रहा है। इसलिए जाना पड़ रहा है, वर्ना बच्चे के स्कूल वाले ऐसे कहाँ छुट्टी देते हैं, गाँव घर जाने के लिए। बड़े विचित्र फँसे हैं हम लोग!" राम ने अपने दर्द का मुँह खोलते हुए कहा।

"जी! यह समस्या तो है, बाहर रहने वालों के साथ! हमने भी जीवन निकाल दिया इन सब चक्करों में!" चाचाजी ने एक सर्द साँस छोड़ते हुए कहा।

"आप दोनों अकेले निकल पड़े गाँव के लिए? आप लोगों के साथ कोई नहीं आया?" राम ने सवाल किया।

"हाँ! अब हम दोनों अकेले हैं, दोनों बच्चे एब्रॉड में सैटल्ड हैं! कुछ ज्यादा ही पढ़ा लिखा दिया हम दोनों ने उनको!" बुजुर्ग चाचाजी ने चाचीजी की तरफ देखा और मुस्कुराते हुए व्यंग्य किया। चाचीजी उस व्यंग्य का आशय समझ गईं और उनका मन इस बात से थोड़ा कड़वा भी हो गया। राम उनकी पीड़ा को महसूस कर गए और उनका मुँह उतर गया। कुछ–कुछ हालत उनकी भी उन्हीं बच्चों जैसी थी, जो अपने माता–पिता की ज़िम्मेदारी उठाने में असफल थे। हालाँकि राम एब्रॉड में नहीं था और न ही उनके माता–पिता अकेले थे। फिर भी उनके जो अपने कर्तव्य थे उसमें वे भी अपने–आप को पिछड़े हुए मानते थे। उन्होंने एक बार अपने दोनों बच्चों की तरफ देखा। उसका इस समय अपने दोनों बच्चों की तरफ देखना चाचाजी को समझा गया कि, राम की चिंता क्या है! उसके मन में उन दोनों बच्चों को लेकर चाचाजी और चाचीजी वाली मनोदशा की व्याकुलता बढ़ने लगी। तभी चाचा जी बोले –"नहीं! अभी उनमें टाइम हैं, आप अपने आपको हमारी तरह न देखिए। सबके बच्चे एब्रॉड थोड़े ही सेटल होते हैं! फिर भी आपकी तरह हमने भी अपने बच्चों की परवरिश की और आपकी तरह हमें भी अपने बच्चों से आशा थी कि, बड़े होकर वे हमारी देखभाल और सेवा करेंगे! लेकिन ऐसा न हो सका! जैसे हम अपने माता–पिता को छोड़कर शहर आ गए थे, जैसे आप आ गए हैं। वैसे वे भी चले गए हैं, लेकिन आप में अभी संभावना बनी हुई है कि, आपके बच्चे यहीं भारत में आपके साथ रह सकें। लेकिन इसके लिए यह आवश्यक है कि, आप अपने माता–पिता से जुड़े रहें। सदैव के लिए नहीं, लेकिन ज्यादातर समय तक उनके साथ रहें, अपने बच्चों को लेकर शायद हम यही न कर पाए और आज यहाँ इस स्थिति में हैं!"

राम का मन उनकी व्यथा सुनकर भर आया। वे अपने पत्नी बच्चों के सामने चाचाजी के दुःख पर और वैसा ही दर्द अपने माँ–पिता के प्रति, सोचकर द्रवित हो उठे! भरे मन की करुणा बाहर निकले इससे बचने के लिए राम कंपार्टमेंट से बाहर निकल आए। गेट पर खड़े होकर भागती हुई पटरियों, आस पास के जंगल–जमीन को देखने लगे और सोचने

लगे कि, हम क्या ढूँढने शहर जाते हैं! क्या बनने शहर जाते हैं और क्या बनकर रह जाते हैं। उन्हें यह प्रतीत होने लगा कि गाँव से हम शहर धन कमाने और बहुत कुछ हासिल करने के लिए आते हैं, शायद हिमालय बनने के लिए। लेकिन हिमालय बनने के लिए क्या आवश्यक है यह भूल जाते हैं।

हिमालय बनने के लिए हमें हिमालय जैसी प्रवृति लानी पड़ती है। जैसे कि, हिमालय ने अपनी जगह नहीं छोड़ी, विरासत नहीं छोड़ी, स्थान नहीं बदला और ऊँचा बनता गया, सुंदर बनता गया, और अंततः उदाहरण बन गया सारी दुनियाँ के लिए। लोग कहते हैं परिवर्तन होना चाहिए, यही संसार का नियम है, कहीं न कहीं इसमें सच्चाई थोड़ी कम प्रतीत होती है कभी–कभी। और तब तो और, जब हवा बहने लगती है, बारिश होने लगती है, पृथ्वी घूर्णन करने लगती है, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारे, जीव की उत्पत्ति, कहाँ कुछ परिवर्तित हुआ? शायद अनंत काल से, कुछ भी तो नहीं बदला।

यहीं हमसे चूक होती है। हम निकलते हैं बहुत कुछ परिवर्तित करने, लेकिन बदल जाते हैं स्वयं। शायद यह ऐसा ही है कि, हम हिमालय नहीं बन पाते। हिमालय बनने के लिए हमें स्थाई होना पड़ता है। तपस्या का ताप सहना पड़ता है। लेकिन हम निकल पड़ते है और बन जाते हैं जमीन से थोड़े उभरे हुए पहाड़। इस पहाड़ का अस्तित्व क्या है? बस ये हुआ कि, गर्त से निकलकर थोड़े से बड़े बन गए। लेकिन यही इस तरह हुआ कि, गर्त पहाड़ नहीं बन सका। शायद गर्त, गर्त ही रहता तो वहाँ संचित होता, कचरा, कबाड़, कूड़े और बहुत कुछ लुढ़कते हुए उसी में। और फिर किसी तीव्र आंच में जलता हुआ सब पिघलकर जम जाता पहाड़ों जैसा। फिर इस पहाड़ पर आकर चिपकते धूल, मिट्टी और गर्द। पहाड़ और विकसित होता। फिर आती धरती के गर्भ से कोई लहर और वह पहाड़ उछलकर गौरवपूर्ण ऊँचाई हासिल कर लेता और बन जाता हिमालय।

लेकिन, हमने परिवर्तन करना चाहा और भागते–भागते स्वयं से टूटते चले गए। आधे–आधे जो जमे थे सालों में, वह केवल बच्चों के प्रति जिम्मेदारियों का संचय था। जो एक दिन अचानक ही बड़ा हिस्सा लिए टूट जाता है, अलग हो जाता है, और कम कर जाता है अपनी ही ऊँचाई फिर से। हिसाब लगाने के बाद बचा क्या? बहुत कम। जिसका हिसाब इस तरह हुआ कि, सारी उम्र कहीं खर्च करके हम कुछ न बन सके। जबकि वे जो स्थाई रह गए अपने गर्त में, उभरकर इस टूटे हुए छोटे से पहाड़ से अधिक ऊँचे हो गए।

राजू कुमार शाह
टेक्नीशियन (इंस्ट्रूमेंटेशन)
भिलाई इस्पात संयंत्र

सुरक्षा - अपनी ज़िम्मेदारी

सुरक्षा–अपनी ज़िम्मेदारी
सुरक्षा अपनाने में ही समझदारी है,
क्योंकि आप पर पूरे परिवार की ज़िम्मेदारी है।

सुरक्षा, जीवन जीने का ढंग है,
ये जीवन का अनिवार्य अंग है।
अपनी सुरक्षा, परिवार की सुरक्षा,
समाज की सुरक्षा, राष्ट्र की सुरक्षा।
इसके बाद ही दुनियादारी है,
सुरक्षा अपनाने में ही समझदारी है।

अपने कार्यक्षेत्र में सुरक्षित रहना,
अपने साथी को भी सुरक्षित रखना।
अन्यथा समझ लीजिए कि,
किसी दुर्घटना की तैयारी है।
हम सबकी अनिवार्य जिम्मेदारी है।
सुरक्षा अपनाने में ही समझदारी है।

"रोको – टोको" मंत्र अपनाना है।
आज 5–एस का जमाना है।
सबको जागरुक बनाना है।
सुरक्षा के साथ अपनी यारी है।
सुरक्षा अपनाने में ही समझदारी है।

नीलकंठ साहू
मास्टर आपरेटर
(कोक ओवन एवं सीसीडी)
भिलाई इस्पात संयंत्र

स्वच्छता अभियान : पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम और संरक्षण

आधुनिक विज्ञान ने पर्यावरण को ही उत्पत्ति का स्त्रोत माना है। इसके बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती हैं, क्योंकि पर्यावरण ही पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व का एकमात्र आधार है। पर्यावरण, हमारी दैनिक जीवन में भरण पोषण की सारी आवश्यकताएँ जैसे जल, वायु और भोजन उपलब्ध कराता है। पर्यावरण पर समूची धरा का जीवन पूर्ण रूपेण निर्भर है, क्योंकि एक स्वच्छ वातावरण से ही स्वस्थ विचार, जीवन, समाज और देशकाल का निर्धारण होता है। वहीं पर्यावरण न सिर्फ जीवन को विकसित और पोषित करने में मदद करता है, बल्कि इसे प्राकृतिक रूप से नष्ट करने में भी हमारी सहायता करता है। इस प्रकार से पर्यावरण, विश्व के जलवायु को संतुलित करता है। मानव और पर्यावरण एक दूसरे के पूरक हैं और दोनों एक–दूसरे पर पूरी तरह से निर्भर हैं।

आदिमानव युग से निकल कर धीरे–धीरे विकास के पथ पर चलकर मानव ने पर्यावरण के सानिध्य में आधुनिकता को हासिल किया। प्राचीन युग में प्रकृति की शक्तियों की पूजा – उपासना प्रारंभ हुई, जो कि, हमारी संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा बन गया है। आधुनिकता और औद्योगीकरण की अंधाधुंध दौड़ में मानव ने ही पर्यावरण को नुकसान पहुँचाना आरंभ कर दिया। विकास की इस आंधी में मनुष्य के द्वारा पेड़–पौधे की कटाई और प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध उपभोग किया जा रहा है। प्रकृति से खिलवाड़ का बुरा असर हमारे पर्यावरण पर पड़ रहा है। आधुनिक कारखानों की चिमनियों व वाहनों से निकलने वाला जहरीला धुआँ न सिर्फ पर्यावरण को दूषित कर रहा है, बल्कि मानव जीवन के लिए भी खतरा उत्पन्न कर रहा है। इसके अलावा उद्योगों, कारखानों से निकलने वाले रासायनिक पदार्थ और दूषित तरल द्रव्यों के कारण वायु, जल और भूमि प्रदूषित हो रहे हैं। पर्यावरण प्रदूषण की वजह से जलवायु और मौसम चक्र में परिवर्तन, मानव तथा जीव–जंतु जीवन को कई रुपों में प्रभावित कर रहा है, और तो और यह परिवर्तन मानव जीवन के अस्तित्व पर भी प्रश्नचिह्न पैदा करता है। प्राणियों का जीवन अनेक बीमारियों से ग्रसित हो रहा है, इस तरह आज पर्यावरण प्रदूषण एक बड़ी समस्या बन चुका है।

पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार

मुख्य रूप से पर्यावरण प्रदूषण तीन प्रकार का ही होता है :–

(1) **जल प्रदूषण प्राकृतिक** :– जल में किसी तरह के जैविक, रासायनिक या गंदगी कारक पदार्थ के मिलने से यदि इसके रंग और गुण में परिवर्तन आ जाए तो जल प्रदूषण कहा जाता है। जिससे जल की गुणवता में कमी आ जाती है। आज जल प्रदूषण की बड़ी वजह आधुनिक औद्योगिकीकरण और शहरीकरण है। उद्योगों से विसर्जित रसायन युक्त पदार्थ और दूषित तरल गंदे द्रव्यों, शहरों से विसर्जित मानव मल या गंदगी का जल स्त्रोतों जैसे नदियों, जलाशयों में या नहरों में मिला देना जैसे मुख्य कारण है।

(2) **वायु प्रदूषण** :– प्रकृति ने सभी जीव जंतुओं और मानव जीवन को सुचारु रूप से चलने के लिए वायुमंडल बनाया है। इस वायु मंडल में जीने के लिए ऑक्सीजन विद्यमान है। तेजी से औद्योगिक विकास जैसे कारणों से हमारा वायुमंडल दूषित हो रहा है।.भौतिक सुखों के उपभोग में आने वाले उपकरणों, वाहनों तथा कारखानों की चिमनियों से उत्सर्जित ज़हरीली गैसें जैसे कार्बन डाई ऑक्साइड, नाइट्रोजन और हाइड्रोजन पर्यावरण में असंतुलन पैदा कर प्राणवायु ऑक्सीजन में कमी ला रही है। वनों की कटाई, सड़क–पुल व गृह निर्माण भी वायु प्रदूषण का प्रमुख कारण है। वाहनों व कारखानों से निकली तेज आवाज एवं ध्वनि भी प्रदूषण फैला रही है।

(3) **भूमि प्रदूषण** :–तीव्र गति से पाँव पसारते शहरीकरण, बड़े उद्योगों की स्थापना, जमीन से अत्यधिक मात्रा में खनिज पदार्थो का अत्यधिक दोहन, सड़को एवं बड़े बाँधो का निर्माण रासायनिक खादों और उर्वरको के अधिक मात्रा में खेतों में उपयोग से कृषि भूमि के मूल तत्वों में कमी होना, वनों की कटाई ही भूमि प्रदूषण है ।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या और समाधान

पर्यावरण प्रदूषण से आज मानव और जीव जंतुओं का जीवन चक्र काफी प्रभावित हो रहा है। धरा से जीव जंतुओं की कई प्रजातियाँ विलुप्त हो गईं तथा कई विलुप्त होने की कगार पर हैं। प्रदूषण से मानव को कई असाध्य रोग होने लगे हैं। प्रदूषण आज मानव और अन्य जीवों के रोग प्रतिरोधक क्षमता को प्रभावित कर रही है । आधुनिकता और भौतिक संसाधनों की उपयोगिता ने मानव जीवन और पर्यावरण संतुलन को खतरे में डाल दिया है। प्रदूषण आज पूरे विश्व के लिए एक विकराल चुनौती बन गया है।

पर्यावरण प्रदूषण रोकने के उपाय :–हमारे देश में भी इस दिशा में कई महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं।

(1) **पौध रोपण** :– तेज़ गति से बढ़ती जनसंख्या, औद्योगिकीकरण और शहरीकरण से वनक्षेत्र घटते जा रहे हैं। वनों की कटाई ने वन्य जीव और पर्यावरण के संरक्षित क्षेत्रों को काफी हद तक नुकसान पहुचाया है। पेड़–पौधे मिट्टी के कटाव को रोकते हैं, साथ में भूजल स्तर को भी संरक्षित करते है। वनों से ही शुद्ध हवा प्राप्त होती है। वन ही सदियों से मानव एवं जीव जन्तुओं को भोजन – पानी तथा छाया देते आ रहे हैं। सभी का जीवन चक्र वनों पर आश्रित रहा है और आगे भी रहेगा। आज जो पहाड़ी क्षेत्रों में आए दिन बरसात से भूस्खलन और जगह–जगह बाढ़ की घटनाएँ हो रही हैं, वह वनों की कटाई की वजह से है। पेड़ों की जड़ें मिट्टी के कटाव को रोकती है। आज स्वच्छ हवा और पानी के लिए वन रोपण एक व्यक्तिगत जिम्मेदारी होना चाहिए।

(2) **प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित दोहन** :– अच्छे जीवन, भौतिक साधनों और व्यापारिक प्रतिस्पर्धा व रोजगार मूलक तत्वों ने ही औद्योगिक क्रांति को जन्म दिया। औद्योगिकीकरण ने उत्पाद बनाने के लिए खनिज पदार्थों के उत्खनन के लिए वनों और पहाड़ों को नष्ट कर दिया और साथ में धूल–कचरों से पाटकर पर्यावरण को काफी नुकसान पहुँचाया। खनिज पदार्थों के उत्खनन से वहाँ की आबादी को दूसरी जगह स्थानांतरित किया गया, साथ ही साथ वन्य जीवों' को भी वह जगह छोड़ना पड़ा। वनों की क्षेत्रों में कमी से अल्प वर्षा, भू जल का स्तर गिरना, सूखे से कृषि कार्यों में अल्प पैदावार तथा पीने के पानी समस्या आदि से जूझना पड़ रहा है। बड़ी नदियों में बड़े–बड़े बाँधों के निर्माण से पर्याप्त पीने की पानी में कमी, जल जीवों की घटती संख्या और भूकंप से जनधन की हानि होना मुख्य कारण है। उद्योगों एवं वाहनों से निकले धुएँ ने कार्बन उत्सर्जन को बढ़ा दिया है, जिसकी वजह से सूर्य की अल्ट्रा वॉयलेट किरणों ने ओजोन परत को छेद कर धरती में गर्मी को बढ़ा दिया है। लोगों में त्वचा कैंसर और कई गंभीर बीमारियाँ पैदा हो रही है। हिम ग्लेशियर पिघल रहे है जिससे समुद्र के तटीय शहर ख़त्म हो जाएंगे।

(3) **अत्याधुनिक तकनीकी** :– इसमें कोई संदेह नहीं है कि आधुनिक तकनीकी ने मानव जीवन को अत्यंत सुखद और सरल बनाकर विश्व को एक छोटा परिवार कर दिया है। आधुनिक तकनीकी ने औद्योगिकीकरण और शहरीकरण को बढ़ावा दिया है, जिसके चलते जल, वायु और भूमि प्रदूषण बढ़ा। शहरीकरण की वजह से बढ़ती जनसंख्या को निवास के लिए जगह, पीने को पानी मुहैय्या कराना, आवागमन के लिए सड़कें बनाना, बिजली के लिए नए बिजली घरों का निर्माण, धुआँ देने वाले वाहनों का प्रचालन, वनों की कटाई, गंदे पानी की निकासी प्राकृतिक जल स्त्रोतों में करना ही सभी प्रकार के प्रदूषण को बढ़ाया है। तकनीकी शोधों से पता चला है कि, मोबाइल टावरों से निकली तरंगें भी आबादी के लिए हानिकारक है । कुल मिलकर यह देखा जा रहा है कि मानव द्वारा जनित तकनीकी ही मानव समाज के लिए भस्मासुर बन रहा है। आज प्लास्टिक दुनिया के चराचर के लिए एक बड़ी समस्या बन गयी है,जो विघटित होने में कई हजारों वर्ष लगा देते है । प्लास्टिक पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुँचा दिया है। मोबाइल टावरों से निकली विशेष प्रतिध्वनियाँ नभचर के लिए प्राण घातक सिध्द हो रहें हैं । पर यह बात भी नहीं है कि, अत्याधुनिक तकनीकी से पर्यावरण को संरक्षित नहीं किया जा सकता है, आज अत्याधुनिक तकनीकी से कारखानों से निकले प्रदूषित जल को साफ कर पीने लायक या नदियों में बहाने लायक बनाया जा रहा है। प्रदूषित वायु से कार्बन को शोषित कर शुध्द करने की तकनीकी का विकास हो गया है। हम रोजमर्रा की ज़िन्दगी में साइकिल के उपयोग को बढ़ावा दे। कृषि कार्य में जैविक खाद का प्रयोग करें और वनों को संरक्षित कर नए वन लगाएँ।

(4) **स्वच्छता योजना** :– अपने जीवन को स्वच्छ और स्वस्थ बनाने हेतु अपने आस पास के पर्यावरण को स्वच्छ और संतुलित रखें ।यह हम सभी की नैतिकता के आधार पर व्यक्तिगत और सामाजिक जिम्मेदारी है । पेट्रोल/डीजल/ए.सी. चालित वाहनों का प्रयोग कम करें। बिजली और पानी की किफ़ायत करें। दैनिक निस्तार हेतु पक्के टॉयलेट बनाये, रेन वाटर हार्वेस्टिंग घरों में लगाएँ, सौर उर्जा का समुचित दोहन करें, नए पौधों का रोपण करें, गंदे नालों तथा जल मल की सफाई के सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट लगाना, नदियों व जलाशयों को स्वच्छ रखना, हरित क्षेत्र में विकास करना, दूषित गैसों व रेडियोधर्मिता पर नियन्त्रण, वनों की कटाई को रोकना, खनिज पदार्थो के अत्यधिक दोहन पर रोक लगाना आदि कार्य है। स्वच्छता अभियान का पालन ही पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम और संरक्षण एक बड़ा मानव हथियार है।

पुरेन्द्र कुमार ठाकुर
महाप्रबंधक
आर.डी.सी.आई.एस.
भिलाई

संधारणीय या टिकाऊ विकास

ऐसा विकास है जो मानव जाति की अनन्त काल की आवश्यकता को पूरा करे और वातावरण को भी सुरक्षित रखने में सहायक हो।

क्यों ज़रूरी है?

क्योंकि हमारे जीवन की गुणवत्ता समय के साथ घट रही है। हम अंदर से कमजोर होते जा रहे हैं। आज हम विकास में तो काफी आगे बढ़ गए हैं, लेकिन पर्यावरण संरक्षण में मात खा रहे हैं। हवा, पानी और भोजन प्रदूषित होने लगे हैं। यहाँ तक कि, शहरों में तो साँस लेना भी मुश्किल होता जा रहा है। ऐसी आशंका व्यक्त की जा रही है कि, यदि प्रभावी कदम न उठाए गए तो आने वाले वर्षों में मनुष्य के लिए ज़िंदा रहना भी मुश्किल हो जाएगा। हमने जीवन के आधारभूत ढाँचे को ही कमजोर कर दिया है। इस स्थिति में हम मानव सभ्यता को आगे ले जाने की जगह उसे धीरे–धीरे नष्ट कर रहे हैं, कुछ जानबूझकर, कुछ अंजाने में।

कैसे हुआ यह?

असल में तो यह हमारी सोच का ही परिणाम है। अंधाधुंध विकास में हमने पर्यावरण की अनदेखी की, फ़ॉसिल फ़्यूल का बहुत ज्यादा इस्तेमाल किया, खेतों में रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशक दवाओं का प्रयोग किया। बेहिसाब बड़े–बड़े शहर बन गए। हम क्षणिक भौतिक सुखों के गुलाम बन गए हैं। हमनें अक्षय ऊर्जा की ओर ध्यान नहीं दिया, नदियों को स्वच्छ नहीं रखा, भौतिक विकास में ही लगे रहे।।

कैसे टिकाऊ विकास हो सकता है:

यह काम अचानक संभव नहीं है, लेकिन सरकार और हम सभी मिलकर इस को अंजाम दे सकते हैं, जैसे –

1. देश में अधिकांश बिजली (लगभग 52 प्रतिशत) का उत्पादन कोयले से होता है और जिसके चलते यह भविष्यवाणी की गई है कि, वर्ष 2040–50 के बाद देश में कोयले के भंडार समाप्त हो जाएंगे।
2. अभी सबसे पहले हमें तकनीकी विकास का ही सहारा लेना होगा। अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में सौर ऊर्जा और पनबिजली को बढ़ावा देना होगा। ईश्वर की दया से आज सोलर एनर्जी किफ़ायती बन गई है और आने वाले समय में यह और भी सस्ती दर पर उपलब्ध हो जाएगी। जैसे–जैसे हम सौर ऊर्जा को बढ़ावा देंगे न सिर्फ अवशेष ईंधन पर निर्भरता कम हो जाएगी बल्कि आज जो कोयला कोरबा या झरिया से रेल द्वारा रोज़ भिलाई पहुँच रहा है, उसकी आवश्यकता ही नहीं रहेगी। यानि कि, सौर ऊर्जा कई स्तरों पर काम करेगी। कम औद्योगिक उत्पादन से काम हो जायेगा। धरती का दोहन कम हो जाएगा। यह बहुत बड़े परिवर्तन की शुरूआत होगी। टेबल 1.1 में तुलनात्मक अध्ययन दिखाया है। टेबल1.1 के अनुसार आज सौर ऊर्जा 6% है जिसे हमे 66% तक ले जाना है। टेबल 1.1 से यह भी स्पष्ट है कि, 50% तक वितरण हानि से 2.5 रुपए वाली बिजली की कीमत 5 रुपए हो जाती है। सौर ऊर्जा मे यह क्षति कम से कम है, क्योंकि उत्पादन व वितरण लगभग बराबर हैं।
3. सरकार का नदियों को जोड़ने का काम भी टिकाऊ विकास में सहायक होगा। इसमें बाँध बनने से पनबिजली पैदा होगी और सिंचाई की सुविधाएँ उपलब्ध हो जाएंगी। इसके लिए हमारी सरकार पर्यावरण संतुलन के सूत्रों को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है, प्रत्येक क्षेत्र में पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए भावी कदम उठा रही है और पर्यावरण संतुलन के लिए प्रयासरत है तथा विभिन्न योजनाएँ लाई जा रही हैं।
4. खेती करने वालों की संख्या में बढ़ोतरी होनी चाहिए। दरअसल लोग खेती का काम छोड़कर अन्य किसी भी प्रकार के काम करने में इच्छुक हो जाते हैं।
5. सरकार को उद्योग जगत को भी खेती में लाने की पॉलिसी बनानी चाहिए।

मैंने अपने स्तर पर टिकाऊ ऊर्जा को लेकर कुछ काम किए हैं जो इस प्रकार हैं : वाटर हार्वेस्टिंग, आर्गेनिक खेती, योग, आयुर्वेद,

आवश्यकता आविष्कार की जननी है। आधुनिक सभ्यता 200–300 वर्ष ही पुरानी है और इस दौरान प्राकृतिक संसाधनों का इतना दोहन हुआ है कि, अब उन्हें सुरक्षित रखने का समय आ गया है।

हमने देख लिया कि, उपभोक्तावाद के चक्कर में पड़ने से किसी का भला नहीं हो रहा है। उल्टा लोगों की आदतें ख़राब हो जाती है और कुछ समय बाद वे तनाव के शिकार हो जाते हैं। बीपी, शुगर की बीमारी, जो पहले उच्च वर्ग के लोगों तक सीमित थी, अब आम जनता भी इनकी शिकार होती जा रही है। बल्कि अब किशोरावस्था में भी इन बीमारियों से लोग परेशान हो रहे हैं और फिर जीवन की गुणवत्ता ही बदल जाती है।

टेबल 1.1

क्र.	विवरण / मानक	कोयला बिजली	सौर ऊर्जा	टिप्पणी
1	कुल क्षमता 2022 तक (गीगावाट में)	400	56.6	चीन के मुक़ाबले चौथाई है
2	%	52	14	
3	लागत खर्चा प्रति मेगावाट रुपया करोड़ो में	3–7	6.5–8	पिछले 15 साल मे लागत खर्चा चौथाई हो गया है।
4	संयंत्र की अवधि वर्ष में	20–25	25	
5	संयंत्र चलाने का खर्च रुपया / यूनिट में	3.05	1	
6	सुरक्षा	बॉयलर रूट में बहुत सारे मामले हैं	सुरक्षित	
7	कार्य शैली	जटिल	सरल	
8	पर्यावरण पर प्रभाव	दूषित करती है	कुछ नहीं	
9	रोज़गार	ज्यादा कर्मचारी कर्मचारी	कम	खेती व स्वच्छ भारत के लिए लोग उपलब्ध रहेंगे।
10	वितरण नुकसान	50% तक	5% से कम	उत्पादन सब जगह है
11	संयंत्र का वातावरण	वायु, ध्वनि प्रदूषण	शांति से बिजली	शांतिपूर्ण वातावरण से कार्मिकों में उत्साह बढ़ेगा।

निष्कर्ष : –

ऊपर दिए विवरण से स्पष्ट है कि, आज अक्षय ऊर्जा किफ़ायती बन चुकी है। हमें हर हाल में इसे आगे बढ़ाने के लिए पहल करनी चाहिए। पर्यावरण संरक्षण व टिकाऊ विकास के लिए तो इसकी पहले से ही आवश्यकता थी, अब मानवता को बचाने के लिए यह अपरिहार्य हो गया है।

पी.आर. बेरा
वरिष्ठ महाप्रबंधक
मेकॉन

“ स्वच्छता की शुरुआत मन, विचार और हृदय की पवित्रता के साथ होती है। ”

तुझे जीतना हर रण होगा

अमूल्य हमारा यह जीवन है, ऊर्जा से ओत प्रोत मन है,
हर हिंदुस्तानी का ये प्रण होगा, भारत तुझे जीतना हर रण होगा।
हर साँस में जुनून है, ज़िन्दगी को जीने में ही सुकून है,
यही विचार प्रतिक्षण होगा, भारत तुझे जीतना हर रण होगा।
पूरी हर फरमाइश होगी, दाँव पर हर गुज़ारिश होगी,
जीवन का समरांगण होगा, भारत तुझे जीतना हर रण होगा।
खिलखिलाता हर मकान होगा, कारखाना, दुकान, मकान होगा,
उज्ज्वल हर घर–आँगन होगा, भारत तुझे जीतना हर रण होगा।
बल को द्विगुणित करना है, पग पीछे ना धरना है,
यही संकल्प इस क्षण होगा, भारत तुझे जीतना यह रण होगा।
हर दिल की एक पुकार हो, मन में न भेद विकार हो,
बस जीत ही एक धन होगा, भारत तुझे जीतना हर रण होगा।
आओ कर लें हर मुश्किल हल, कठिनाई के बाद देश का,
उजियारा हर प्रांगण होगा, भारत तुझे जीतना हर रण होगा।
चलना जीने का नाम है, रुकते केवल मुर्दे तमाम हैं,
बढ़ता आगे हर कदम होगा, भारत तुझे जीतना हर रण होगा।
जिसकी हृदय में आस नहीं, सुनना उसकी बकवास नहीं,
साहस देता कण–कण होगा, भारत तुझे जीतना हर रण होगा।
डरने की कोई वजह नहीं, हार की कोई जगह नहीं,
'पुष्पेय' शौर्य का बंधन होगा, भारत तुझे जीतना हर रण होगा।

जाग जवान

जाग जवान, अभी समर शेष है,
राष्ट्रभक्ति का एक और पहर शेष है।
सोच की तलवार बना, और साहस की ढाल बना,
त्याग दे सुमन शैया, उठ कुछ शूल शेष हैं।
भगत की सोच जगा और आज़ाद का हौसला,
कर प्रहार, भर हुंकार, जब तक शीश शेष है
डरना नहीं, रुकना नहीं, झुकना नहीं, बढ़े कदम और उठे हाथ
अब भी एक वीरगाथा का सृजन शेष है।
उठो जवान अभी समर शेष है
राष्ट्रभक्ति का एक और पहर शेष है।

ओ. पी. गोंदुले
वरिष्ठ प्रबंधक
एन.एस.पी.सी.एल., भिलाई

जागरूकता की मशाल

महात्मा गांधी जी ने कहा था – ''स्वच्छता ही सेवा है'' हमारे देश के लिए, हमारे जीवन में स्वच्छता की बहुत जरूरत है। गंदगी हमारे आसपास के वातावरण और जीवन को प्रभावित करती है। हमें व्यक्तिगत व आसपास भी सफाई अवश्य रखनी चाहिए और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए।

हमारे प्राचीन शास्त्रों और धर्म ग्रन्थों में भी स्वच्छता के महत्व के बारे में विस्तार वर्णन किया गया है। अगर आपने अपनी सामाजिक विज्ञान की किताब में ध्यान दिया होगा, तो आपने हड़प्पा सभ्यता के बारे में तो जरूर पढ़ा होगा। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की नगर योजना को ऐसा बनाया गया था, कि घरों से निकले दूषित और गंदे पानी की निकासी के लिए ढँकी हुई और भूमिगत नालियों का आविष्कार किया गया था।

सड़कों के किनारे कूड़ेदान लगाए गए थे और सड़कों के चारों तरफ पेड़ पौधे लगाने के प्रमाण पाए गए हैं, इससे यह तो स्पष्ट हो गया है कि 5000 साल पहले के लोग स्वच्छता के लिए कितने अधिक जागरूक थे, जिनकी तुलना आज के लोगों से बिलकुल नहीं की जा सकती।

मनुष्य जीवन में स्वच्छता एक आवश्यक गुण है। स्वच्छता को साधारण भाषा में समझें तो मनुष्य का तन, मन और अपने आसपास की सभी चीजों को स्वच्छ रखना यानि हर इंसान को अपने आस–पास स्वच्छता रखनी ही चाहिए, क्योंकि स्वच्छता मनुष्य को बीमारियों से दूर रखती है, तो उसका शारीरिक और मानसिक विकास बहुत अच्छा होता है। स्वच्छ वातावरण में रहने वाले लोगों का मन शांत होता है, ऐसे लोग समाज और देश को एक बेहतर सोच प्रदान करते हैं। इसलिए हमेशा अपने आस–पास स्वच्छता रखने की पूरी कोशिक करनी चाहिए।

अभी कोरोना काल में रोगियों की बढ़ती जनसंख्या एवं अस्पतालों में साफ–सफाई को ध्यान देने की आवश्यकता से यह बात और भी स्पष्ट हो गई है कि जीवन में स्वच्छता की कितनी ज़रूरत है। आपने देखा होगा कि, हमारे देश का कोई भी राज्य हो या शहर हो, या फिर गाँव हो, या फिर गली या मोहल्ला हर जगह आपको कूड़ा करकट मिलेगा।

हमारे देश के विकास में बाधा पहुँचाने वाली समस्याओं में एक मुख्य कारण गंदगी हैं, क्योंकि इसके कारण भारत को काफी नुकसान झेलना पड़ता है। हमारे देश को पूर्णतया स्वच्छ बनाने के लिए कई महापुरुषों ने सपने देखे थे और उन्हें साकार करने की भी कोशिश की थी, लेकिन वह किसी न किसी कारणों से सफल न हो सके।

स्वच्छता की राह को पूर्णता का आधार मिला – जब हमारे देश को स्वच्छ बनाने के लिए भारत सरकार ने एक नई योजना निकाली, जिसका नाम ''स्वच्छ भारत अभियान'' रखा गया। इस अभियान के तहत सभी देश– वासियों को इसमें शामिल होने के लिए प्रेरित किया गया। यह अभियान आधिकारिक से रूप सन् 1999 से चला आ रहा है, पहले इसका नाम ग्रामीण स्वच्छता अभियान था, लेकिन 1 अप्रैल 2012 को प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने इस योजना में बदलाव करते हुए इसका नाम निर्मल भारत अभियान रख दिया और बाद में सरकार ने इसका पुनर्गठन करते हुए इसका नाम पूर्ण स्वच्छता अभियान कर दिया गया था। स्वच्छ भारत अभियान के रूप मे 24 सितंबर 2014 को केंद्रीय मंत्रिमंडल से इस को मंजूरी मिल गई।

स्वच्छ भारत अभियान का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने महात्मा गाँधी जी की 145वीं जयंती के अवसर पर 2 अक्टूबर 2014 को किया था। उन्होंने राजपथ पर जन समूहों को संबोधित करते हुए राष्ट्रवादियों से स्वच्छ भारत अभियान में भाग लेकर, इस को सफल बनाने को कहा।

स्वच्छता के संदर्भ में यह सबसे बड़ा अभियान है, क्योंकि गाँधी जी का सपना था कि, हमारा देश भी विदेशों की तरह पूर्ण स्वच्छ और निर्मल दिखाई दे। इस बात को मद्देनज़र रखते हुए प्रधानमंत्री जी ने उन्हीं के जन्मदिवस पर इस अभियान की शुरुआत दिल्ली के राजघाट से की थी।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने स्वच्छ अभियान के मुख्य उद्देश्य एवं लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए 5 साल की योजना बनाई है, जिसके अंतर्गत हमारे पूरे देश को स्वच्छ करने का लक्ष्य लिया गया है। इस अभियान का प्रथम उद्देश्य है कि देश का हर कोना – हर भाग साफ सुथरा हो। लोगों को बाहर खुले में शौच करने से रोका जाए, जिसके तहत हर साल हजारों बच्चों की मौत हो जाती है, भारत के हर शहर और ग्रामीण इलाकों के घरों में शौचालय का निर्माण – करवाया जाए। शहर और गाँव के प्रत्येक सड़क, गली और मोहल्ले साफ–सुथरे हो, हर एक गली में कम से कम एक कचरा पात्र आवश्यक रूप से लगाया जाए। लगभग 11 करोड़ 11 लाख व्यक्तिगत एवं सामूहिक शौचालयों का निर्माण सरकार ने करवाया।

इस अभियान में दो उप–अभियान :–

(1) स्वच्छ भारत अभियान (ग्रामीण) तथा

(2) स्वच्छ भारत अभियान (शहरी) सम्मिलित है। इसमें ग्रामीण इलाकों के लिए पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय व ग्रामीण विकास मंत्रालय जुड़े हुए हैं। वहीं शहरों के लिए शहरी विकास मंत्रालय ज़िम्मेदार है। इस मिशन की कार्यशैली के अंतर्गत कुछ कदम उठाए गए जिसमें ठोस एवं तरल अपशिष्टों के बेहतर प्रबंधन में तेजी लाने के लिए प्रतिबद्धता की गई, शौचालयों के निर्माण के साथ–साथ उनके उपयोग पर विशेष बल दिया गया। इसका नेतृत्व व निरीक्षण स्वयं प्रधानमंत्री कर रहें है, अतः यह मिशन राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में शुमार है। अंशदान एवं CSR निधियों की प्राप्ति को सुविधाजनक बनाने के लिए प्रधानमंत्री जी ने स्वच्छ भारत कोष की शुरुआत की। स्वच्छ भारत मिशन में हर व्यक्ति व संस्था की भागीदारी जन–आंदोलन का रूप ले रही है। किसी भी देश के विकास के लिए, उस देश के लोगों का विकास बहुत आवश्यक है और यह तभी संभव है जब उस देश के लोग स्वस्थ एवं तंदुरुस्त रहे। आज स्वच्छता अभियान को सात साल हो रहे हैं, इस अभियान को और गति देने के लिए सरकार ने हर वर्ष 15 सितंबर से 2 अक्टूबर के बीच स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा दिवस शुरू किया है। इस पखवाड़े के दौरान समाज के सभी वर्ग, मंत्रीगण, सांसद, केंद्र और राज्य सरकार के अधिकारी, मशहूर हस्तियाँ, संगठन, कॉरपोरेट, स्थानीय नेता और नागरिक श्रमदान करके स्वयं को स्वच्छता के लिए समर्पित करते हैं, ताकि हमारा भारत स्वच्छ और सुंदर बने और यह स्वच्छ भारत मिशन की सकारात्मक ऊर्जा को जन–जन तक पहुँचाया जाए।

महात्मा गांधी द्वारा कहे गए यह कथन जो कि, स्वच्छता पर ही आधारित है जो परिवर्तन आप दुनिया में देखना चाहते हैं, वह सबसे पहले अपने आप में लागू करें।, उनके अनुसार स्वच्छता की जागरूकता की मशाल सभी में पैदा होनी चाहिये। इसके तहत स्कूलों में भी स्वच्छ भारत अभियान के जैसे कार्य सिखलाए और पढाए जाने चाहिए ।

हमारे भारत में जहाँ स्वच्छता होती है, वहाँ पर ईश्वर निवास करते हैं, इस प्रथा को माना जाता है, इसलिए हमें भी स्वच्छता को अपनाना चाहिए। इसकी शुरूआत हमें, आपको और पूरे भारत को एक जुटता से करनी चाहिए।

स्वच्छ भारत अभियान से हमारा आने वाला कल बहुत ही सुंदर एवं अकल्पनीय होगा, इसलिए आज की आवश्यकता अनुसार देश का हर नागरिक इस जन भागेदारी अभियान में अपना योगदान दें।

इस अभियान ने भारत के विकास और प्रगति की राह में अनेक कार्य किए, वे निम्नलिखित हैं : शौचालयों की उपलब्धता के कारण ''स्वच्छ भारत अभियान'' देश में बालिका शिक्षा के स्तर को बढ़ाने में मददगार साबित हो रहा है।

स्वच्छता के 'राज्य विषय' होने के बावजूद, केंद्र सरकार द्वारा तैयार व संचालित इस कार्यक्रम से संघीय केंद्र ढाँचा सशक्त हो रहा है।

इस अभियान से सिर पर ''मैला ढोने'' की प्रथा के उन्मूलन का वृहद् प्रयास मील का पत्थर साबित हो रहा है।

यह अभियान हजारों सालों से चली आ रही खुले में शौच की आदत में परिवर्तन व स्वच्छता को जीवनशैली, का अंग बना रहा है। 12 करोड़ शौचालयों के निर्माण का लक्ष्य, विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार का बड़ा अवसर साबित हो रहा हैं। इस योजना को मनरेगा से जोड़कर, मनरेगा कार्यक्रम की जीर्ण–शीर्ण दशा को भी सुधारा गया है।

ग्रामीण सेनिटरी मार्ट का क्षेत्र व्यापक हुआ है। सुलभ शौचालयों में अभी 50,000 से अधिक लोग कार्यरत है, यह एक बड़ा रोज़गार बन सकता है। सैनिटरी पैड (महिलाओं, बच्चों से संबंधित) का बाज़ार भी व्यापक हो सकता है।

स्वच्छ भारत मिशन तेजी से एक जन आंदोलन बन रहा है, या प्रधानमंत्री मोदीजी के शब्दों में कहा जाए तो अपनी उपलब्धियों के साथ यह आंदोलन भारत की विकास के पथ पर ले तो आया है, लेकिन अभी भी हमें बहुत लंबा रास्ता तय करना है, और इस नेक कार्य को पूरा करने के लिए हम सब को मिल कर आगे आना होगा और साथ–साथ काम कर के इस मिशन को पूरा करना होगा।

अंकित खोब्रागड़े
क्लर्क (एस.डब्ल्यूओ–बी)
बैंक ऑफ इंडिया, दुर्ग

"साफ हो सुंदर हो
ऐसा मेरा भारत देश हो"

लोगो डिज़ाइन स्पर्धा में द्वितीय पुरस्कार

धनंजय कुमार मेश्राम

सेल–भिलाई इस्पात संयंत्र, राजभाषा विभाग के श्री धनंजय कुमार मेश्राम को अखिल भारतीय लोगो डिज़ाइन स्पर्धा में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा 14 सितंबर 2022 को सूरत, गुजरात में हिंदी दिवस एवं द्वितीय अखिल भारतीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने की।

इस अवसर पर केंद्र सरकार के अनेक प्रतिनिधियों सहित देशभर के नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के अध्यक्ष, सचिव एवं अन्य संस्थानों के संस्थान प्रमुखगण, हिंदी प्रेमी, विचारक एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

उक्त आयोजन के लिए अखिल भारतीय स्तर पर लोगो डिज़ाइन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था तथा राष्ट्रीय स्तर पर प्रविष्टियाँ आमंत्रित की गई थीं। भिलाई इस्पात संयंत्र, राजभाषा विभाग में कार्यरत वरिष्ठ स्टाफ सहायक श्री धनंजय कुमार मेश्राम की प्रविष्टि को उक्त स्पर्धा में द्वितीय स्थान के लिए चयनित किया गया।

लोगो डिज़ाइन स्पर्धा के समस्त विजेतागण को पुरस्कार ग्रहण करने पण्डित दीनदयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम सूरत, गुजरात में आयोजित हिंदी दिवस एवं द्वितीय अखिल भारतीय हिंदी सम्मेलन में आमंत्रित किया गया था।

इस विशिष्ट उपलब्धि के लिए भिलाई इस्पात संयंत्र, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 29 सितंबर 2022 को आयोजित राजभाषा पखवाड़ा समापन एवं वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान माननीय मुख्य अतिथि, निदेशक प्रभारी, सेल–भिलाई इस्पात संयंत्र, श्री अनिर्बान दासगुप्ता के करकमलों द्वारा शाल व श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया।

धनंजय कुमार मेश्राम
वरिष्ठ स्टाफ सहायक
राजभाषा विभाग
भिलाई इस्पात संयंत्र

राजभाषा विभाग

आज़ादी का अमृत महोत्सव

An ISO 9001-2015 COMPANY

मिनी रत्न | सीपीएसई

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

हिंदुस्तान स्टीलवर्क्स कंस्ट्रक्शन लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम) एन.बी.सी.सी.(इंडिया) लिमिटेड की एक सहायक कम्पनी

निर्माण भवन, भिलाई, (छ.ग.) 490001

हमारी विशेषज्ञता- इस्पात संयंत्रों का निर्माण एवं रखरखाव, औद्योगिक संयंत्रों, भव्य इमारतों, अस्पतालों एवं विश्वविद्यालयों का निर्माण, पूर्वोत्तर इलाको का निर्माण, राजमार्गो एवं पुलों का निर्माण, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजनांतर्गत सड़कों का निर्माण, देश की हर तरह की अधोसंरचना का निर्माण, इत्यादी |

मशीन द्वारा लेडल की सफाई, भिलाई इस्पात संयंत्र एस.एम.एस.-III के रखरखाव का एक दृश्य

वेब साईट : **www.hsclindia.in**, ई-मेल : **hsclbhilai.sectt@gmail.com,**

निगमित कार्याल- तीसरी मंजिल, एनबीसीसी स्क्वायर, प्लाट नं. 111 एफ/2, एक्शन एरिया-|||, न्यू टाउन,राजारहाट,कोलकाता 700 135

पंजीकृत कार्यालय-पी-34/ए, गरियाहाट रोड(दक्षिण) कोलकाता (प.बंगाल) 700 031

स्वच्छ भारत मिशन

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सेल रिफ्रैक्ट्री यूनिट, भिलाई

सेल SAIL

हमारे उत्पाद

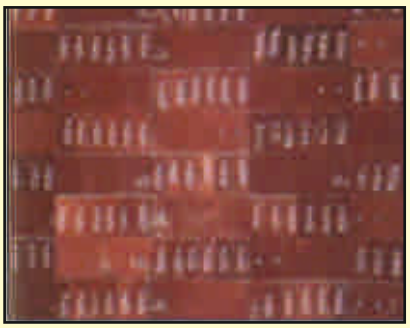

Magnesite Bricks

Mag - Chrome Bricks

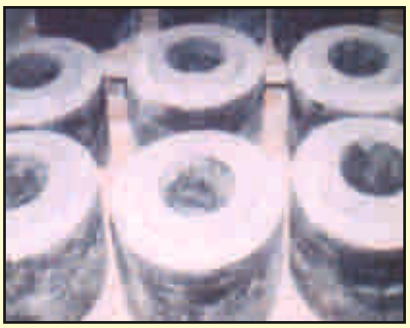

Magnesia Carbon Tape Hole Sleeve

DRY Ramming Mass

Silica Bricks

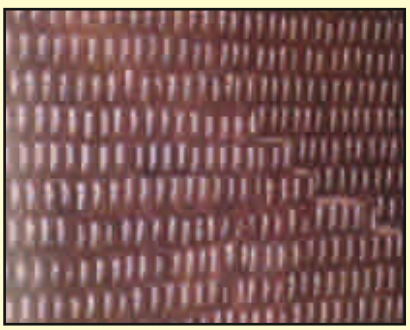

Magnesia Carbon Bricks

L.D. Gunning Mass

स्वच्छ भारत मिशन

आज़ादी का अमृत महोत्सव

bob World | बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अब और अधिक ब्याज कमाएं

बड़ौदा तिरंगा प्लस जमा योजना

7.80%* प्रति वर्ष

399 दिनों के लिए

*अन्य नियम एवं शर्तें लागू

टोल फ्री नंबर पर कॉल करें (24x7): 1800 258 44 55 | 1800 102 44 55

www.bankofbaroda.in | हमें फॉलो करें

स्वच्छ भारत मिशन

NSPCL

भिलाई

एन.टी.पी.सी. - सेल पावर कंपनी लिमिटेड

एन.टी.पी.सी. एवं सेल का संयुक्त उद्यम

हिंदी अपनी आन है, भारत माँ की शान । इसके ही सम्मान से, बढ़े हमारा मान ।।

*जीवन की सर्वोत्तम पूँजी है **स्वास्थ्य***

*खेलें और **स्वास्थ्य** सँवारें*

*स्वस्थ, समृद्ध, सशक्त और **स्वच्छ भारत** का निर्माण करें।*

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

भिलाई-दुर्ग (छ.ग.)